SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ छियालीसवां अंक (अक्तूबर–दिसम्बर, 2023)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124

STREN HENI G AU REPORTING
NO B 023
Dedicated to Truth in Public Interest
PARVEEN MEHTA
GIRISH CHANDRA MURMU
K S SUBRAMANIAN

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ छियालीसवाँ अंक

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

(अक्टूबर–दिसम्बर, 2023)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
"लेखापरीक्षा प्रकाश"
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ छियालीसवाँ अंक
(अक्टूबर–दिसम्बर, 2023)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक
श्री प्रमोद कुमार
अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक
श्री अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

सहायक संपादक
श्री किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी

रचना चयन समिति
श्री अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
श्री किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
ए–102, वज़ीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली
मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

विधा	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ
	सम्पादकीय		3
	पाठकों के नाम संदेश		4
	आपके पत्र		5
लेख	राजकोट क्यों है 'रंगीला राजकोट'	सुश्री सुनीता	8
लेख	विकास की दौड़ में मानव निर्मित आपदाओं का बढ़ता खतरा	श्री गोपेश कुमार	10
लेख	"शिक्षा और संस्कार" वर्तमान के बदले हुए परिवेश में	करण सेवदा	13
लेख	आत्मनिर्भर भारत	श्री आनंद नाग	15
लेख	विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग	श्री अतुल कुमार	19
लेख	समाज के कालसापेक्ष दंश	बिजेंदर बेरवाल	23
लेख	मॉर्निंग वॉक	श्री पीयूष कुमार	28
लेख	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस : महिलाओं के संघर्ष और सशक्तिकरण का स्मरण	डॉ. लाखा राम	31
लेख	शिक्षक दिवस	श्रीमती समन्ना	38
लेख	कहीं देर न हो जाए	अंकित कुमार ठाकुर	41
लेख	शिमला : एक यादगार सफ़र	अनुराग प्रभाकर	43
कहानी	जीवन रेल	बिभाष रंजन मंडल	54
कहानी	ख़्वाहिश	श्री लोकेश चंद्र लाल	58
कहानी	दीपावली का बोनस	जे.जे. श्रीवास्तव	61
कहानी	तीमारदार	आशीष	65
कविता	अंजान शहर	सुश्री रिचा कुमारी	69
कविता	डॉ. भीमराव अंबेडकर	सैयद इक्बाल अली	70
कविता	मुसाफिर	राकेश गोदरा	71
कविता	राजभाषा - हिन्दी	मोहन प्रकाश	71
कविता	बूढ़ा बरगद	अनुराग श्रीवास्तव	72
कविता	प्रतीक्षा	श्री एम. कोदंडराम	73
कविता	अँधियारों में दीप जलाएँ हम	बाल विहारी प्रजापति	74
कविता	एक लड़की	सुश्री मैशर जहां	75
कविता	तुम	श्री विशाल साव	75
कविता	बदला मानव	आशीष कुमार मीना	76
कविता	जिम्मेदारी	राजू वर्मा	76
कविता	जंगल के दो समानांतर दृश्य	प्रमोद कौरव	77
कविता	नारी	पंकज अरोरा	78
कविता	मेरी माँ सबसे प्यारी	विक्रम सिंह	79
	मुख्यालय गतिविधियाँ	अनुराग प्रभाकर	80

अस्वीकरण - पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादकीय

"लेखापरीक्षा प्रकाश" के पाठकों को 146 वां अंक सौंपते हुए हमें बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारे कार्यालय का सदैव यही प्रयास रहा है कि शासकीय कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो सके। वैसे तो मूल रूप में हिन्दी में कार्य करने में ही संविधान की भावना निहित है परंतु उस लक्ष्य की प्राप्ति में हमें अभी बहुत लंबा रास्ता तय करना है।

सबसे पहले तो अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी में काम करने को लेकर एक बड़ा भ्रम यह है कि क्या हमारी भाषा हमारे कार्य जो कुछ तकनीकी प्रवृत्ति का है , में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों के अर्थों को व्यक्त कर सकती है ? हमें यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आज हमारे पास, दैनिक जीवन के हर तकनीकी क्षेत्र में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों के अर्थ बताने वाले शब्दकोश उपलब्ध हैं। इन शब्दकोशों का निर्माण संभव नहीं होता यदि हमारी भाषा मे तकनीकी क्षेत्र के शब्दों का अभाव होता।

फिर आज का युग भी परिवर्तन और विकास का युग है। तकनीकी परिवर्तन एवं विकास के साथ कदम से कदम मिलाते हुए हमारा कार्यालय अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ राजभाषा के संवैधानिक लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। हमें इस कार्य में सफलता भी मिल रही है। राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यशालाओं एवं बैठकों में प्रतिभागियों की बढ़ती संख्या इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि हमें हमारे प्रयासों में सफलता मिल रही है।

हम अपने कार्यालय में अनुवाद पर विदेशी प्रयुक्तियों एवं उपकरणों (टूल्स) जैसे गूगल ट्रांस्लेट आदि पर निर्भरता भी समाप्त कर रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राजभाषा विभाग द्वारा विकसित की गई प्रयुक्ति 'कंठस्थ 2.0' का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया है। इसमें संदेह नहीं कि राजभाषा में कार्य करने की दिशा में उठाए जा रहे ऐसे छोटे छोटे कदम आगे चल कर एक बड़े लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक बनेंगे।

अंत में इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाले लेखों के रचनाकारों को उनकी रचना के प्रकाशित होने की बहुत बधाइयाँ। पाठकों के पत्र इस बात का द्योतक हैं कि पत्रिका की रचनाओं को बहुत पसंद किया जा रहा है।

आपका शुभाकांक्षी
अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

पाठकों के नाम संदेश

सम्मानित पाठकों को उनकी बहु प्रतीक्षित पत्रिका सौंपने में हमें एक आत्मिक संतुष्टि का अनुभव हो रहा है। आपकी प्रतिक्रियाएँ इस बात का प्रतीक हैं कि पत्रिका के माध्यम से हमारा आपसे जुड़ाव बहुत गहरा होता जा रहा है। पत्रिका में दिनों दिन नए लेखक भी जुडते जा रहे हैं। इनमे से कई लेखक ऐसे हैं जो पत्रिका से लंबे समय तक एक पाठक के रूप में जुड़े थे। एक पाठक का लेखक के रूप में परिवर्तन इस बात का परिचायक है कि पत्रिका अपने उद्देश्य को धीरे धीरे प्राप्त कर रही है।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि भविष्य में पत्रिका परिवार में अनेकानेक लेखकों का नाम जुड़ेगा और हमारी पत्रिका का परिवार वृद्धि को प्राप्त होगा, संभवतः कई नए पाठक भी जुड़ेंगे जो राजभाषा की प्रगति के एक अच्छा संकेत है।

आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कामना के साथ

आपका ही,
अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)

पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने हेतु लेखकों के लिए अनुदेश

1. रचना वर्ड सॉफ्ट कॉपी में ही भेजी जाए। यदि भौतिक प्रति भेजी जा रही है तो मंगल फॉन्ट में फॉन्ट साइज़ 12 रखते हुए पृष्ठ के एक ओर टंकित करके निम्न पते पर भेजें।
   संपादक 'लेखापरीक्षा प्रकाश', 10, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002
2. कृपया लेख के साथ मौलिकता प्रमाणपत्र, कार्यालय व अनुभाग का नाम तथा अपना फोटो भी संलग्न करें।
3. ईमेल से भेजते समय अपना नाम, पदनाम एवं विस्तार/मोबाइल संख्या का भी उल्लेख अवश्य करें।
4. यदि पत्रिका के वर्तमान अंक के लिए पर्याप्त रचनाओं की संख्या प्राप्त हो चुकी हो तो उसी रचना को अगले अंक के लिए आरक्षित कर लिया जाता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचना के प्रकाशन के संबंध में अनावश्यक पूछताछ न करें।
5. संभव हो तो संबंधित पत्र व्यवहार भी राजभाषा में करने का प्रयास करें।
6. सॉफ्ट कॉपी में रचना भेजने का पता :– **ईमेल: anuragp.cag@cag.gov.in; Whatsapp : 9402275468**

आशा है आप अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।

आपके पत्र

गागर में सागर

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी त्रैमासिक पत्रिका “लेखापरीक्षा प्रकाश” के 145 अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है विशेष रूप से पत्रिका का आवरण पृष्ठ, और संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और ज्ञानप्रद है। नीतीश कुमार द्वारा रचित लेख ‘स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका’, सुश्री ज्योति यादव द्वारा रचित कविता ‘भाई और बहन का रिश्ता’ उल्लेखनीय हैं एवं उसकी भावनाओं का सहज रूप अत्यंत प्रशंसनीय है। श्री सतनाम सिंह द्वारा रचित ‘नारी शक्ति’ विशेष रूप से पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं।

एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है जो सराहनीय हैं। निश्चय ही पत्रिका का प्रत्येक अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अति उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सहस्त्र शुभकामनाएं।

भवदीया,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)
का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम-695001

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के बढ़ते कदम

मुख्यालय से प्रकाशित होने वाली कार्यालयीन त्रैमासिक हिंदी पत्रिका **‘लेखापरीक्षा प्रकाश’** का **145वां** अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की प्रति प्रेषित करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। नये रंग-रूप में पत्रिका अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक लग रही है साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा भी उच्च स्तरीय है। प्रस्तुत अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं सूचनापरक, प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से वरिष्ठ लेखाधिकारी **श्री अनुराग प्रभाकर** का विश्लेषणात्मक लेख ***‘चुनावी सफरनामा’*** स्वतंत्र भारत में संपन्न लोक सभा के अब तक के सभी आम चुनावों का एक अनुपम चित्र प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही यह लेखक के द्वारा चुनावों के संबंध में किए गए विधिवत विस्तृत अध्यन को भी इंगित करता है। वरिष्ठ लेखाधिकारी **श्री विनोद कुमार शर्मा** का लेख ***‘शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता’*** एक सामयिक लेख है जो शिक्षा के माध्यम के महत्त्व को रेखांकित करता है। कनिष्ठ अनुवादक **श्री संजय कुमार सिंह** की कहानी, ***‘चरित्रहीन’*** वर्तमान प्रेम कहानियों की त्रासदी को दर्शाता हैं अन्य रचनाएं भी प्रेरणादायक हैं।

पत्रिका का ई-संस्करण निसंदेह विभाग के ज्यादा से ज्यादा पदाधिकारियों को राजभाषा हिंदी से जोड़ने के प्रयास को सफल बनाने में एक अहम भूमिका निभा रहा है। पत्रिका को विविध आधुनिक डिजिटल माध्यमों पर

सुगमतापूर्वक पढ़ने के लिए लिंक का उपलब्ध कराया जाना भी निश्चित रूप से एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संपादन के लिए पत्रिका परिवार एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के रचनाकारों को बधाई। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

उदय प्रताप सिंह

हिंदी अधिकारी

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय,

कर्नाटक, बेंगलूरु-560001

टेलीफोन नं. 080-22640262

मो. नं. 8277090764

ईमेल- udayprataps.kar.ae@cag.gov.in

पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ

महोदय/महोदया,

मुख्यालय से प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा-प्रकाश" के 145वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री नीतीश कुमार, आं.प्र.प्र. की रचना "स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका", श्री इम्तियाज अहमद, कनिष्ठ अनुवादक की रचना "भूस्खलन : एक प्राकृतिक आपदा", श्री प्रवीण कुमार सहगल, की रचना "मदर्स डे" तथा श्री आकाश त्रिवेदी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की कविता "संजीवनी" उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

प्रियंका गोस्वामी

हिंदी अधिकारी

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,

महाराष्ट्र, नागपुर- 440001

संपादक मण्डल को बधाई

महोदय,

पत्र संख्या 414/55-रा.भा.अ./2018-1 दिनांक 11.07.2024 के द्वारा आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश'के 145वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका', 'शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता', 'सकारात्मक सोच का मानव जीवन पर प्रभाव', 'मदर्स डे', 'भाई और बहन का रिश्ता', 'संजीवनी'एवं 'दुनिया की सच्चाई'आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। उत्तम संयोजन एवं कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी (हिंदी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा), हरियाणा

प्लॉट नं. 05, सैक्टर 33-बी दक्षिण मार्ग,

चण्डीगढ़-106 020

लेख

राजकोट क्यों हैं 'रंगीला राजकोट'

• सुश्री सुनीता
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक (राजभाषा), मुख्यालय नई दिल्ली

अक्तूबर, 2020 में मेरी सरकारी कार्मिक के तौर पर कार्य करने की शुरुआत हुई। अनेक केंद्रीय सरकारी कार्मिकों की भांति मुझे भी अपने गृहनगर से अपने कार्यालय जाने के लिए एक लंबी यात्रा करनी थी। चूंकि रेल से यात्रा लगभग 22 से 24 घंटों में पूर्ण होनी थी इसीलिए दिल्ली से गुजरात तक रेल द्वारा यात्रा करना कठिन भी प्रतीत हो रहा था। उन दिनों कोविड के कारण यात्रा करना और भी परेशानी भरा था। ऐसे मे यह निश्चय किया गया कि यह यात्रा हवाई मार्ग से पूर्ण की जाए।

मेरे साथ मेरा एक वर्षीय पुत्र और मेरे पतिदेव, तीनों यात्रा हेतु निकल पड़े। प्रथमतया, हवाई यात्रा के विषय में कुछ भी ज्ञान न होने के कारण हम बहुत उत्सुक भी थे और साथ ही छोटे बच्चे के साथ यात्रा करने के कारण थोड़ी परेशानी भी झेल रहें थे। हर प्रक्रिया से अंजान हम एक के बाद एक चरण पार कर अंततः हवाई जहाज में थे। खिड़की के पास की एक सीट हमारी थी जिस पर हम बारी-बारी से बैठ कर बाहर का दृश्य देख रहे थे।

केवल दो घंटे में ही हम राजकोट हवाई अड्डे पर पहुँच गए। सामान प्राप्त होने पर पहला निर्णय यह लिया गया कि जब तक रहने के लिए सरकारी क्वार्टर या अन्य स्थान नहीं मिलता किसी नजदीकी होटल में रुका जाए एवं दिन में कार्यालय में जॉइनिंग संबंधी कार्य पूर्ण करके शाम को देर तक फ्लैट या घर ढूंढा जाए। कार्यालय के क्वार्टर कार्यालय से एक घंटे की दूरी पर होने के कारण कार्यालय के पास का ही कोई फ्लैट देखना ही उचित लगा। राजकोट में सभी सुख-सुविधाएं केवल 10-15 मिनट की दूरी पर मिल गई, चाहे रेलवे स्टेशन हो या एयरपोर्ट। हालांकि अब एयरपोर्ट को राजकोट से 30 कि.मी. की दूरी पर नया बनाया गया है।

नई जगह के नए नियम, नई दिनचर्या, नई भाषा, नए तौर-तरीके और इन सब में परिवार और नौकरी के बीच तालमेल बैठाती मैं। विवाह उपरांत यही पहला अवसर था कि मैं कार्य के लिए छोटे बच्चे को छोड़ कर बाहर जा रही थी। कहीं मन में यह भी रहता था कि जॉइनिंग थोडी और देर से आती तो कुछ समय और मिल जाता, बेटा कम से कम दो वर्ष का हो जाता। लेकिन मन में यह भी सुकून था कि कोविड की वजह से 9-10 माह की पहले ही देरी हो चुकी थी जो समय माँ और बच्चे, दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है।

राजकोट जिसे 'रंगीला राजकोट' भी कहा जाता है, वास्तव में सभी उत्सवों के रंग-बिरंगे रूपों और धूमधाम से मनाए जाने के लिए प्रसिद्ध है। आप शायद पंचांग देख त्योहार याद रखें लेकिन राजकोट में रहते हुए हर पर्व की आने से पूर्व ही शानदार तैयारियां देख कर स्वतः स्मरण हो आता था कि कौन सा त्योहार नजदीक हैं। इसके अतिरिक्त

राजकोट के लोगों की दिनचर्या में सबसे अच्छी बात यह लगी कि यहाँ नाइट-लाइफ का प्रचलन होने के कारण दोपहर बाद 1 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक लगभग सभी दुकानें या निजी काम करने के स्थान बंद हो जाते थे। इस समय आराम किया जाता था। राजकोट को मिनी मुंबई भी कहते हैं। यहाँ नाइट-लाइफ का प्रचलन इसीलिए भी अधिक है क्योंकि दिन में अत्यधिक गर्मी हो जाती थी एवं शाम ढलते ही सुहानी हवाओं से मौसम खुशनुमा हो जाता था। राजकोट निकटतम समुद्र तट से लगभग 200 कि.मी. दूर है। इसीलिए यहाँ अधिक दिन सर्दी का मौसम नहीं रहता और ठंड केवल एक स्वेटर तक की होती है।

राजकोट में प्रद्युमन जूलॉजिकल पार्क हैं जो हमे एक दिन में घूमने के लिए सबसे बेहतरीन जगह लगी। लगभग 55 हेक्टेयर से अधिक में फैले इस पार्क में पिंजरों की जगह प्राकृतिक वातावरण में सभी जीव-जंतुओं को रखने का प्रयास सराहनीय हैं। शेर और मगर जैसी ख़तरनाक प्रजातियों को बिना किसी तरह से परेशान किए जितना पास से यहाँ हमने देखा, वह अनुभव अविस्मरणीय रहा। मछलियों के लिए अलग, सर्प प्रजातियों के लिए अलग एवं पक्षियों के लिए अलग से स्थान बने हुए थे, जहां अधिक से अधिक प्रजातियों को उनकी सुविधानुसार रखा गया था। इस प्रकार के आधुनिक पार्क को देखना बहुत अच्छा अनुभव रहा।

इसके अतिरिक्त स्वामीनारायण मंदिर भी कुछ ही किमी की दूरी पर था। और भी सप्ताहांत पर देखे जाने वाले अनेक छोटे-छोटे स्थान जैसे- वाटसन संग्रहालय, जुबिली गार्डन, काबा गांधी नो डेलो, वह घर जहाँ गांधी जी ने अपना बचपन बिताया था, आदि थे। राजकोट में आपको बासुंदी का स्वाद जरूर चखना चाहिए। यह यहाँ की सबसे प्रसिद्ध मिठाइयों में से एक है। राजकोट का सोनी बाज़ार गुजरात में स्थित सोने का सबसे बड़ा बाज़ार है। इसके अतिरिक्त किसी भी स्थान के खान-पान का स्वाद उसी स्थान पर जैसा मिलता है, वैसा कहीं और मिल पाना लगभग असंभव होता है। आप कहीं कुछ वर्ष रह आए और वहाँ के कुछ व्यंजन बनाना सीखें तो वहाँ से आने के बाद उन व्यंजनों के स्वाद के साथ साथ उन लोगों की भी यादें ताज़ा हो जाती हैं जिनसें आपने उनको बनाना सीखा था। इसी तरह राजकोट में समय कैसे पंख लगा के उड़ता चला गया, पता ही नहीं लगा। मेरी अवधि पूर्ण होने पर जैसे ही स्थानांतरण के लिए आदेश आया तो कुछ हर्ष और कुछ उदासी के मिश्रित भावों के साथ मैं नए कार्यालय के सहकर्मियों और अपने मित्रों को सुनाने के लिए अनेक खट्टी-मीठी यादों सहित राजकोट से विदा ले आई।

"विकास की दौड़ में मानव निर्मित आपदाओं का बढ़ता खतरा"

श्री गोपेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(लेखा परीक्षा – द्वितीय)
केरल, तिरुवनंतपुरम

सदियों से मानव प्रकृति को अपने अधीन करने में लगा रहा है। उसने प्रकृति के संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया और अपनी सुख - सुविधाओं के लिए इसे निरंतर क्षति पहुँचाई। अज्ञानता, लालच और असीमित विकास की चाहत ने उसे ऐसे बीज बोने पर विवश कर दिया है जो आज विशालकाय वृक्ष बनकर मानवता के लिए एक भयावह संकट बन गया है।

इसमें कोई शक नहीं कि हमारी आधुनिक दुनिया में तेजी से हो रहे विकास और प्रगति ने मानवता को नई ऊँचाइयों पर पहुंचाया है। लेकिन इस विकास के पीछे छिपी कड़वी सच्चाई यह है कि हमारी कुछ गतिविधियाँ आपदाओं का कारण बन रही हैं। ये आपदाएँ, जिन्हें हम मानव निर्मित आपदाएँ कहते हैं, न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी गंभीर संकट पैदा कर सकती हैं।

मानव निर्मित आपदाएँ प्राकृतिक आपदाओं से भिन्न होती हैं। ये मानवीय क्रियाकलापों के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणामस्वरूप होती हैं। ये आपदाएँ अचानक आ सकती हैं या समय के साथ धीरे-धीरे विकसित हो सकती हैं। इनका असर स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक हो सकता है, जिससे जीवन, संपत्ति, पर्यावरण और समाज पर गंभीर और व्यापक प्रभाव पड़ता है। मानव निर्मित आपदाएँ कई रूपों में हो सकती हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **औद्योगिक दुर्घटनाएँ:** रासायनिक, परमाणु, या अन्य औद्योगिक दुर्घटनाएँ जो बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचा सकती हैं।
- **परिवहन दुर्घटनाएँ:** रेल, सड़क, या हवाई दुर्घटनाएँ जो जनहानि और संपत्ति के नुकसान का कारण बनती हैं।
- **आतंकवाद:** आतंकी हमले जो भौतिक क्षति, आर्थिक नुकसान और सामाजिक अस्थिरता पैदा करते हैं।
- **युद्ध:** सशस्त्र संघर्ष जो बड़े पैमाने पर विनाश, मौत और विस्थापन का कारण बनता है।
- **जैविक हथियार:** जैविक एजेंटों का उपयोग करके जानबूझकर फैलाया गया रोग जो महामारी का रूप ले सकता है।
- **साइबर हमले:** कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क पर

हमले जो महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को बाधित कर सकते हैं और आर्थिक नुकसान पहुंचा सकते हैं।

मानव निर्मित आपदाएँ जिनके पीछे मानव की गतिविधियाँ और निर्णय शामिल होते हैं, कई बार लापरवाही, अनजाने में की गई गलतियों या जानबूझकर की गई विनाशकारी गतिविधियों का परिणाम होती हैं। इन आपदाओं के कई प्रमुख कारण होते हैं—

- **सुरक्षा मानकों की अनदेखी:** औद्योगिक और परिवहन क्षेत्र में सुरक्षा मानकों का पालन न करना एक प्रमुख कारण है। कारखानों में सुरक्षा उपकरणों का अभाव, बिना परीक्षण के नए उपकरणों का उपयोग और नियमित निरीक्षण न होने से आपदाएँ होती हैं।

- **पुरानी तकनीक:** कई बार पुरानी और अविकसित तकनीक का उपयोग करने से दुर्घटनाएँ होती हैं। जैसे, पुराने पाइपलाइनों में तेल का रिसाव या पुराने परमाणु संयंत्रों में विकिरण रिसाव।

- **तकनीकी खराबी:** नई तकनीक का सही तरीके से न लगाना या उसका खराब होना भी आपदाओं का कारण बन सकता है, जैसे कि विमानों के इंजन का फेल होना या रेलगाड़ियों की सिग्नल प्रणाली में खराबी आना।

- **निर्णय लेने में गलतियाँ:** अप्रशिक्षित या कम प्रशिक्षित कर्मचारियों द्वारा लिए गए गलत निर्णय, जैसे कि खतरे के संकेतों की अनदेखी करना, आपदाओं का कारण बन सकता है।

- **अनुचित कार्यप्रणाली:** कार्यप्रणाली में त्रुटियाँ, जैसे कि ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन न करना, दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं।

- **जानबूझकर की गई विनाशकारी गतिविधियाँ:** आतंकवादी हमले, जैसे कि बम धमाके, जैविक और रासायनिक हथियारों का उपयोग, जान-माल का भारी नुकसान करते हैं और समाज में भय और असुरक्षा का माहौल बनाते हैं।

- **अवैध निर्माण:** नियमों का उल्लंघन करके अवैध रूप से इमारतें और ढांचों का निर्माण करना, जैसे कि कमजोर नींव पर इमारतें खड़ी करना, आपदाओं को आमंत्रित करता है। हाल ही में दिल्ली में हुई विद्यार्थियों की मौत इसका जीता जागता उदाहरण है।

- **प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन:** प्राकृतिक संसाधनों, जैसे कि जंगलों की अंधाधुंध कटाई और जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन, पर्यावरणीय संतुलन को बिगाड़ता है और आपदाओं का कारण बनता है।

- **जलवायु परिवर्तन:** मानव गतिविधियों, जैसे कि जीवाश्म ईंधनों का जलाना और औद्योगिक प्रदूषण, से उत्पन्न जलवायु परिवर्तन भी आपदाओं का एक महत्वपूर्ण कारण है, जो सूखा, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता को बढ़ाता है।

मानव निर्मित आपदाओं के निवारण के लिए कठोर नियमों और कानूनों का सख्ती से पालन, तकनीकी उन्नयन, शिक्षा और प्रशिक्षण, पर्यावरणीय संरक्षण, आपातकालीन सेवाओं का सुदृढ़ीकरण आवश्यक हैं। सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन, पुरानी तकनीक का आधुनिकीकरण, कर्मचारियों का नियमित प्रशिक्षण और जनता को जागरूक करना जरूरी है। प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग, ग्रीनहाउस गैसों का कम उत्सर्जन, और आपदा प्रबंधन इकाइयों का सुदृढ़ीकरण भी महत्वपूर्ण है।

विकास के नाम पर हमने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है और इसका परिणाम मानव निर्मित आपदाओं के रूप में हमारे सामने आ रहा है। हमें अपनी विकास यात्रा को पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है ताकि हम प्रकृति के साथ तालमेल बिठाते हुए एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकें। आपदाओं के जोखिम को कम करने, प्रभावी बचाव कार्य करने और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए हमें एकजुट होकर काम करना होगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

"शिक्षा और संस्कार"
वर्तमान के बदले हुए परिवेश में

करण सेवदा
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय
नागपुर

शिक्षा मनुष्य के जीवन का सबसे कीमती तोहफ़ा है जो व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल देती है और संस्कार मनुष्य के जीवन का सार है। अच्छे संस्कारों द्वारा ही मनुष्य के व्यक्तित्त्व का निर्माण और विकास होता है और जब मनुष्य में शिक्षा और संस्कार दोनों का विकास होगा तभी वह परिवार,समाज और देश का विकास कर सकेगा। परंतु आज के समय में शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान तक ही सीमित रह गई है। विद्यार्थी केवल किताबी कीड़ा बन रहा है, जबकि शिक्षा का असली उद्देश्य चारित्रिक ज्ञान है, जो आज की इस भागदौड़ वाली जिंदगी में भूल चुके हैं।

बच्चे को अगर उपहार न दिये जाएं तो वह कुछ समय तक रोएगा लेकिन अगर संस्कार न दिये जाएं तो वह जीवनभर रोएगा। प्राचीनकल में भारत में संस्कारों का पाठ पढ़ाया जाता था। विद्यार्थी को सबसे पहले मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव एवं अतिथि देवो भव की शिक्षा दी जाती थी ताकि वह उम्र भर नेकी के रास्ते पर चलकर एक मर्यादित इंसान बने और अपने बड़ों का नाम रोशन करे, लेकिन आज की स्थिति बहुत गंभीर हो चुकी है। आज का विद्यार्थी भौतिकवादी प्रवृत्ति का बन चुका है। वह पढ़ाई केवल इसलिए करता है ताकि आने वाले समय में अपने जीवन में कुछ पैसे कमा सके। संस्कार उसको बाज़ारी शिक्षा से नहीं, बल्कि संस्कारों की शिक्षा से ही मिलेंगे और वह शिक्षा उसको अपने घर पर ही मिलेगी। मनुष्य अपने जीवन में जो डिग्री हासिल करता है वह सिर्फ एक कागज का टुकड़ा मात्र है, जबकि व्यक्ति की असली डिग्री उसके संस्कार है जो उसके व्यवहार में झलकते हैं।

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर एक पुलिस अधिकारी की अपने पुराने स्कूल में शिक्षिका के पैर छूते हुये तस्वीर काफी वायरल हुई थी। स्पष्ट था कि पुलिस अफसर बने छात्र ने अपने गुरु का मान रखा। उसने पढ़ाई के साथ संस्कारों के रास्ते को भी चुना था। शिक्षा लेना और शिक्षा खरीदना दो अलग-अलग विषय है। शिक्षा लेने पर संस्कार मिलते है,जबकि शिक्षा खरीदने पर विद्यार्थी सेवा का उपभोक्ता बन जाता है। ठीक उसी प्रकार, जब उपभोक्ता किसी वस्तु को खरीदेगा, तो उसका मोल-भाव करेगा ही। अक्सर यह भी देखा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चे को उसी कोचिंग सेंटर में दाखिला दिलवाते है जिसकी फ़ीस अधिक होती है।

उनके अनुसार विद्या प्राप्ति का वही सबसे अच्छा स्थान है। उनको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि उनका बच्चा वहाँ कैसी शिक्षा हासिल कर रहा है। क्या उसको वहाँ नैतिकता की शिक्षा मिल रही है? जवाब शायद "नहीं" होगा। जिस विद्या से सिर्फ आजीविका चलाना और रटकर अंक लाना सिखाया जाए, वहाँ मानवीय मूल्यों और संस्कारों की शिक्षा का विचार करना दिन में सपने देखना जैसा है।

आजकल विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में नकल संबंधी अनेक प्रकरण पढ़ने को मिलते है जिनमें बोर्ड के पेपर से लेकर विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के पेपर के लीक होने संबंधी जानकारी दी हुई मिलती है। इस प्रकार का कार्य आपको पेपर की परीक्षा तो पास करा सकता है लेकिन आप संस्कारों की परीक्षा में कभी सफ़ल नहीं हो पाएंगे। संस्कारों की मंजिल तो आपके परिवार द्वारा बनाई गयी नींव पर ही टिक पाएगी।

संस्कारों का एक उदाहरण मेरे मन में बार-बार आता है। राजस्थान के चुरू जिले में कार्यरत एक कॉन्स्टेबल द्वारा "आपणी पाठशाला" नामक संस्था की स्थापना की जा रही है जिसका उद्देश्य गरीब एवं निम्न वर्गों में रहने वाले लोगों की संतानों को अच्छी शिक्षा एवं संस्कार देकर उनके जीवन को संवारना है। यहाँ पर भी संस्कारों का मुझे एक साक्षात उदाहरण यह देखने को मिला कि, हाल ही में सरकारी सेवा में कार्यरत एक महिला अध्यापिका द्वारा अपनी प्रथम तनख़्वाह संस्था को समर्पित की गई जो संस्कारी छवि को और प्रबल करती है| संस्कारों का वर्तमान में सर्वाधिक ह्रास हो रहा है जिसका एक मुख्य कारण सोशल मीडिया का अतिशय दुरुपयोग होना है। आजकल यह भी देखा जाता है कि घर में कौन मेहमान आ रहा है, इसके प्रति बच्चों का कोई उत्साह नहीं दिखाई देता है। बच्चे मोबाइल की रील्स वाली दुनिया से चिपके पड़े हैं, जबकि कुछेक वर्ष पहले बच्चों में यह देखा जाता था कि वे आए हुए मेहमान की मेज़बानी में कोई कसर नहीं रहने देते थे। आज के विद्यार्थी में वे संस्कार नहीं है जो देश और समाज का कल्याण कर सकें। भ्रष्ट आचरण का कारण भी शायद इसी प्रकार की संस्कारहीन शिक्षा है जो समाज में व्यक्ति को सिर्फ धन अर्जन करने के लिए मजबूर करती है। शिक्षा का बाज़ारीकरण होने से उस पैसे को वापस पाने की चाहत में उसका आचरण भ्रष्ट होता जा रहा है।

अत: मनुष्य के जीवन में पढ़ाई ही सबकुछ नहीं, संस्कारों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है और संस्कार बाज़ार या किसी बड़े शिक्षा केंद्र से खरीदे नहीं जाते अपितु अच्छे संस्कार तो बच्चों को परिवार, अच्छे स्कूल व अच्छे वातावरण में रहकर ही मिलते है। महत्त्वपूर्ण तो यह है कि माता-पिता का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि बच्चों को मोबाइल की रील्स वाली दुनिया से अलग रखें। उनको अपने बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाएं ताकि एक अच्छे संस्कारी समाज का निर्माण हो सके। अपने घर से किया गया यह प्रयास निश्चय ही एक दिन बेहतरीन समाज की कल्पना को साकार करेगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आत्मनिर्भर भारत

• आनंद नाग
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, रक्षा सेवाएँ, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

आत्मनिर्भर भारत हमारी सरकार द्वारा शुरू की गई एक विशिष्ट पहल है। इसका उद्देश्य भारत को एक आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से मजबूत राष्ट्र बनाना है। यह अवधारणा आयात पर निर्भरता कम करने और घरेलू उत्पादन तथा विनिर्माण को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देती है। आत्मनिर्भर भारत का विचार कृषि, विनिर्माण, प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे सहित विभिन्न क्षेत्रों पर केंद्रित है। यह स्वदेशी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित करता है, उद्यमिता को बढ़ावा देने के साथ-साथ नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देता है। इसका लक्ष्य एक मजबूत और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था बनाना है जो वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सके और विनिर्माण, प्रौद्योगिकी, कृषि और रक्षा उत्पादन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक नेता बन सके।

स्वतंत्रता से पहले भारत ने अपने आंदोलन के दौरान स्वराज के लिए राजनीतिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया था। महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे महापुरुषों ने समाज के मूल्यों और व्यक्ति के अनुशासन दोनों को विकसित करने के लिए राष्ट्र और स्वयं के संदर्भ में आत्मनिर्भरता की व्याख्या की। दुर्भाग्य से, साल 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, दो शताब्दियों के ब्रिटिश उपनिवेशवाद और लूट से उभरने के संघर्ष में यह अवधारणा खो गई।

दशक की शुरुवात में कोविड-19 महामारी के बाद, जिसके कारण पूर्ण वैश्विक लॉकडाउन हुआ और परिणामस्वरूप घरेलू अर्थव्यवस्था की वृद्धि में मंदी आई, सरकार ने विदेशी आयात पर अधिक निर्भरता के कारण अंतर्निहित जोखिमों को समझा और स्वतंत्रता से पहले की आत्मनिर्भरता वाली आकांक्षाओं को पुनर्जीवित किया। साल 2022 में गृह मंत्रालय ने एक बार फिर इस अवधारणा को पुनर्जीवित किया और इस आवश्यकता पर जोर देने के लिए "आत्मनिर्भरता", "मेक इन इंडिया" और "वोकल फॉर लोकल" जैसे नारे अपनाए गए।

भारत के प्रधान मंत्री ने मई 2020 में कोविड-19 महामारी के व्यापक हमले के बाद राष्ट्र के नाम अपने संबोधन के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की। यह अभियान एक विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज से संबंधित था। वित्तीय वर्ष 2019-2020 में 20 लाख करोड़ रुपये, जो कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10% इस मिशन को प्राप्त करने के लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान में निवेश किया गया। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य भारत को दुनिया के अधिकांश पश्चिमी देशों की तरह एक आत्मनिर्भर देश बनाने के लिए स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना है। आत्मनिर्भर भारत प्रकल्प पांच स्तंभों

पर आधारित है (प्रथम) अर्थव्यवस्था, (द्वितीय) प्रौद्योगिकी, (तृतीय) बुनियादी ढांचा, (चतुर्थ) जनसांख्यिकी और (पंचम) मांग एवं आपूर्ति। इन क्षेत्रों को दूसरों से अधिक महत्त्व देने का कारण यह है कि भारत सरकार ने महामारी के दौरान यह पाया कि यह क्षेत्र विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं और लॉकडाउन के कारण उन्हें सबसे अधिक रुकावटों का सामना करना पड़ा। हमारी सरकार द्वारा इन क्षेत्रों में किए गए सुधार कुछ इस प्रकार हैं:

अर्थव्यवस्था: कोविड-19 महामारी के प्रकोप और उसके बाद के वैश्विक संकट ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया कि भारत बाहरी मदद के बिना संकट से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं था। भारतीय अर्थव्यवस्था महामारी से बहुत बुरी तरह प्रभावित हुई क्योंकि अनौपचारिक क्षेत्र को प्रवासन जैसे विभिन्न कारणों से लॉकडाउन का खामियाजा भुगतना पड़ा। दशकों से बेहतर अवसरों और आजीविका की तलाश में लाखों श्रमिक अपने गांवों से शहरों की ओर पलायन कर गए थे। फलस्वरूप, लॉकडाउन के कारण बड़े शहरों से ग्रामीण भारत की ओर श्रमिकों का व्यापक प्रवास हुआ। इससे श्रमिकों और देश दोनों पर गहरा आर्थिक प्रभाव पड़ा। इसकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए, सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रोजगार के अवसरों की परिकल्पना करनी थी और शहरों में और अधिक विकास सुनिश्चित करना था। इसलिए सरकार ने अधिक रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करने और श्रम समस्या को खत्म करने के लिए मनरेगा के लिए फंडिंग में 40,000 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी की। सरकार ने नौकरियों की उपलब्धता के लिए आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना की भी घोषणा की।

प्रौद्योगिकी: लॉकडाउन ने प्रौद्योगिकी को सबसे आगे रखा एवं गतिविधियों को डिजिटल और वस्तुतः संचालित किया। महामारी से निपटने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा था। सेवाओं का डिजिटलीकरण टेलीहेल्थ से लेकर ऑनलाइन शिक्षा तक, वर्क फ्रॉम होम से लेकर कैशलेस ट्रांसफर और आपातकालीन सहायता तक सभी उस समय की सबसे बड़ी मांग बन गई थी। पश्चिम पर तकनीकी निर्भरता अतीत में एक सतत समस्या रही है। परन्तु इस क्षेत्र में भारत ने पिछले 2 दशकों में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है और यह सेवा क्षेत्र सहित अन्य संबंधित क्षेत्रों में उसके प्रदर्शन पर प्रतिबिंबित होता है। उल्लेखनीय है कि महामारी से पहले भारत ने यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस) नामक एक उपयोगकर्ता-अनुकूल भुगतान प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू किया था और महामारी के समय में ऑनलाइन भुगतान करने में अपनी आसानी के कारण यह व्यवस्था एक जीवन-रक्षक प्रमाणित हुई। यह प्रणाली इतनी लोकप्रिय हो गई कि वर्तमान में भारत के साथ मधुर संबंध रखने वाले विदेशी देशों ने भी अपने देश में रहने वाले व्यक्तियों के लिए भुगतान की इस प्रणाली को स्वीकार कर लिया है। लेकिन इन सफलताओं के बावजूद, भारत को अभी भी प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्रों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग और मशीन लर्निंग में एक लंबा सफर तय करने की जरूरत है और सरकार ने आत्मनिर्भर भारत के लिए अपने दृष्टिकोण में इसे सही ढंग से शामिल किया है।

बुनियादी ढांचा: मजबूत स्वास्थ्य और संबंधित सेवा बुनियादी ढांचे का अभाव भारत के लिए हमेशा एक बड़ी समस्या रही है। कोविड-19 के प्रकोप के क्रूर हमले के दौरान यह मौजूदा चिकित्सा के बुनियादी ढांचा, जो लगभग 140 करोड़ लोगों को सेवाएं प्रदान करता है, बुरी तरह से अभावग्रस्त हो गया था और महामारी के दौरान इतने बड़े पैमाने पर अस्पताल में जब पीड़ित लोग भर्ती होने लगे तब भारत की स्वास्थ्य व्यस्था में कमियों को सबने देखा और अनुभव भी किया। यह अकेले स्वास्थ्य और आतिथ्य क्षेत्र नहीं था जिसे महामारी का खामियाजा भुगतना पड़ा, बल्कि दूरसंचार, कृषि और बिजली क्षेत्र को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। प्रधानमंत्री ने महामारी की गंभीरता को संबोधित करने के लिए राष्ट्र के नाम अपने भाषण में बुनियादी ढांचे में अधिक निवेश की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि वैश्विक महाशक्ति बनने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचा भारत की पहचान बने। स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे की समस्या से निपटने के लिए और भविष्य में महामारी की तैयारी के लिए सरकार ने क्षमता निर्माण और अन्य स्वास्थ्य सुधारों के लिए अपने बजट में धन में वृद्धि की। जैव प्रौद्योगिकी विभाग को कोविड-19 टीकों सहित टीकों के अनुसंधान और विकास के लिए 900 करोड़ रुपये दिए गए।

जनसांख्यिकी: भारत की बढ़ती जनसंख्या के दो बहुत महत्वपूर्ण पहलू हैं प्रथमतः समाज का बड़ा वर्ग युवा है और द्वितीयतः वह अधिकतर शहरों में आधारित

हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार साल 2035 में भारत के बड़े बड़े शहरों की जनसंख्या 70 करोड़ होने का अनुमान है, जो चीन के बाद विश्व में दूसरे स्थान पर होगा। यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे शहर निवास स्थल होने के साथ साथ कई भारतीय युवाओं के लिए अवसरों के केंद्र भी हैं। उसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने इस युवा जनसंख्या को भारत की विकास कहानी में सबसे बड़े गेम चेंजर के रूप में चिन्हित किया है। पिछले 2 वर्षों में, सरकार ने युवाओं को कई प्रकार की नौकरियों में बेहतर प्रशिक्षण के लिए कई योजनाएं, कार्यक्रम और पहल शुरू की हैं, खासकर विनिर्माण और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में। शिक्षा के क्षेत्र में, सरकार ने हाल ही में अधिक योग्यता की सुविधा के लिए कई छात्रवृत्तियाँ और प्रोत्साहन शुरू किए हैं। भारत में आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत, विभिन्न सरकारी पोर्टल जैसे स्वयं प्रभा और पीएम ई-विद्या आदि के माध्यम से प्रौद्योगिकी संचालित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। किसी भी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिए युवाओं का योगदान आवश्यक है और इसलिए इस दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदम निकट भविष्य में भारत की आत्मनिर्भरता के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

मांग एवं आपूर्ति: मांग और आपूर्ति शृंखला में व्यवधान ने जनता की समग्र खपत और बचत को महामारी के समय में प्रभावित किया था। इससे माल के उत्पादन और निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

आत्मनिर्भर भारत के लिए अपने राष्ट्रीय संबोधन में प्रधान मंत्री ने स्पष्ट रूप से भारत की मांग और आपूर्ति शृंखला को मजबूत करने पर जोर दिया। न केवल मांग को पूरा करने बल्कि उसे बढ़ाने के लिए आपूर्ति शृंखला में सभी हितधारकों को मजबूत करने को महत्व दिया गया। सरकार ने यह सुनिश्चित करने के लिए मांग एवं आपूर्ति में कोई विसंगति न हो, कई कदम उठाए जैसे कि बजट में सरल और स्पष्ट कर कानून, मानव संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए संशोधित श्रम कानून औद्योगिक विकास, खाद्य प्रसंस्करण, आर्गेनिक फार्मिंग जैसे प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करना।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, सरकार ने आत्मनिर्भर भारत के इस दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में कई सारे कदम उठाए हैं। परन्तु, आत्मनिर्भर भारत के इस सपने को साकार करना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए सरकार, उद्योग जगत के उद्यमियों और भारत के नागरिकों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। आत्मनिर्भर बनने में आने वाली चुनौतियों से निपटने में समय लगेगा लेकिन दृढ़ संकल्प और दृढ़ता से इसे हासिल किया जा सकता है। हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने से लेकर विशाल आबादी के लिए बेहतर जीवनशैली प्रदान करने तक आत्मनिर्भर भारत के लाभ बहुत बड़े हैं। भारत में विभिन्न क्षेत्रों में हो रही इस पहल के साथ, हमें इस आंदोलन के सकारात्मक परिणाम देखने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग

श्री अतुल कुमार
लेखापरीक्षक
कार्यालय स्थापना
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), हैदराबाद

हिंदी, विश्व की पाँच सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और यह उनमें से तीसरे स्थान पर स्थित है। यह भारत और प्रवासी भारतीयों के बीच संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। 35 करोड़ से अधिक मूल वक्ताओं के साथ, हिंदी केवल संस्कृति और साहित्य की भाषा नहीं है, बल्कि विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण उपकरण बनती जा रही है।

इस लेख में हम विज्ञान और तकनीक में हिंदी की भूमिका का विश्लेषण करेंगे। पहले भाग में, हम हिंदी भाषा के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा करेंगे और यह समझेंगे कि कैसे हिंदी ने वैज्ञानिक संवाद में अपनी पहचान बनाई। दूसरे भाग में, हम वर्तमान रुझानों की पड़ताल करेंगे, जिसमें हिंदी में प्रकाशित शोध पत्रों, तकनीकी दस्तावेजों और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का उल्लेख होगा। तीसरे भाग में, हम हिंदी के उपयोग में आने वाली चुनौतियों, जैसे कि उचित शब्दावली का अभाव और संसाधनों की कमी, पर विचार करेंगे । अंत में, हम वर्तमान सफलता एवं भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा करेंगे, जिसमें डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से हिंदी में विज्ञान और तकनीक के ज्ञान का प्रसार शामिल होगा। इस प्रकार, यह लेख हिंदी की विज्ञान और तकनीक में भूमिका को स्पष्ट रूप से उजागर करेगा।

पहला भाग : पृष्ठभूमि

वैज्ञानिक संभाषण में हिंदी के प्रयोग की नींव 20वीं सदी की शुरुआत में रखी गई, जब भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने एक राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता को प्रमुखता दी। इस आंदोलन के दौरान, कई विद्वानों और नेताओं ने हिंदी को एक सशक्त माध्यम के रूप में मान्यता दी। पुरूषोत्तम दास टंडन, भगत सिंह, गोपाल सिंह गोखले और महात्मा गांधी जैसे व्यक्तित्वों ने शिक्षा और साक्षरता के प्रसार के लिए हिंदी के उपयोग की वकालत की। उनका मानना था कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्र की एकता और पहचान का प्रतीक है।

स्वतंत्रता के बाद, हिंदी को विज्ञान और तकनीक सहित शिक्षा के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में विकसित करने के लिए कई प्रयास किए गए। 1950 और 1960 के दशकों में, विभिन्न संस्थानों की स्थापना की गई, जिन्होंने हिंदी को विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ावा देने का कार्य किया। इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था 1960 में **"केंद्रीय हिंदी निदेशालय"** की स्थापना, जिसका आदर्श वाक्य था "अहम् राष्ट्र संगमनि वसुनम्"। इसका उद्देश्य हिंदी को सरकारी और शैक्षणिक संवाद का माध्यम बनाना था।

इसके साथ ही, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के बीच प्रभावी संचार को सक्षम बनाने के लिए 1 अक्टूबर 1961 को **"वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग"** का गठन किया गया। इस आयोग का उद्देश्य सभी भारतीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावली का

विकास करना था, ताकि वैज्ञानिक विचारों का संप्रेषण सरल और प्रभावी हो सके।

हिंदी में विज्ञान और तकनीक की शब्दावली विकसित करने के प्रयासों ने न केवल शोधकर्ताओं को अपने विचारों को साझा करने में मदद की, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि हिंदी बोलने वाले लोग वैश्विक वैज्ञानिक संवाद में सक्रिय भागीदारी कर सकें।

दूसरा भाग: चुनौतियाँ

हिंदी भाषा में वैज्ञानिक संचार को प्रभावी बनाने में कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ मौजूद हैं, जिनमें से सबसे प्रमुख है मानकीकृत वैज्ञानिक शब्दावली का विकास। विज्ञान की दुनिया में कई ऐसे शब्द और अवधारणाएँ हैं जिनका सीधा अनुवाद हिंदी में नहीं किया जा सकता, जिससे विभिन्न विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं। इस समस्या के समाधान के लिए **"केंद्रीय हिंदी निदेशालय"** जैसे संगठनों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन एक व्यापक और मानकीकृत शब्दावली स्थापित करने में अभी भी काफी समय लगेगा।

दूसरी चुनौती मानसिकता से संबंधित है। अक्सर यह धारणा बनी रहती है कि जब वैज्ञानिक संचार की बात आती है, तो अंग्रेजी एक बेहतर विकल्प है। कई शोधकर्ता और छात्र मानते हैं कि अंग्रेजी में प्रकाशित होने से उनकी विश्वसनीयता और दृश्यता बढ़ती है। इस मानसिकता के कारण, हिंदी का उपयोग करने में हिचकिचाहट होती है, जो कि एक महत्वपूर्ण बाधा है। यद्यपि वैज्ञानिक साहित्य को हिंदी में अनुवाद करने की पहल की गई है, फिर भी संसाधनों की उपलब्धता अभी भी सीमित है। कई उच्चस्तरीय पाठ्यपुस्तकें और शोध पत्र मुख्य रूप से अंग्रेजी में ही प्रकाशित होते हैं, जिससे हिंदी भाषी छात्रों के लिए आवश्यक सामग्री प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

डिजिटल संसाधनों का विभाजन भी एक नई चुनौती के रूप में उभर रहा है। शहरी क्षेत्रों में हिंदी में डिजिटल संसाधनों तक बेहतर पहुंच हो सकती है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और तकनीकी बुनियादी ढांचे की कमी के कारण यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है। यह असमानता हिंदी भाषी आबादी के बीच वैज्ञानिक ज्ञान की पहुंच को सीमित करती है।

इस संदर्भ में, कुछ शोधों ने यह भी दर्शाया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा में वैज्ञानिक अवधारणाएँ सिखाई जाती हैं, तो उनकी समझ और प्रदर्शन में सुधार होता है।

इस प्रकार, हिंदी में वैज्ञानिक संचार को प्रभावी बनाने के लिए न केवल मानकीकृत शब्दावली का विकास आवश्यक है, बल्कि मानसिकता में परिवर्तन और संसाधनों की उपलब्धता को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों का समाधान करके ही हम एक अधिक समावेशी और सशक्त वैज्ञानिक समुदाय की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

तीसरा भाग : वर्तमान रुझान

भारत में, शैक्षणिक संस्थानों ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने भौतिकी विज्ञान, रसायन विज्ञान और कंप्यूटर विज्ञान जैसे

विषयों को हिंदी में पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रमों की शुरुआत की है। यह कदम न केवल छात्रों को जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को अधिक सहजता से समझने में सहायता करता है, बल्कि उन छात्रों को भी प्रोत्साहित करता है जो हिंदी में अधिक सहज हैं और विज्ञान एवं तकनीक में करियर बनाने के इच्छुक हैं।

हिंदी में शोध प्रकाशनों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। **"शोध संचयन"** और **"विज्ञान प्रकाश"** जैसी पत्रिकाएँ वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार के लिए समर्पित हैं, जो हिंदी में शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्षों को साझा करने का एक मंच प्रदान करती हैं। यह प्रवृत्ति न केवल वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देती है, बल्कि हिंदी भाषी समुदाय के बीच विज्ञान के प्रति रुचि को भी जागृत करती है। शोधकर्ताओं को अपने कार्यों को हिंदी में प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे यह ज्ञान व्यापक दर्शकों तक पहुँच सके।

भारत सरकार ने भी विज्ञान और तकनीक में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण पहलें शुरू की हैं। विज्ञान और तकनीक मंत्रालय ने वैज्ञानिक साहित्य का हिंदी में अनुवाद करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम स्थापित किए हैं। इनमें पाठ्यपुस्तकें, शोध पत्र, और शिक्षण सामग्री शामिल हैं, जो छात्रों, अनुसंधान पेशेवरों, और विज्ञान एवं तकनीक में रुचि रखने वाले नागरिकों के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार, सरकार का यह प्रयास न केवल वैज्ञानिक ज्ञान को सुलभ बनाता है, बल्कि हिंदी भाषी छात्रों के लिए अध्ययन के अवसरों को भी बढ़ाता है।

डिजिटल तकनीक के आगमन के साथ, हिंदी में उपलब्ध ऑनलाइन संसाधनों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। विज्ञान और तकनीक के लिए समर्पित वेबसाइटें, ब्लॉग, और यूट्यूब चैनल तेजी से हिंदी का उपयोग कर रहे हैं ताकि वे अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुँच सकें। **"विज्ञान शो"**, **"वैज्ञानिक जगत"**, और **"विज्ञान टीवी इंडिया"** जैसे प्लेटफ़ॉर्म लेख, वीडियो, और ट्यूटोरियल प्रदान करते हैं जो वैज्ञानिक अवधारणाओं को आकर्षक और सरल तरीके से समझाते हैं। इन संसाधनों की मदद से, छात्र और आम नागरिक विज्ञान से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में भी उपयोगी होती है।

अंतिम भाग: वर्तमान सफलता एवं भविष्य की संभावनाएँ

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी के प्रभावी उपयोग की कई सफलता की कहानियाँ हैं, जो हिंदी भाषी आबादी के बीच बेहतर संचार और समझ की क्षमता को प्रदर्शित करती हैं। इनमें से एक उल्लेखनीय पहल "विज्ञान प्रसार" कार्यक्रम है, जो विज्ञान संचार पर केंद्रित है। यह कार्यक्रम हिंदी में आयोजित कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों और विज्ञान मेलों के माध्यम से विभिन्न दर्शकों को शामिल करता है। इस पहल ने जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरलता से प्रस्तुत करने और जांच की संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी माध्यम के स्कूलों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) जैसे विषयों में छात्रों की भागीदारी और प्रदर्शन में सुधार दिखाया है। अनुसंधान से यह स्पष्ट होता है कि जो छात्र अपनी मूल भाषा में वैज्ञानिक अवधारणाएँ सीखते हैं, वे अक्सर उच्च समझ के स्तर का प्रदर्शन करते हैं। यह इसलिए संभव हो पाता है क्योंकि वे सामग्री से अधिक निकटता से जुड़ते हैं। उदाहरण के लिए, बनारस हिंदू

विश्वविद्यालय (बीएचयू) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों ने हिंदी में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न वैज्ञानिक विषयों में पाठ्यक्रम लागू किए हैं। इसके परिणाम स्वरूप उन छात्रों के नामांकन में वृद्धि हुई है, जो पहले अंग्रेजी-माध्यम पाठ्यक्रम से अलग-थलग महसूस करते थे।

इसके अतिरिक्त, **"खान अकादमी"** जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों ने हिंदी में शैक्षणिक सामग्री की पेशकश शुरू कर दी है। इसने शिक्षार्थियों को उनकी भाषाई आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया है। यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, जहाँ अंग्रेजी दक्षता सीमित हो सकती है। ऑनलाइन शिक्षण वातावरण में हिंदी के एकीकरण ने न केवल शैक्षिक सामग्रियों की पहुँच को व्यापक बनाया है, बल्कि छात्रों को अपनी गति से जटिल विषयों से जुड़ने के लिए भी सशक्त किया है।

हिंदी में विज्ञान साक्षरता को बढ़ावा देने वाले सामुदायिक कार्यक्रमों को भी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। इन कार्यक्रमों ने वैज्ञानिक प्रयासों में लोगों की रुचि बढ़ाई है और उन्हें सक्रिय रूप से विज्ञान से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। सामुदायिक कार्यशालाएँ, विज्ञान मेले और स्थानीय स्तर पर आयोजित संवाद ने स्थानीय स्तर पर वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया है।

इन सफलताओं के साथ-साथ, भविष्य की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी शब्दावली का विकास आवश्यक है। अभी भी कई वैज्ञानिक अवधारणाओं के लिए उपयुक्त हिंदी शब्द नहीं बने हैं, जिससे संवाद में कठिनाई उत्पन्न होती है। इसके लिए एक समर्पित शब्दावली आयोग का गठन किया जा सकता है, जो विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी शब्दावली का विकास करे।

दूसरा, एक समर्पित उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री और संसाधन का निर्माण आवश्यक है। ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर हिंदी में अधिक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए शैक्षणिक संस्थानों और शोधकर्ताओं के मध्य सहयोग बढ़ाना होगा। इसके अलावा, सरकारी और निजी क्षेत्र को मिलकर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए, जो छात्रों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित करें।

तीसरा, मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग प्लेटफार्मों का उपयोग करके विज्ञान संचार को बढ़ावा दिया जा सकता है। विज्ञान से संबंधित वीडियो, लेख और चर्चा फोरम स्थापित किए जा सकते हैं, जो युवा पीढ़ी को विज्ञान की ओर आकर्षित करेंगे।

इन पहलों के माध्यम से, हिंदी का उपयोग विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में न केवल संवाद को सुगम बनाएगा, बल्कि यह एक समावेशी वैज्ञानिक समुदाय के निर्माण में भी सहायक होगा। जैसे-जैसे ये पहलें विकसित होती रहेंगी, उनमें ज्ञान के अंतर को पाटने और अधिक समावेशी वैज्ञानिक समुदाय को बढ़ावा देने की क्षमता बढ़ेगी।

अंततः, भारत में हिंदी में विज्ञान और तकनीक शिक्षा का विस्तार एक स्वागतयोग्य परिवर्तन है जो भविष्य की पीढ़ियों को एक सशक्त और ज्ञानवर्धक मार्ग प्रदान करेगा। यह न केवल राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारतीय वैज्ञानिकों की भागीदारी को सुनिश्चित करेगा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

समाज के कालसापेक्ष दंश

• **बिजेंदर बेरवाल**
वरिष्ठ अनुवादक, महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय, राजकोट , गुजरात

जैसा कि आजकल देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में क्या-क्या हो रहा है, वो किसी से छुपा नहीं है। चारों तरफ एक तरह का हाहाकार सा मचा हुआ है, कहीं दो देशों के बीच पिछले दो वर्षों से युद्ध जारी है, जैसे कि यूक्रेन और रूस के बीच, जिसका कोई हल भी निकलता नहीं नजर आ रहा है, और बे-वजह ही युद्ध लंबा होता जा रहा है, अब तो ऐसा लगता है कि यह युद्ध अब एक युद्ध कम और दोनों देशों के बीच नाक की लड़ाई बन चुकी है, दोनों में से कोई हारना नहीं चाहता है, क्योंकि जो भी इस युद्ध में हारेगा तो उसकी छवि पूरे विश्व में एक पराजित राष्ट्र के रूप में स्थापित हो जाएगी और जो जीतेगा उसकी छवि पूरे विश्व में दूसरे देशों के बीच एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित हो जाएगी। इसी युद्ध को रोकने हेतु विश्व के अन्य दूसरे देशों द्वारा समय-समय पर प्रयास तो किए गए हैं, परंतु फिर भी उस स्तर पर अभी प्रयास किए जाने बाकी है, जो युद्ध को तत्काल प्रभाव से रोकने में सफल हो जाए और युद्ध लड़ रहे दोनों ही देशों के बीच शांति स्थापित हो जाए और किसी भी देश के जान-माल की हानि होने से बच जाए। एक तरह से कहा जा सकता है कि विश्व में शांति स्थापित किए जाने हेतु ऐसा होना तत्काल प्रभाव से आवश्यक है। इस युद्ध का कारण भी हम सभी जानते हैं जो शुरू तो एक विचार को लेकर हुआ था कि यूक्रेन नाटो संगठन का हिस्सा बनना चाहता था और रूस को यह मंजूर नहीं था कि यूक्रेन नाटो की सदस्यता ग्रहण करे, लेकिन दोनों ही देश अपनी अपनी बात पर अड़े रहे और आखिरकार न चाहते हुए भी दोनों देशों के बीच साल 2022 में फरवरी माह मे युद्ध आरंभ हो गया जो आज भी जारी है।

इसी तरह, विश्व में और दूसरी घटनाओं की बात करें तो कह सकते हैं कि इज़राइल में हमास द्वारा आक्रमण किए जाने के बाद इज़राइल और हमास के बीच युद्ध जारी है, जिसका भी कोई हल निकलता नजर नहीं आ रहा है, युद्ध चाहे राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय हो, दोनों ही प्रकार के युद्धों में केवल और केवल उन देशों का, जो युद्ध में लिप्त होते हैं और कई बार दो देशों के बीच युद्ध होने के कारण आसपास वाले देशों के लोगो का भी नुकसान हो ही जाता है। युद्ध तो हो जाता है, और कुछ समय के पश्चात सभी दूसरे देशों के द्वारा किए जाने वाले प्रयासों से युद्ध रुक भी जाता है, लेकिन युद्ध ग्रस्त देश इसी युद्ध के कारण अपने यहाँ हुए जान-माल के नुकसान के कारण कई वर्ष पीछे चले जाते हैं जिन्हे फिर से अपने आपको विश्व में स्थापित करने में और अपनी पहचान पुनः बनाने में एक लंबा समय लग जाता है। इसी तरह और भी दूसरे मुद्दे होते हैं जिन पर विश्व के अनेक देशों के बीच समय-समय पर तकरारें होती रहती हैं और संबंधित देश समस्याओं में उलझे रहते हैं।

ये तो हुई विश्व स्तर पर शांति स्थापित होने में उत्पन्न हो रही अनेक बाधाओं में से कुछ मुद्दों की बात , जिनके होने से विश्व में शांति, खुशहाली और अमन कायम करने में समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं और हो भी रही हैं , इसी तरह देश में भी बहुत कुछ ऐसा भी घट रहा रहा है, जिसकी वजह से देश में भी कोहराम मचा हुआ प्रतीत होता है, उन्ही घटनाओं को लेकर धरने, प्रदर्शन और लड़ाई-झगड़े तक हो रहे है। जैसा कि अभी हाल ही में बंगाल में एक डॉक्टर महिला के साथ जो भी घिनौना कृत्य हुआ वो सभी जानते हैं। बेटी बचाने और बेटी पढ़ाने के संदर्भ में बात करें तो यह विदित है कि **भारत सरकार द्वारा हरियाणा राज्य में जिला पानीपत से "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"** अभियान की शुरुआत की गई थी, इस अभियान का उद्देश्य यह था कि बालक/ बालिका के मध्य बढ़ते असंतुलन को खत्म किया जाए, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण भी बढ़े। इसके अलावा, यही पंक्तियाँ समय बीतने के साथ-साथ एक स्लोगन सी बनती चली गई। एक बड़े स्तर पर देखें तो इस अभियान का यही उद्देश्य था कि महिलाओं की स्थिति में हर प्रकार से सुधार लाया जा सके। आपने और हमने अक्सर बहुत सी गाड़ियों के पीछे और जगह-जगह स्कूलों की दीवारों पर यही स्लोगन लिखा हुआ देखा होगा, जो लड़कियों की स्थिति को सुधारने और उन्हें मजबूत करने हेतु हर दृष्टिकोण से बिल्कुल पूरी तरह से सही भी है। योजना काफी हद तक सफल भी रही। सरकार ने बेटियों को पढ़ने-पढ़ाने हेतु और उनके लाभ हेतु और भी योजनाएं बनाई, जिसकी सहायता से बेटियाँ ज्यादा से ज्यादा पढ़ी लिखी भी हो गई है और जिसके कारण वे पहले से ज्यादा मजबूत भी हुई है।

यद्पि योजना के काफी हद तक सकारात्मक परिणाम भी निकले परंतु, दूसरी ओर समाज में फिर भी कुछ ऐसी घटनाएँ पूर्व में भी घटी और अभी वर्तमान में भी घट रही है, जिसकी वजह ये बात यकीनन कहीं जा सकती हैं कि जो माता-पिता अब चाहे वह कोई बड़े पैसे वाले हो, या कोई मध्यम श्रेणी के माता-पिता हो या कोई गरीब आदमी भी, जो सभी अपनी बेटी को पढ़ा लिखाकर एक बड़ा इंसान बनाना चाहते हैं लेकिन ऐसी घटनाओं के चलते वे सभी डर जाते हैं और उनका डरना स्वाभाविक ही है, क्योंकि ऐसी घटने वाली घटनाओं की जब ऐसी डरावनी खबरे आती हैं तो चाहे कोई भी व्यक्ति हो, सभी डर ही जाते हैं और उनके डर के पीछे का कारण वही समाज में घटने वाली यौन उत्पीड़न/ शोषण वाली घटनाएँ ही होती है और अब समय भी ऐसा आ गया है कि अब ऐसी घटनाएँ या बातें किसी के छुपाए छुपती नहीं है बल्कि आजकल सशक्त हो चले मीडिया के माध्यम से पूरे समाज और देश में कुछ ही समय में पता चल ही जाती है। जिसके संदर्भ में अभी हाल ही में कोलकाता में घटी घटना को संदर्भित किया जा सकता है, जिसकी खबर भी फैलते देर नहीं लगी।

कुछ इसी प्रकार का हादसा साल 2012 में दिल्ली में भी घटित हुआ था, जिसे हम निर्भया कांड के नाम से भी जानते हैं। उस हादसे में भी निर्भया नामक लड़की की जान नहीं बच पाई थी। उस घटना ने भी राजधानी दिल्ली के साथ-साथ पूरे देश को हिला कर

रख दिया था। बहुत ही बड़ी संख्या में प्रदर्शन हुए, लोग धरनों पर बैठे और लड़की को इंसाफ दिलाने हेतु बड़े-बड़े आंदोलन भी हुए जिसकी वजह से उस मामले ने भी दोषियों को सजा हुई और पीड़ित परिवार को न्याय मिला।

उस मामले में भी उस महिला के साथ बहुत ही घिनौना व्यवहार किया गया था, जिसकी वजह से विदेश मे भी बेहतर इलाज मिलने के बावजूद कुछ समय बाद उपचार के दौरान उस लड़की की मृत्यु हो गई थी। आए दिन अखबारों में यौन शोषणों की खबरे आती रहती है, स्कूल में लाने-जाने वाले बच्चों वाली वैन के ड्राइवरों से संबंधित ऐसी खबरे आती रहती हैं, कहीं लोगो द्वारा मिलकर सामूहिक यौन शोषण को अंजाम दे दिया जाता है तो कहीं लड़की को कुछ नशीला पदार्थ खिलाकर ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। यौन शोषण की घटना को चाहे किसी एक व्यक्ति द्वारा अंजाम दिया गया हो या कुछ लोगो द्वारा ऐसी घिनौनी घटना को अंजाम दिया गया हो, सभी बहुत ही निंदनीय होती हैं और जिसकी वजह से समाज का, उस राज्य का जहां ऐसी घटनाओं का अंजाम दे दिया जाता है, का नाम खराब होता है और जब मीडिया द्वारा राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी खबरे प्रसारित होती हैं, तो साथ मे देश के नाम की छवि भी धूमिल होती है। जिसकी परवाह ऐसी घटनाओं को अंजाम देने वाले लोग कभी नहीं करते हैं, उन्हें कानून का डर ही नहीं लगता है और मौका मिलते ही अपने गलत इरादों को अंजाम दे डालते हैं। कभी-कभी स्कूलों मे हुए यौन शोषण की खबरे आती हैं, तो कभी-कभी कॉलेजों से संबंधित यौन शोषण की खबरें आती हैं। स्कूल, कॉलेजों में घटने वाली ऐसी घटनाओं में कई बार स्टाफ का ही कोई कार्मिक भी लिप्त पाया जाता है। कभी-कभी किसी खेल क्षेत्र से जुड़ी भी इस प्रकार की खबरे आती हैं, जहां खिलाड़ी अपने आपको इस प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ पाते हैं। कई बार बालिका छात्रावास (गर्ल्स हॉस्टल) में भी ऐसी गलत बातों के हो जाने के कारण वहाँ से भी खबरे आ जाती हैं।

अगर हम आज के इन कलयुगी रावणों की तुलना उस त्रेतायुगी रावण से करें तो पाएंगे कि ये आज के कलियुगी रावण तो उस रावण से कहीं आगे निकल गए हैं। उस रावण ने तो केवल माता सीता का हरण ही किया था और वह कभी भी माता सीता को छू तक नहीं सका था, लेकिन आज क्या स्थिति है, क्या हो रहा है, हम सभी जानते हैं। आज के रावण के कर्मों को देखे तो उस समय का रावण आज के रावणों के आगे कहीं ठहरता नहीं हैं। नारी ऐसे लोगो के हाथों में एक खिलौने से बढ़ कर और कुछ नहीं होती है। ऐसे लोग कुछ भी नहीं देखते, न कोई रिश्ता, न कोई उम्र, न ही कोई मोहल्ले समाज का डर, वे सभी बस अपने इरादों को अंजाम देने की सोचते रहते हैं। समाज में उन छोटी बच्चियों को जो उम्र में बहुत छोटी ही होती हैं, जिन्हें दुनियादारी के बारे मे, इस समाज के लोगों के बारे में भी कुछ भी पता ही नहीं होता है, वे भी बुरी नजर वाले व्यक्तियों के गलत इरादों का शिकार हो जाती हैं। ऐसे लोग ये भी नहीं देखते हैं कि सामने वाली कोई छोटी बच्ची जो अपने सामने वाले व्यक्ति के बारे में कुछ भी नहीं जानती है, जो उसके गलत इरादों से अंजान होती है, और जो उसे अपना अंकल या भाई तक मानती है, ऐसे गलत लोग ऐसी

मासूम बच्चियों को भी नहीं छोड़ते हैं। जो लोग ऐसी गलत भावनाओं के शिकार होते हैं, ऐसे व्यक्ति मौका मिलते ही अपनी गलत भावनाएँ दर्शाने मे, उनको करने मे जरा भी देर नहीं लगाते हैं और ऐसा ना सोचते हुए कि हम इस काम को न करें और ऐसी बातों से दूर रहे, वे अपने आपको अपराधी बनने से रोक नहीं पाते हैं और अपराध की श्रेणी मे घोषित अपराध को कर ही डालते हैं। अखबारों मे रोज ऐसी कोई न कोई खबर या घटना पढ़ने मे आती ही रहती हैं।

कई बार पुरुषों द्वारा स्त्री के प्रति एक तरफा आकर्षण होने के कारण भी ऐसी घटनाएँ होने में देर नहीं लगती है, ऐसे मामलों में पुरुष की ओर से महिला के प्रति अपनी भावनाएँ दर्शाना और महिला द्वारा उन भावनाओं की परवाह न करना, या महिला द्वारा पुरुष को अपनी बात कहने से रोकना, उस व्यक्ति के दोस्ती संबंधी आग्रह को ठुकराना या व्यक्ति की बातों को बिल्कुल ही सिरे से खारिज कर देना या उसकी ओर न देखते हुए उसकी बातों को नजर अंदाज करना भी इस प्रकार की घटनाओं को जन्म दे देता है, जिसमें कई बार महिला के साथ होने वाला जुर्म बहुत हद तक बढ़ जाता है और नतीजा फिर वही स्त्री के प्रति हिंसा के रूप में सामने आता है, जो नहीं होना चाहिए। इस प्रकार की मामलों की संख्या भी बढ़ती जा रही है।

ऐसी बात नहीं कि ऐसी गलत बातों को रोकने के लिए कानून नहीं बने हैं, लेकिन आज के माहौल को देखते हुए, जहां इतने सख्त कानून भी बने हुए हैं, और फिर भी ऐसी घटनाएं तकरीबन रोज ही हो जाती हैं, तो उसको देख कर लगता है कि लोगो मे अब कानून का कोई डर नहीं रहा है, कानून के रहते हुए भी, गलत लोग उसको नजर अंदाज करते हुए अपने बुरे इरादों को अंजाम देने में न तो कोई संकोच करते हैं, और न ही घबराते हैं, बस ठान लेते हैं कि जो करना है सो करना है। अगर समाज मे ऐसी घटनाएं दिन-ब-दिन रोज ही हो रही हैं, तो फिर समाज मे स्त्रियाँ कहाँ सुरक्षित कही जा सकती है। आंकड़े तो और भी विकट स्थिति बयां करते हैं। ऐसे माहौल मे किसी भी लड़की के माता-पिता को उसको बाहर भेजते हुए डर लगना स्वाभाविक ही हैं। लड़कियां जो नौकरी करने बाहर जाती है, गलत लोग उनके साथ भी अपने गलत इरादों को अंजाम देने में पीछे नहीं होते हैं, और मौका मिलते ही महिलाओं के साथ गलत व्यवहार करने लगते हैं, हालांकि सभी के साथ ऐसा कुछ हो, यह कोई जरूरी नहीं है, लेकिन फिर भी अधिकतर मामलों में कभी-कभी बाहर काम करने वाली महिलाओं के साथ भी ऐसी घटनाएं घट जाती है। कई बार महिलाओ के साथ ऐसी बातें घर पर भी हो जाती है, जब वे घर पर बाहर से आए किसी व्यक्ति के गलत विचारों से पूरी तरह अंजान होती है और सामने वाले पर विश्वास कर लेती है और तब ऐसे गलत लोगो के गलत इरादों से निपटना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

ऐसा नहीं है कि समाज में सभी लोग गलत इरादे रखते हैं, या सभी खराब है, लेकिन जैसे कि दस विश्वास भरी बातों को तोड़ने के लिए केवल एक ही अविश्वास वाली बात पर्याप्त है, ठीक वैसे ही समाज में कोई ऐसा कृत्य जो समाज में किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं कहा जा सकता है, अगर घटित होता है तो वो बात भी समाज

में सभी का विश्वास तोड़ने के लिए पर्याप्त होती है और समाज में गलत उदाहरण के रूप में स्थापित हो जाती है क्योंकि इस दुनिया में एक सिद्धांत यह भी है कि जहां एक ओर सकारात्मक बातों का प्रसार होने में समय लगता है, तो वहीं दूसरी ओर नकारात्मक बातों को फैलने में जरा भी देर नहीं लगती है, जंगल में आग की तरह फैल जाती है। गलत व्यक्ति के ऐसे गलत कर्मों से इस बात का भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि इन्ही गलत कार्यों से सारी मानव जाति पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है और चारों ओर उसी की चर्चा होने लगती हैं। इसलिए, कई बार सभी कुछ सही होते हुए भी किसी एक के गलत होने के कारण भी सभी को गलत ठहरा दिया जाता है।

निष्कर्षत: सार रूप में देखें और कहें तो कह सकते हैं कि समाज में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ वाली बात तो ठीक हैं, लेकिन अब कई बार ऐसे लगता है, कि यह स्लोगन अधूरा है, इस स्लोगन में अब यह जोड़ा जाना चाहिए कि बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ के साथ अब बेटों को भी संस्कारवान बनाओ। खाली एक तरफ से बात नहीं बनेगी। अब ऐसी घटनाओं को देखते हुए यह बहुत जरूरी हो गया है कि जो लड़के गलत होते हैं वे गलत भावनाओं से ग्रस्त हो जाते हैं तो उनको संस्कारी बनाया जाए, यदि समय रहते गलत लोगो के इरादों के बारें में पता चल जाता है तो उनको समझाया जाए, उनकी काउंसिलिंग आदि भी कराई जाए। उन्हे विशेष तौर पर यह समझाया जाए कि किसी भी लड़की के साथ गलत बात करना, कोई गलत व्यवहार करना हमेशा ही गलत होता है, जिसको किसी भी नजर से, न तो सामाजिक, न ही कानूनी रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता है। उन्हें भी यह समझाना होगा कि समाज में हर किसी महिला की चाहे छोटी हो या बड़ी सभी की इज्जत करना, उनका मान-सम्मान करना जरूरी है। गलत लोगों को अपने मन से गलत बातों को निकालना भी होगा साथ ही ऐसी गलत बातों से गलत लोगों को खुद ही दूर रहना होगा, ताकि गलत कामों और उससे जुड़े गलत परिणामों से बचा जा सके। इसलिए, अब महिलाओं को और भी सशक्त बनना और बनाना होगा, ऐसे मामलों का त्वरित निपटान करना होगा, सजाएं सख्त से सख्त करनी होंगी, ताकि सभी के साथ-साथ विशेषकर गलत लोगों के दिलो दिमाग में कानून के डर के साथ-साथ महिलाओं के प्रति इज्जत भी पैदा हो सके और वे जुर्म करने से भी बचे और समाज में ऐसी घटनाओं को होने से भी रोका जा सके।

मॉर्निंग वॉक

• पीयूष कुमार
सहायक प्रशासनिक अधिकारी, निरीक्षण स्कन्ध, मुख्यालय, नई दिल्ली

"वॉकिंग इज़ ए गुड एक्सरसाइज़"। अँग्रेजी सीखने के क्रम मे प्रत्येक व्यक्ति यह वाक्य जरूर पढ़ता है। पर सिर्फ पढ़ता है, कढ़ता नहीं है इसको। कढ़ने का समय तब आता है जब मध्य प्रदेश उत्तम प्रदेश हो जाता है।

"लोगो को तो पता नहीं इस उत्तम प्रदेश से कितनी जलन है कि गाहे बगाहे इशारा करते रहते हैं। "यार टमी पर फैट आ रहा है" या फिर "यू आर लुकिंग हैवी" या "यू आर गेनिंग वेट" या "लंबोदर" की भी उपाधि कभी कभी दे देते हैं। अब इन जलनखोरों को कौन समझाये कि यार हम खाते पीते घर के हैं, सरकारी नौकर हैं कोई मरभुक्खे या जन्म भर के भुक्खड़ नहीं हैं। ज्ञानी ध्यानी महापुरुष कहते हैं यदि पेट न होता तो भेंट न होता। पापी पेट के सवाल पर ही बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं। और तुम पापियों मेरे इसी पवित्र पेट के पीछे पड़े हो। इसी पेट के कारण ही हम तुम जनम के सारे खटकरम कर रहे हैं"।

यह मैं नहीं कह रहा हूँ बल्कि ये झा जी के शब्द हैं और उन्होने ही अपने बुझे हुए श्री मुख से यह बताया था उस दिन। "बिलकुल सत्यवचन महाराज। आखिर पेट आपका है, किसी के बाप का क्या जाता है। अपने घर में तो खाने को नहीं और दूसरों के पेट पर नजर रखते हैं। खाना पीना बंद करवाना चाहते हैं आप का"। मेरे इस कथन से झा जी के चेहरे पर चमक वैसे ही वापस आ रही थी जैसे फ्यूज हुए बल्ब का एलीमेंट फिर से जुड़ गया हो।

झा जी को खुशी खुशी विदा करने के बाद हम भी खुशी-खुशी वापस चल दिए। पीछे से पश्च प्रदेश का दर्शन हो रहा था। उस आंदोलित बॉडी पार्ट (वैसे पूरी बॉडी कहना ज्यादा ही उचित होगा) को देख कर लगा कि लोग गलत नहीं कहते। पर मुझ जैसे बुज़दिल इंसान को सच कहने की हिम्मत न हो सकी।

फिर कुछ महीनो बाद एक सुबह देखता हूँ कि झा जी आपादमस्तक शुद्ध स्वच्छ धवल वस्त्रों मे चले आ रहे हैं। जूते भी सफेद। टी शर्ट , पाजामा सब सफ़ेद। यहाँ तक के एक सफ़ेद तौलिया छोटा सा। एक हाथ मे बोतल और कान मे हैड फोन लगाए। आश्चर्य तो हुआ ही। जो बंदा नौ बजे सोकर उठता था वह आज नौ बजे मॉर्निंग वॉक करके आ रहा है।

रामजुहारी के बाद शुरू हो गए। "मॉर्निंग वॉक कर के आ रहा हूँ। लोग बोलते थे मैं मोटा हो गया हूँ। मुझे तो नहीं लगता था। वाइफ़ बोली तो लगा कि भ्रम है उसका। पर एक दिन साली ने कह दिया जीजा जी आप मोटे होते जा रहे हैं। बात दिल को लग गई। विश्वास तो तब भी नहीं हो रहा था। पर साली ने कह दिया तो अविश्वास करने का सवाल ही नहीं था। उसी दिन से प्रण किया कि जब तक इस कमरा को कमर नहीं बना लूँगा तब तक साली को मुँह नहीं दिखाऊँगा। आज एक महीने से रोज वॉकिंग पर जाता हूँ। अच्छा एक बताओ कुछ तो कमर कम लग रहा

है ना"? फिर मेरी हिम्मत जवाब दे गई जैसे हर मौकों पर दे जाती है। "हाँ हाँ हाँ कुछ तो कम जरूर लग रहा है"। उनका चेहरा यह सुन कर उसी तरह खुशी से चमक उठा जैसे कोई रूपवती अपने रूप की चर्चा से प्रसन्न हो

जाए। फिर जल्दी दिखाते हुए बोले "ठीक है चलता हूँ। जल्दी ही मैं आपको स्लिम हो के दिखाऊँगा। जल्दी ही आप मेरा छरहरा बदन देखेंगे"। अपने दिल मे आशा का संचार कर के तेज कदमों चल दिये। मैं फिर पीछे से जाते हुए देखने के सिवा कुछ न कह और न कर सका। मुझे कहीं से रत्ती भर भी फर्क नहीं दिख रहा था। जैसे पहले थे वैसे ही आज। खैर... बात आई गई हो गई। महीनों बाद एक दिन बाज़ार मे देखता हूँ कि अपनी पत्नी के साथ चले आ रहे थे। वैसे ही थुलथुल बदन। चेहरे पर हंसी का एक टुकड़ा उछालते हुए ज़ोर से बोले "कहाँ से चले आ रहे हैं"? "बाजार मैं ही आया था। कुछ सौदा सुलफ़ के लिए। अच्छा आप सुनाइये क्या हाल चाल हैं आपके"? "बढ़िया हूँ आपकी दया से। मजे से जी रहा हूँ। आशीर्वाद है आपका"। जब तक एक ही बात को दो तीन तरीके से न कह दें तब तक तो रुकते नहीं। "आप की सुबह की सैर चल रही है ना? कुछ परिवर्तन तो दिख रहा है मुझे आप में"। मेरी इस बात को सुन कर ज़ोर का ठहाका लगा उठे। उस ठहाके की आवाज सुन कर आस पास खड़े लोगों के साथ साथ उनका पेट भी चौंक पड़ा। जीभ और तोंद दोनों की प्रतिस्पर्धा दर्शनीय थी। "क्यों मजा ले रहे हैं? मुझे भी इतना तो पता है कि कुछ भी अंतर नहीं आया है। वेइंग मशीन रखी है। रोज वज़न करता हूँ। रत्ती भर भी कम नहीं हुआ है। लोगों ने कम उल्लू नहीं बनाया मुझे"। "फिर क्या हुआ उस सैर का जो आप रोज सुबह करने जाते थे?" मैं मुंह छिपाते हुए धीमे से बोला। "अरे क्यूँ मुँह छुपा रहे हो? मजे तो आप ने भी कम नहीं लिए थे। खैर कोई बात नहीं"। फिर उन्होने जो रहस्योद्घाटन किया वो आप को उन्ही के शब्दों में बतलाता हूँ।

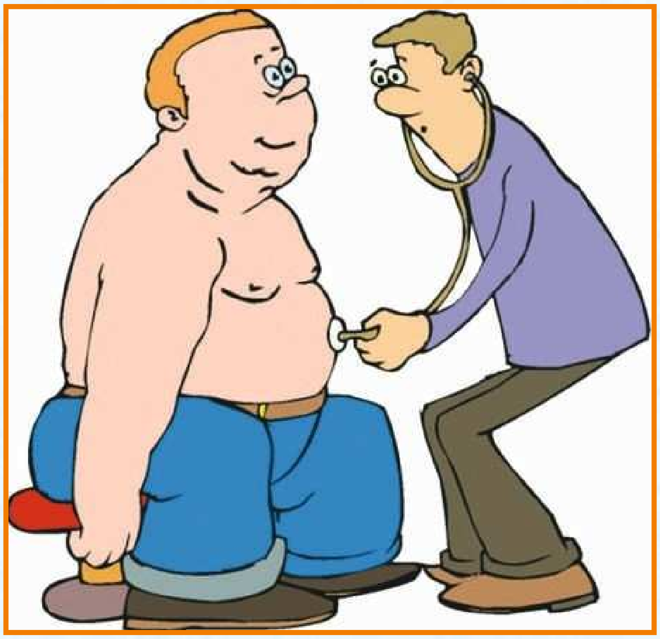

"मैंने जो आज से सात महीने पहले यह पाठ्यक्रम आरंभ किया था तो मुझे वजन कम करने का नशा चढ़ गया था। मैं सुबह की सैर पर प्रतिदिन जाने लगा। एक

ट्रेड मिल भी खरीद लाया। दुनिया की सारी वेब साइट्स को छान मारा। अखबारों में सारे विज्ञापन देख डाले। कोई पचीस दिन में दस किलो वजन कम करने का दावा करता था, तो कोई दस दिन में ही दस किलो कम करने का शर्तिया दावा करता था। एक जिम भी जॉइन कर लिया। सुबह शाम जिम जाने लगा। खूब पसीना बहाने लगा। डाइटीशियन से अपनी खुराक भी पूछ आया। सुबह दलिया शाम दलिया। सलाद ही नाश्ता, सलाद ही दोपहर का भोजन, और सलाद ही डिनर। मेहनत ज्यादा और खाना कम खाने से ऐसा लगा कि कुछ वजन जरूर कम हो रहा है। एक दिन मुंह अंधेरे ही उठ कर सैर को जा रहा था और पीछे से आके कुत्तों ने काट लिया। कुत्तों के काटे का दर्द तो फिर भी कम था। दर्द ज्यादा तो सूईयों का था जो डॉक्टर ने दिया। फिर भी मैं सोलोमन की औलाद, माना नहीं और फिर फिर हार कर भी अपने इस संग्राम को जारी रखा। और फिर वो दिन आ गया जब ज्यादा शारीरिक श्रम और कम खुराक से मैं चक्कर खा कर धरती माता को साष्टांग प्रणाम कर रहा था। अस्पताल ले जाना पड़ा। डॉक्टर ने शर्करा की मात्रा कम पाया और शर्करा का बोतल लटका दिया। पहले तो जिम वाले ने, फिर डाइटीशियन ने, मोटापा घटाने वाले डॉक्टर ने और अंत में अस्पताल वालों ने और डॉक्टरों ने मिल कर ऐसा चपत लगाया कि आज तक कर्जा चुका रहा हूँ। रक्त वर्ग से लेकर एम आर आई कोई टेस्ट बच नहीं सका। आप की भाभी जी अकेले एक जांच केंद्र से दूसरे जांच केंद्र तक चक्कर लगा लगा के थक गईं। अब जा के पता लगा कि डी से डॉक्टर ही नहीं डकैत और डॉग भी होता है। उस जुनून से पीछा तभी छूटा जब ये चपत लग गया। खैर पैसे तो फिर आ जायेंगे पर जो प्रताड़ना उन दिनों झेला वो बयां नहीं किया जा सकता। और मोटा होना कोई बुराई नहीं है। आदमी का स्वस्थ होना जरूरी है। मैं अपने को स्वस्थ महसूस करता हूँ यही काफी है। आपको एक सलाह बिना मांगे मुफ्त में दे रहा हूँ कभी वजन घटाने का चस्का मत लगाना"। फिर उनके मुख और उत्तम प्रदेश उनके अट्टहास का साथ देने लगे।

"ठीक है चलता हूँ" कह के मैं खिसकने का प्लान बनाने लगा। वो फिर मुस्कराए। और इस बार उनकी मुस्कराहट में मुझे अपनी अवहेलना महसूस हुई और ऐसा लगा कि जैसे कहना चाहते हो कि है दम इस चस्के का?!

मैं तो अपने पाठकों से मुखातिब हूँ और उन्ही पर छोड़ता हूँ कि चस्का लगाने लायक है या नहीं। बताइएगा जरूर !!!!

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस : महिलाओं के संघर्ष और सशक्तिकरण का स्मरण

डॉ. लाखा राम
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) हरियाणा,
चण्डीगढ़।

नारी से परिवार, घर, समाज, देश और राष्ट्र बनता है, इसलिए नारी राष्ट्र निर्माण की आधारशिला व धरोहर है। हमारी सनातन संस्कृति में नारी को संस्कृति, संस्कारों और परंपराओं की संरक्षक के रूप में स्वीकार किया गया है जो सदैव मनसा, वाचा, कर्मणा अपने योगदान से राष्ट्र को उत्कृष्टता प्रदान करती है। सभ्यता, संस्कृति, संस्कार महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढी में हस्तांतरित होते हैं, इसलिए संतान को संस्कारवान बनाने में बड़ी भूमिका महिलाओं की होती है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। समाज में महिलाएं अनेक रूपों में अपना योगदान प्रदान करती है। मां के रूप में, पत्नी के रूप में, गृहणी के रूप में और अनेक स्नेहिल संबंधों के रूप में ये समाज को सुदृढ़ता प्रदान करती हैं।

भारत वर्ष की स्वर्णिम वैदिक संस्कृति पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो वह सदैव नारी शक्ति को वंदनीय, पूजनीय मानती आई है। हमारे ग्रंथों में कहा गया है कि जिस परिवार तथा राष्ट्र में नारियों का सम्मान होता है वहीं पर देवताओं का और दिव्य शक्तियों का निवास होता है और जहां पर महिला शक्ति का निरादर होता है वहां समस्त कार्य फलहीन हो जाते हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः।'

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पूर्ण रूप से एक नारी के संघर्ष और सशक्तिकरण की गाथा को प्रकट करता है। यह महिलाओं के अधिकारों, कर्तव्यों, उनकी प्रतिष्ठा को स्मरण करने, उनके प्रति सम्मान, श्रद्धा ज्ञापित करने का तथा उनकी उपलब्धियों, क्षमता, राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक तरक्की पर हर्षित होने का दिवस है। समाज में महिलाओं को बराबरी का हक दिलाने के साथ ही सभी क्षेत्रों में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को रोकने के मकसद से भी इस दिवस को मनाया जाता है। इस दिन महिलाओं के अधिकारों की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करने और उन्हें जागरूक करने के मकसद से कई कार्यक्रम और कैंपेन भी आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर पर महिलाओं द्वारा हासिल की गई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सफलताओं का जश्न मनाना जरूरी है, ताकि हर महिला में कुछ नया करने की संजीवनी भर जाए और उनमें नए पंख लग जाएं।

सर्वप्रथम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को मनाने की शुरुआत वर्ष 1908 में महिला मजदूर आदोलन में महिला जागरुकता दिवस मनाने की परंपरा से हुई थी। जब न्यूयार्क शहर में 15 हजार महिलाओं ने काम के घंटे कम करने, बेहतर वेतन और वोट देने की मांग के साथ विरोध प्रदर्शन किया था और अगले ही वर्ष 28 फरवरी

1909 में अमेरिकन सोशलिस्ट पार्टी के आह्वान पर अमेरिका के न्यूयार्क शहर में इसे मनाया गया था। 1910 में मार्क्सवादी कार्यकर्ता क्लारा जेटकिन नाम की एक जर्मन महिला ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बुनियाद रखी थी। 1910 में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन में महिलाओं का एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ और 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सुझाव दिया गया। 8 मार्च 1911 से पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है। पहला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 1911 को ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड में मनाया गया था, उसका शताब्दी समारोह 2011 में मनाया गया। 1913-14 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूसी महिलाओं द्वारा पहली बार शांति की स्थापना के लिए फरवरी माह के अंतिम रविवार को महिला दिवस मनाया गया। 1917 में सोवियत संघ ने इस दिन को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया। वैश्विक स्तर पर महिलाओं को सम्मानित करने एवं नारी सशक्तिकरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से हर वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने को मान्यता संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 8 मार्च 1975 को दी गई और तब से लेकर यह महिला दिवस महिलाओं की जागरूकता के लिए मनाया जाता रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने इसके लिए पहली बार थीम 1996 में चुनी थी, जिसका नाम था 'अतीत का जश्न, भविष्य के लिए योजना'। वर्ष 2024 के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम 'महिलाओं में निवेश करें, प्रगति में तेजी लाएं' है, तो वहीं पिछले वर्ष 2023 की थीम 'डिजिटऑलः लैंगिक समानता के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी' थी। यह थीम लैंगिक समानता हासिल करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भलाई में सुधार पर ध्यान

केंद्रित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। हर वर्ष महिला दिवस का विषय अलग होता है, पर उद्देश्य एक ही होता है कि दुनिया की सभी महिलाओं को आत्मसम्मान, समानता, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने को आजादी मिले। इस बार आर्थिक पक्ष पर बल दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनिया गुटेरेस का कहना है कि 2030 तक लक्षित 40 करोड रोजगार-सृजन में महिलाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

हमारे समाज में महिलाओ का एक बड़ा तबका आज भी सामाजिक बंधनों की बेडियों को पूरी तरह से तोड़ नहीं पाया है। यह भी सत्य है कि जब-जब कोई स्त्री अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तब-तब न जाने कितने रीति-रिवाजो, परंपराओं, पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है। उन्हें अर्थव्यवस्था में समान भागीदारी हासिल करने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। वहीं उच्च शिक्षा की बात करें तो बहुत सी लडकियां सिर्फ इसलिए उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है क्योंकि उनके परिवार वाले पढाई के लिए उन्हें घर से दूर नहीं भेजते हैं, जिसके चलते उनका अधिकतर समय घरेलू कामों में खर्च होता है और महिलाओ व पुरुषों के बीच असमानता का अंतराल बढ़ता चला जाता है। शिक्षा, रोजगार, वित्तीय सेवाओं और साक्षरता तक समान पहुंच के बिना, लैंगिक समानता को प्राप्त करना मुश्किल है।

आंकडों पर नजर डाले तो, साल 1951 में भारत की साक्षरता दर केवल 18.3 प्रतिशत थी जिसमे से महिलाओं की साक्षरता दर 9 फीसदी से भी कम थी। वहीं, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के डाटा के अनुसार साल 2021 में देश की औसत साक्षरता दर 77.70 प्रतिशत थी जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 84.70 प्रतिशत, जबकि महिलाओं की साक्षरता दर 70.30 प्रतिशत थी। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान में महिलाओं की साक्षरता की स्थिति तो और भी अधिक खराब है। हालांकि विश्व के कई देश हैं. जिनमें महिलाओं की साक्षरता दर शत-प्रतिशत है। उत्तर कोरिया इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसके अलावा पोलैंड, रूस और यूक्रेन में साक्षरता दर 99.7 प्रतिशत है। हमारे पड़ोसी देश चीन में यह दर 95.2 प्रतिशत है। लेकिन वैश्विक परिदृश्य में यह कहना गलत नहीं होगा कि आजादी के बाद से अब तक महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है लेकिन अभी भी स्थिति संतोषजनक नहीं है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करने वाले राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार साल 2015 में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के 3.29 लाख मामले, 2016 में 3.38 लाख, 2017 में 3.60 लाख और 2020 में 3.71 लाख मामले, वहीं वर्ष 2021 में ये आकड़ा बढ़कर 4.28 लाख हो गए, जिनमें से अधिकांश 31.8 फीसदी पति या रिश्तेदार द्वारा की गई हिंसा के, 7.40 फीसदी बलात्कार के, 17.66 फीसदी अपहरण के, 20.8 फीसदी महिलाओं को अपमानित करने के इरादे से की गई हिंसा के मामले शामिल हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2022 में महिला अपराध के सिलसिले में हर घंटे लगभग 51 मामले दर्ज किए गए। आंकड़ों के

मुताबिक प्रति एक लाख आबादी पर महिला अपराध की दर 66.4 फीसदी रिकॉर्ड की गई। ऐसे मामलों में आरोप पत्र दायर करने की दर 75.8 फीसदी रही। दहेज प्रथा आज भी जिंदा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, प्रत्येक घंटे एक महिला दहेज की बेदी पर बलि चढ़ जाती है और दो का बलात्कार होता है। 'इंडिया ह्यूमन डेवलपमेंट सर्वे' के अनुसार सिर्फ पांच प्रतिशत विवाह ही अंतर-जातीय हैं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर एसोचैम द्वारा जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि 32 से 58 वर्ष की 72 प्रतिशत कामकाजी महिलाएं अवसाद, पीठ दर्द, मधुमेह, हायपरटेंशन, उच्च कोलस्ट्रोल, हृदय एवं किडनी की बीमारियों से ग्रस्त पाई गई हैं। नब्बे फीसदी मामलों में इसका संबंध उनके महिला होने से ही है। यह सब पूरे समाज की व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है।

आज भी महिलाओ की अधिकांश समस्याओ का कारण आर्थिक रूप से पुरुष पर निर्भरता है। यह बेहद चिंताजनक है कि देश की कुल आबादी में 48 फीसदी महिलाएं हैं जिसमें से मात्र एक तिहाई महिलाएं रोजगार में संलग्न हैं। इसी वजह से भारत की जीडीपी में महिलाओं का योगदान केवल 18 फीसदी है। इसी तरह महिला श्रम शक्ति की भागीदारी हमारे पड़ोसी देश नेपाल मे 81.4 प्रतिशत, वियतनाम में 72.73 प्रतिशत, सिंगापुर में 61.97, यू.के. में 58.09, यूएसए में 56.76 प्रतिशत है, जबकि भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है फिर भी यह दर केवल 20.7 प्रतिशत है। वहीं न्यायालयों में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि देश के सर्वोच्च न्यायालय सहित उच्च न्यायालयों में मौजूद न्यायाधीशों में महज 11 प्रतिशत महिलाएं हैं। आर्थिक सशक्तिकरण के बिना हम समतापूर्वक, समावेशी और न्यायसगत भारत का निर्माण नहीं कर सकते। खेल, व्यवसाय से लेकर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तक, यानी जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं ने साबित किया है कि भारत की प्रगति मे उनका योगदान बेहद महत्वपूर्ण है। उनकी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए उनका वित्तीय सशक्तिकरण आवश्यक है, ताकि वे देश के विकास को प्रगतिशील और समावेशी बनाने में बदलाव की वाहक बन सके। भारत सरकार ने 21 मार्च 2001 को महिला सशक्तिकरण हेतु अपनी राष्ट्रीय नीति का गठन किया और वर्ष 2001 को भारत सरकार दवारा महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया गया था।

यह सही है कि बहुत कुछ बदला है, पर काफी कुछ बदलना अभी शेष है। भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। भारतीय महिला जो सदैव पिता, पति, पुत्र पर आश्रित थी, आज स्वयं सक्षम हो गई है। महिला अब घर में कैद नहीं रह गई है, बल्कि घर से बाहर समाज के कर्तव्य निभाने के लिए आगे भी बढ आई है। बीते दशकों में शिक्षा, रोजगार तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता ने महिलाओं को सशक्त बनाया है और वह आर्थिक स्वावलंबन की ओर बढ़ रही है। महिलाएं दिन-प्रतिदिन अपनी लगन, मेहनत एवं उत्कृष्ट कार्यों से राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं। मौजूदा दौर में महिलाएं नए भारत के निर्माण की प्रमुख कड़ी हैं। यदि महिलाओं को पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी के अवसर प्रदान किए जाएं, तो अन्य महिलाएं भी गीता गोपीनाथ, इंद्रा नुई,

किरण मजूमदार शॉ की तरह सशक्त होंगी, साथ ही देश भी आर्थिक मोर्चे पर तेजी से प्रगति करेगा। आज महिलाएं घर की चारदीवारी से निकलकर देश-प्रदेश की बागडोर संभाल रही हैं। उदाहरण के तौर पर वित मंत्री निर्मला सीतारमण, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, सोनिया गांधी, सुमित्रा महाजन, ममता बनर्जी, स्मृति ईरानी, वसुंधरा राजे सिंधिया, मायावती, आनंदीबेन पटेल आदि हैं। लेकिन देश में महिलाओं की आबादी के अनुपात में राजनीति में संख्या अभी भी काफी कम है। भारतीय संसद में केवल 14 फीसदी महिलाएं है. जबकि संसद में महिलाओं की वैश्विक औसत भागीदारी 25 फीसदी से ज्यादा है। देश की पहली संसद में जहां 24 महिला सांसद थीं, वहीं वर्तमान में 78 हैं। अब तो भारत में संसद ने भी महिलाओं के लिये लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पारित कर दिया है। इससे आने वाले समय में भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जायेगी।

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था, लेकिन इसमें गिरावट मध्ययुगीन काल के दौरान आई जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक सामाजिक जिंदगी का हिस्सा बन गए। इन परिस्थितियों के बावजूद कुछ महिलाओं ने राजनीति, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में सफलता हासिल की थी। आधुनिक भारत में महिलाएं न केवल राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं, बल्कि गांव में भी आज महिलाएं पंच, सरपंच, प्रधान, मुखिया के पद पर काम कर रही हैं तथा नए युग की पढ़ी-लिखी लड़कियां भी इसमें शामिल हो रही हैं। राष्ट्र की प्रगति के लिए महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष आकर आगे बढ़ने की जरूरत है।

आजादी के बाद से अब तक महिलाओं ने भारत में विभिन्न क्षेत्रों में एक लंबा रास्ता तय किया है, परंतु अभी भी मंजिल मीलों दूर है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करें तो यहां की महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कधे से कंधा मिला काम कर रही हैं। महिलाएं देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा विकास में भी बराबर की भागीदार हैं। भारतीय महिलाएं ऊर्जा, दूरदर्शिता, उत्साह, धैर्य और प्रतिबद्धता की प्रतिमूर्ति हैं। वर्तमान समय में नारी ने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। आज हर क्षेत्र में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। पत्रकारिता, विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, शिक्षा, रक्षा इन सभी क्षेत्रों में आज महिलाएं पूर्ण रूप से तत्पर होकर खड़ी हैं। अपनी योग्यता के नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए आज भारतवर्ष में जल, थल और अंतरिक्ष सब जगह अपनी सेवाएं दे रही है। भले ही आज हम यह कहकर अपनी पीठ थपथपा लें कि आजादी के 77 सालों में हमारी महिलाओं की उपलब्धियां चांद को छू रही हैं पर समाज के नजरिए में ज्यादा बदलाव नहीं आया। महिलाएं आज आसमान में हवाई जहाज और फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं। आज विश्व में 12 फीसदी, मगर अधिकतम महिला पायलट भारत में हैं। विकसित देशों से भी कहीं अधिक। ओलंपिक में पदक जीत रही हैं, बड़ी-बड़ी कंपनियां चला रही है या प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बनकर देश की बागडोर संभाल रही हैं। लेकिन व्यावहारिक तौर पर यह संख्या महिलाओं की आबादी

का अंशमात्र ही है। हमें अपने घर की बच्चियों को पंख देने चाहिए। उन्हें उड़ने की आजादी देनी चाहिए। वे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनें और उन्हें अपने जीवन के निर्णय लेने का अधिकार हो।

भारत में देखें तो अब महिलाएं तमाम क्षेत्रों में इस पारंपरिक नजरिये को ध्वस्त कर रही हैं कि कुछ कार्य केवल पुरुष ही कर सकते हैं। इसके ज्वलंत उदाहरण हैं- विश्व के सबसे ऊंचे युद्धस्थल सियाचीन में पहली बार महिला डॉक्टर का नियुक्त होना, आईएनएस त्रिकूट युद्धपोत की कमांड महिला को सौंपना, नेवी में एक हजार अग्निवीर महिलाएं, जो सबमरीन में भी कार्य करेंगी, आईआईटी, मद्रास के जंजीबार कैंपस की निदेशक महिला को बनाना. 75वें गणतंत्र दिवस समारोह में स्क्वाड्रन लीडर तूलिका रानी को विशिष्ट अतिथि बनाना, इस दौरान महिलाओं की मोटरसाइकिल टीम द्वारा अद्भुत करतब दिखाना आदि।

हालांकि, आम व्यक्ति के नजरिए को बदलना भी महत्वपूर्ण है। अपने घर परिवार से ही बदलाव लाना होगा। न दहेज देना है, न लेना है, लड़कियों को अपने पैरो पर खड़ा करना है, उन्हें निर्णय लेने की आजादी देनी है, लड़के- लड़कियों में फर्क खत्म करना है, बचपन से लड़कियों के प्रति लड़को की मानसिकता सकारात्मक रूप से गढ़नी है, और लड़कियों को इस काबिल बनाना है कि वे अन्याय, हिंसा आदि के विरुद्ध मुखर हो सकें। सरकारी नीतियां व नियमों को अमलीजामा हमें अपने घर और मुहल्ले में ही पहनाना है।

आज हमारे देश में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता के प्रावधान मौजूद है, बस उत्तराधिकार, शादी, तलाक और बच्चों के संरक्षण के मामले में सभी समुदायों के अपने-अपने कानून हैं। ये कानून महिलाओं को वांछित अधिकार नहीं देते। आजादी के बाद से महिलाएं लगातार चुनौती देती रही हैं। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कई मौकों पर समान नागरिक संहिता की वकालत की है। 1985 में शाहबानो के केस में माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि यह दुःख की बात है कि समान नागरिक संहिता से संबंधित हमारे संविधान का अनुच्छेद 44 मृत होकर रह गया है। इसके बाद 1995 में सरला मुद्गल केस में भी माननीय सुप्रीम कोर्ट ने पूछा था कि संविधान के अनुच्छेद 44 के लिए संविधान निर्माताओं की इच्छा को पूरा करने में सरकार को अभी कितना समय लगेगा? वर्ष 2003 में जान बलवतम केस में कोर्ट ने फिर कहा कि यह दुःख की बात है कि संविधान के अनुच्छेद 44 को अभी तक लागू नहीं किया गया। 2017 में भी शायरा बानो केस के समय अदालत में यह मुद्दा उठा था। जब सरकारें समान नागरिक संहिता के मसौदे पर बहस करें तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विचार-विमर्श में सभी समुदाय की महिलाओं की भागीदारी और लैंगिक समानता का नजरिया उसके केंद्र में हो। इससे ही महिलाओं के लिए समानता की लड़ाई और प्रभावी हो सकेगी। साथ ही सरकारों और सामुदायिक नेताओं पर भी दबाव पड़ेगा कि वे महिला अधिकारों की बात को स्वीकार करें। किसी भी धार्मिक संदर्भ को देखे बिना मानवीय आधार पर न्याय होना चाहिए और सबको न्याय मिलना चाहिए। उम्मीद की जानी चाहिए कि उत्तराखंड की तरह ही देश के अन्य राज्य समान नागरिक संहिता का मसौदा तैयार करते समय महिलाओं की आवाज को अनसुना नहीं करेंगे।

भारत में वर्षों से महिला सुरक्षा से जुड़े कई कानून बने हैं। इसमें हिंदू विडो रीमैरिज एक्ट 1856, इंडियन पीनल कोड 1960, मैटरनिटी बेनिफिट एक्ट 1861, क्रिश्चियन मैरिज एक्ट 1872, मैरिड वीमेन प्रॉपर्टी एक्ट 1874, चाइल्ड मैरिज एक्ट 1929, स्पेशल मैरिज एक्ट 1954, हिंदू मैरिज एक्ट 1955, फॉरेन मैरिज एक्ट 1969, इंडियन डाइवोर्स एक्ट 1969, मुस्लिम वुमन प्रोटेक्शन एक्ट 1986, नेशनल कमीशन फॉर वुमन एक्ट 1990, सेक्सुअल हैरेसमेंट ऑफ वुमन एट वर्किंग प्लेस एक्ट 2013 आदि। इसके अलावा 7 मई 2015 को लोकसभा ने और 22 सितंबर 2015 को राज्यसभा ने जुवेनाइल जस्टिस बिल में भी बदलाव किया है। इसके अंतर्गत यदि कोई 16 से 18 साल का किशोर महिलाओं के प्रति जघन्य अपराध में लिप्त पाया जाता है तो उसे भी कठोर सजा का प्रावधान है।

महिला शक्ति को समृद्ध बनाए बिना कोई भी राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। आज हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि महिला सशक्तीकरण महज एक नारा नहीं है, बल्कि इसे हासिल करने से विभिन्न आर्थिक-सामाजिक पहलुओं पर ठोस परिणाम सामने आते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वित्तीय रूप से स्वतंत्र और सशक्त महिलाएं बदलाव का वाहक बनती है और समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा का काम करती हैं। वे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं एवं मानदंडों को चुनौती देने, पुरुषों की बराबरी करने, उनकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति में सुधार लाने और एक समावेशी समाज बनाने के लिए परिवार और समुदाय की अन्य महिलाओ के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करती हैं। कुल मिलाकर, महिलाओं को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें सशक्त बनाना जरूरी है, ताकि वे भारत को पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने में अग्रणी ताकत के रूप में उभर सकें।

देश में महिलाओं के प्रति खराब होते माहौल को बदलने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु हर आम आदमी की भी है। हम सभी को आगे आकर महिला सुरक्षा की लडाई में महिलाओं का साथ देना होगा, तभी देश की मातृशक्ति सर उठाकर शान से चल सकेगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, किसी भी समाज में उपजी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक समस्याओं का निराकरण महिलाओं की साझेदारी के बिना नहीं किया जा सकता है। अतः समाज की महिलाओं के प्रति सम्मान और उनकी सुरक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, किसी भी समाज में उपजी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक समस्याओं का निराकरण महिलाओं की साझेदारी के बिना नहीं किया जा सकता है। अतः समाज को महिलाओं के प्रति सम्मान और उनकी सुरक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा पर फोकस करती राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह कहती है कि किसी भी बच्चे को उसकी पृष्ठभूमि और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के कारण शैक्षिक अवसर के मामले में पीछे नहीं छोड़ा जाना चाहिए। इसमें सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचितों, जैसे महिलाओं और ट्रांसजेंडर की चिंताओं को ध्यान में रखा गया है। शिक्षा के साथ महिलाओं को अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने की जरूरत है। अगर महिला स्वस्थ है तो वह प्रसन्न, सक्रिय, सृजनशील, समझदार व योग्य महसूस करते हुए परिवार, समाज और देश को उन्नत कर सकती है।

शिक्षक दिवस

• **श्रीमति समन्ना**
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा परीक्षा), कर्नाटक, बंगलौर

पूरे भारत में शिक्षक दिवस प्रत्येक वर्ष पाँच सितम्बर को मनाया जाता है। अपने शिक्षकों को सम्मान देने के लिए विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक दिवस मनाया जाता है। शिक्षक और छात्रों के बीच के रिश्तों की गरिमा के सम्मान के लिए शिक्षक दिवस एक बड़ा अवसर है। देश में रहने वाले नागरिकों के भविष्य निर्माण के द्वारा शिक्षक राष्ट्र-निर्माण का कार्य करते हैं। शिक्षक हमारे व्यक्तित्व, विश्वास और कौशल स्तर को भी सुधारते हैं।

कबीरदास ने गुरु की महिमा पर लिखा है -

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े करके लागू पाय,
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय"।

अध्यापक को प्राचीन संस्कृति में गुरु नाम से संबोधित किया जाता है। गुरु शब्द दो अक्षर गु+रु से बना है। 'गु' अर्थात, अंधेरे को .... दूर करनेवाला। अर्थात, गुरु एक महान व्यक्ति है जो अंधकार रूपी अज्ञान को हटाकर प्रकाश रूपी ज्ञान को प्रदान करता है। गुरु की महिमा पर वेदमंत्र इस प्रकार है।

1. गुरुर्ब्रहमा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः। गुरुर्साक्षात परब्रहमा तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

2. ॐ वेदाहि गुरु देवाय विद्महे परम गुरुवे धीमहि तन्नौः गुरुः प्रचोदयात्।।

गुरु का स्थान मानव जीवन में भगवान तथा माता-पिता से भी ऊपर है। महान, सन्त कबीर इस विषय पर लिखते हैं।

"सब धरती कागज़ करूँ, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।

5 सितम्बर, हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, का जन्मदिवस है। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम उप-राष्ट्रपति थे, उन्होंने सन् 1952 से 1962 तक उप-राष्ट्रपति के रूप में देश की सेवा की। इसके पश्चात् 1962 से 1967 तक उन्होंने देश के द्वितीय राष्ट्रपति के पद पर सेवा की।

डा. राधाकृष्णन, शिक्षकों का सम्मान करते थे। राजनीति में आने से पहले उन्होंने कलकत्ता

विश्वविद्यालय, मैसूर विश्वविद्यालय तथा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों में पढाया था। अपनी वृत्ति पर उन्हें अपार श्रद्धा और निष्ठा थी, उनके छात्र भी राधाकृष्णन के शिक्षण को बहुत पसन्द करते थे।

उनका मानना था कि शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो युवाओं को देश के भविष्य के रूप में तैयार करता है। यही कारण था कि उन्होंने प्रोफेसर के दायित्व को लगन से निभाया तथा अपने छात्रों को सदैव अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया। जब छात्रों ने राष्ट्रपति राधाकृष्णन, के जन्म दिवस को मनाने की इच्छा प्रकट की तब राष्ट्रपति ने कहा कि उन्हें इस बात की अधिक प्रसन्नता होगी यदि पाँच सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाय। तबसे हर साल पाँच सितम्बर को श्रद्धा तथा गौरव से भारत में शिक्षक दिवस मनाया जा रहा है। प्रथम शिक्षक दिवस 1962 में भारत में मनाया गया। इस अवसर पर उत्तम शिक्षको को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार वितरित होते हैं। "विश्व शिक्षक - दिवस" हर साल पाँच अक्तूबर को मनाया जाता है।

"गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोटा
अन्तर हाथ सहार है, वाहर बाहै चोट"।

कबीरदास जी के इस दोहे का अर्थ यह है कि शिक्षक उस कुम्हार की तरह है जो अपने छात्र रूपी घड़े की कमियों को दूर करने के लिए भीतर से हाथ का सहारा देकर बाहर से थापी से चोट करता है। ठीक इसी तरह शिक्षक भी कभी अपने छात्रों पर गुस्सा करके भी उनके चरित्र का निर्माण करते हैं। उन्हें अच्छा मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यही वजह है कि शिक्षक और शिक्षक दिवस का एक अलग ही महत्व है।

डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन, कहा करते थे कि, पुस्तकें वह साधन है, जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के साथ पुल बनाने का कार्य कर सकते हैं। शिक्षक दिवस के दिन छात्रगण अपने शिक्षकों के प्रति आदर और समर्पण की भावना प्रकट करते हैं। इस दिन हमें यह याद दिलाया जाता है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दाता होते हैं। बल्कि वे हमारे मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत भी होते हैं।

शिक्षक दिवस का महत्व यह भी है कि यह हमें याद दिलाता है कि शिक्षा हमारे समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षकों के बिना समाज की उन्नति नहीं हो सकती। शिक्षक एक न केवल हमें पढ़ाते हैं। बल्कि हमारे चरित्र का निर्माण भी करते हैं। शिक्षक दिवस के दिन माध्यम से, शिक्षकों के प्रेरणास्पद योगदान के लिए उनका सम्मान किया जाता है। शिक्षक दिवस, हमें शिक्षा की महिमा को समझाने का मौका है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा ही हमारे समाज के उत्थान की कुंजी है, और शिक्षक ही इस कुंजी के धारक होते हैं। उनका योगदान, हमारे देश के भविष्य को बनाने और सुधारने में महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक दिवस मनाने के द्वारा हम शिक्षकों को मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं। उनका काम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है इसलिए कि वे नई पीढ़ियों को ज्ञान और आदर्शों के साथ संजीवनी शक्ति प्रदान करते हैं। शिक्षकों के बिना कोई भी समाज या देश प्रगति नहीं कर सकता। इसलिए हमें उनके प्रति गहरा समर्पण और आभार दिखाना

चाहिए। शिक्षा एक पूर्णता की ओर की पहल है और शिक्षण हमें उसे पूर्णता की ओर ले जाते हैं। शिक्षक दिवस के आयोजन में विशेष कार्यक्रम होते हैं और आदर्श शिक्षकों का सम्मान होता है।

गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है। शिक्षक उस माली के समान है जो एक बगीचे को अलग अलग रूप रंगों के फूलों से सजाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो गुरु-शिष्य की परंपरा कहीं ना कहीं कलंकित हो रही है। अतः विद्यार्थी और शिक्षक दोनों का दायित्व है कि वे इस महान परंपरा को बेहतर ढंग से समझें और एक समाज के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान करें।

हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री अब्दुल कलाम जी ने कहा है अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है, तो मेरा दृढ़ता पूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह काम कर सकते हैं- पिता, माता और गुरु। शिक्षक हर व्यक्ति के जीवन की रीढ़ होते हैं। शिक्षक ही विद्यार्थियों में जीवन का नया अर्थ सिखाता है। शिक्षक दिवस को एक महत्वपूर्ण दिवस के रूप में स्वीकार किया जाना, इस महान पेशे को समाज में सम्मान देना है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कहीं देर न हो जाए

• अंकित कुमार ठाकुर
लेखाकार, प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा , चंडीगढ़

एक शादीशुदा स्त्री जो एक बेटी है, एक पत्नी है, एक माँ है और बेहद ही कुशल एवं कामयाब गृहिणी भी है। उस औरत की आँखों में कभी झांक कर देखा है क्या आपने?

अगर देखना चाहें कभी, तो दिखेगा कि कैसे वो औरत हर रोज, हर पहर केवल अपने घर, अपने परिवार की सलामती के सपने देखती रहती है। कैसे, उसके सपने में वो कभी अपनी बेटी को सफलता के उड़ान भरते देखती है, कभी अपने नन्हे से राजकुमार को बड़े होकर हीरो बनते हुए देखती है तो कभी अपने हैरान-परेशान से रहने वाले पति की खुशियों के लौटने के सपने देखती रहती है। कैसे वो अपने बूढ़े सास-ससुर को सारी वास्तविक सुख प्राप्त कराकर जीते- जी स्वर्ग का अहसास करा देने के सपने देखती है। अगर देखना चाहें कभी, तो दिखेगा कि कैसे वो औरत अपने खुद के सपने को मारकर दूसरों के सपने पूरे करने के सपने देखती है। या यूँ कहें, कि वक्त और हालात उसे अपने सपनों को मारकर दूसरों के सपनों को संजोने के हुनर बख्श ही जाते हैं।

मगर क्या हो, गर ऐसी ही किसी औरत का जो अपने लिए सपने देखने भूल चुकी हो, उसके लिए हम और आप उसके हिस्से के सपने देखें? क्या हो अगर आप अपनी माँ की पुरानी डायरी के पन्ने पलट कर उसकी अधूरी ख्वाहिशें, उसके टूटे हुए सपनों को एक बार फिर जिन्दा कर दें? क्या हो अगर हम अपनी बीवी को उसके भी सपने देखने का मौका दें ? क्या हो जो एक दिन चाय-नाश्ते के वक्त बातचीत का मुद्दा ये न हो की आने वाले वक्त में आप क्या करना चाहते हैं या आप क्या बनना चाहते हैं बल्कि ये हो कि आपकी माँ या बीवी या भाभी या चाची अपने भविष्य को लेकर क्या सोचती हैं और आगे क्या करना चाहती हैं ?

क्या हो जो हफ्ते में एक दिन हम उस इंसान की भी चिंता करें जो पूरी जिन्दगी सिर्फ और सिर्फ हमारी चिंता करती आई है? क्या हम उस उस देवस्वरूपा, अद्वितीय व्यक्तित्व की खुशियों के लिए कुछ विशेष नहीं कर सकते ?

शायद, आपको मालूम न हो कि आपकी तरह आपकी माँ के भी कुछ शौक रहे होंगे। आपकी बीवी की भी कुछ चाहतें होंगी। आपके घर की औरतों के भी कुछ सपने, कुछ अरमान होंगे। शायद, आपकी तरह उन्हें भी प्रेमचंद, निराला, शरत या चेतन को पढने का शौक रहा होगा कभी शायद, आपकी तरह ही उनका भी कोई मनपसंद पकवान रहा होगा जिसे खाए हुए उन्हें एक लम्बा वक्त बीत चुका होगा। शायद, आपकी तरह उनको भी सप्ताहांत में घूमने - फिरने का मन करता होगा। शायद, उनको भी लगता होगा कभी-कभी कि हम उनके पास बैठें और उनसे उनके दिन के बारे में पूछे कि उनका दिन कैसा बीता?

"तो, क्यों न हम सब, चाहे वो कोई बेटी हो या बेटा हो या फिर पति हो, एक बार उन आँखों में झांक कर देखने की कोशिश करें जिन्होंने हमें दुनिया देखना सिखाया। जिन्होंने हमारी आपकी खुशियों के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। एक बार को क्यों न अपने बारे में सोचना छोड़ कर उनके बारे में सोचें, जिनके पास खुद के बारे में सोचने का वक्त ही नहीं रहता।

क्योंकि अक्सर जब हम लोगों के बारे में सोचना शुरू करते हैं, तब तक वे लोग हमें छोड़ कर जा चुके होते हैं या हमसे बहुत दूर चले गए होते हैं। अक्सर हमसे बहुत देर हो जाती है। कहते हैं किसी के चले जाने के कुछ समय बाद, सब कुछ सामान्य हो जाता है, सब कुछ पहले की तरह चलने लगता है, लेकिन, मैं ऐसा नहीं मानता। पूरी दुनिया में सब कुछ पहले जैसा हो जाता है, सिवाय उस एक खाली कोने के जहाँ अब भी उस व्यक्ति का इंतजार छिपा होता है, वो पछतावा बरक़रार रहता है, जो हम करना चाहते थे और समय रहते कर नहीं पाए।

तो क्यों न हम, इस बार थोडा जल्दी अपनों को समझ कर देखें। क्यों न थोडा जल्दी हम उन्हें भी उनकी खोयी हुई खुशियाँ उन्हें लौटाएं। क्यों न थोडा जल्दी उनके भूले हुए सपनों को फिर से जीवित करें। क्यों न थोडा जल्दी उन्हें यह अहसास करा दें कि वे वास्तव में भगवान द्वारा इस धरा पर भेजी गयी ब्रह्माण्ड की सबसे खूबसूरत संरचना है, इससे पहले कहीं देर न हो जाए।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

शिमला : एक यादगार सफ़र

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली

बच्चों की गर्मी की छुट्टियाँ वर्ष का सबसे अच्छा व आरामदायक समय होता है और न केवल परिवार के सदस्य बल्कि मैं भी हमेशा किसी न किसी पर्यटक स्थल में परिवार के साथ समय बिताने के लिए उन छुट्टियों का इंतजार करता हूँ। पिछली मई के किसी गुरुवार के दिन , कार्यालय में भोजनवकाश के समय मैं इस बारे में सोच ही रहा था कि इस बार कौन सी जगह जाया जाए कि तभी अचानक मेरे नवविवाहित सहकर्मी आ गए तो उनसे किसी ने परिहास में उनके शिमला हनीमून की बातें छेड़ दीं। शर्माते शर्माते भी वे शिमला के बारे में बहुत कुछ बता गए। भोजन करते हुए ही मैंने तभी ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो , इन छुट्टियों में इस बार शिमला में बसेरा जमाना है। घर आने पर अपनी पत्नी व बच्चों से इस विषय पर चर्चा की। सभी शिमला जाने के लिए उत्साहित थे। वैसे कालका तक ट्रेन का विकल्प भी हमारे पास था परंतु हनीमून वाले सहकर्मी ने नज़ारे देखने के लिए सड़क मार्ग से यात्रा का सुझाव दिया। हमने एक प्राइवेट टैक्सी बुक की व शिमला के लिए अगले दिन रवाना हो गए।

मन में अनेकों विचार लिए कि शिमला कैसा होगा, वहाँ की ऊंची ऊंची पहाड़ियाँ व मनमोहक दृश्य मन को कितना आनंदित करेंगे इस उधेड़-बुन में कब शिमला आ गया पता ही नहीं चला। पूरे रास्ते भर मेरे मन में न केवल शिमला की खूबसूरती के बारे में कल्पना विचरण कर रही थी बल्कि मन में वहाँ का इतिहास जानने की भी जागरूकता थी। उसी सफर में मैंने श्याम लाल शर्मा का काव्य-संग्रह जो शिमला के अद्भुत नैसर्गिक सौंदर्य का काव्यात्मक चित्रण है "शिमला तो शिमला है" , का भी पठन किया। संग्रह की रचनाएं प्रचुर प्राकृतिक परिवेश से सजी 'पहाड़ों की रानी' कही जाने वाली शिमला नगरी की अतुलनीय छवि का मार्मिक वर्णन कर रही थीं। इसके पठन से पाठक को ऐसा आभास होता है जैसे वह इस स्थल पर घूम-घूमकर इसके प्राकृतिक परिवेश एवं दिव्य आकर्षण का आनंद ले रहा हो। पर अचानक हमारे चेहरे का रंग उड़ता चला गया।

शिमला भ्रमण की योजना जोश जोश में बनी थी और सभी को पता है कि इंसान जोश में होश खो बैठता है। यही हमारे साथ हुआ। ठहरने की व्यवस्था किए बिना हम चल पड़े थे। शुक्रवार की रात का सफर शनिवार की सुबह पूरा होने वाला था। शनिवार व रविवार को केंद्र सरकार के सभी कार्यालय बंद रहते हैं अतः किसी से गेस्ट हाउस के लिए कहने सुनने का भी मौका नहीं रह गया था। गर्मियों का मौसम था इसलिए सारे होटल क्षमता से ज्यादा भरे थे तो कई होटलों के स्वागत कक्ष से ही हमें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। कई जगह तो ऐसा भी हुआ कि हम स्वागत कक्ष का भी मुंह न देखने पाए और कंबल ओढ़े होटल के छोकरे ने दूर से ही हाथों को नकारात्मक ढंग से हिलाते हुए होटल के बाहर की भीड़ नहीं बनने दिया।

बहुत लोगों से कहने सुनने और पुराने अहसानों की याद दिलाने के बाद दोपहर 12 बजे तक कसूम्प्टी के निकट एक "हिलटाप" नामक होटल में सर और पत्नी से मुंह छिपाने की जगह मिल ही गई। इस होटल के नाम पर मत जाएँ क्योंकि आपको ऐसा लग सकता है कि यह किसी पहाड़ी के शिखर पर स्थित होगा। पर यह तो अगल बगल के होटलों से भी नीचे स्थित था। और शिखर से इसका सिर्फ यही नाता था कि इस होटल में ठहरने से लेकर खाने और "पीने" तक की चीजों के दाम शिखर पर ही थे।

अब हमने घूमने पर फोकस किया। घूमने से पहले यदि उस स्थान की जानकारी ले ली जाए तो आधा काम हल्का हो जाता है। वैसे भी आधा दिन निकल ही गया था तो हमने सोचा क्यों न यहाँ के बारे में जानकारी ही इकट्ठी कर ली जाए। किताबी जानकारी से लाख गुनी अच्छी जानकारी वह होती है जो स्थानीय लोग बताते हैं। होटल के वेटर से बात करने की कोशिश की तो पता चला कि शायद वह "गाइड" बनने का भी पैसा लेगा तो उसे उसका ही काम करने दिया और हम टहलने के लिए चार मंजिल नीचे उतर आए। कुछ गलियों को पार करने के बाद मुख्य सड़क पर आए तो सामने एक चाय की टपरी दिखाई दी जहां कुछ लोग कंबल ओढ़े बतियाते दिखे। पहले तो डर लगा कि कहीं ये लोग भी बातें करने के पैसे न लें पर फिर सोचा कि नहीं, हम तो पहले चाय पिएंगे और उसी दौरान बातें करते रहेंगे। और इस प्रकार हम फ्री में बातें कर लेंगे। अपनी चालाकी पर बहुत गर्व हुआ पर फिर यह भी समझ में आया कि क्यों पहाड़ी लोग, मैदानी लोगों की चालाकियों के कारण उन्हें अपने यहाँ बसने नहीं देते। चाय की चुस्कियों के साथ टपरी पर मौजूद लोगों के साथ बातों का सिलसिला चल पड़ा। उनसे टुकड़े टुकड़े में हासिल हुई मालूमात को नीचे आपकी नज़र किया जा रहा है, आलिम फाजिल हज़रत नोश फरमाएँ....

शिमला एक झलक :

उत्तर भारत में हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा नगर व राजधानी शिमला न केवल अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है वरन इसका इतिहास भी बड़ा मनोरंजक

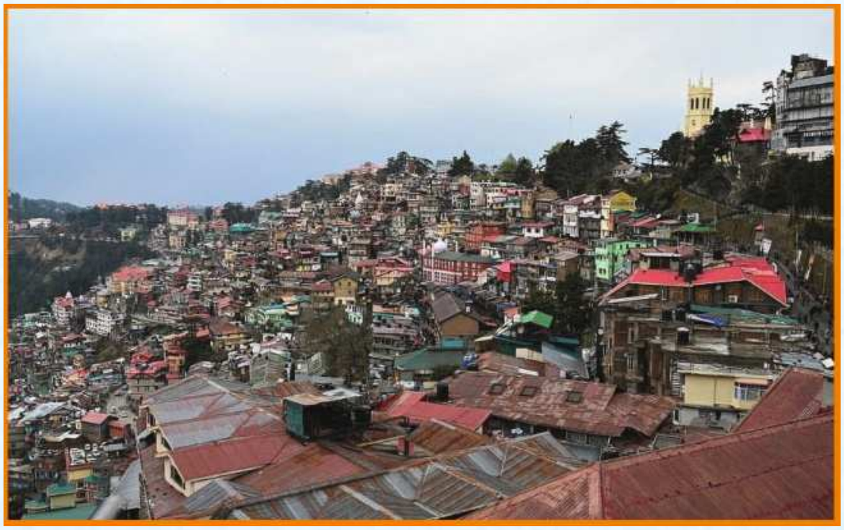

है। शिमला को पहाड़ों की रानी कहा जाता है। यह न केवल भारतीयों को वरन विदेशियों को भी आकर्षित करती है व बड़ी संख्या में लोग यहाँ घूमने आते हैं। सभी प्राकृतिक उपहार आशीर्वाद के रूप में शिमला को मिले हैं। यह स्थान चारों ओर से हरे भरे पहाड़ों और हिमाच्छादित चोटियों से घिरा हुआ है। औपनिवेशिक युग के दौरान की संरचनाओं एवं यहाँ की शांत पहाड़ियों की आभा इसे अन्य पहाडियों से बहुत अलग बनाती है। शिमला का नाम श्यामला देवी जो महाकाली का एक रूप हैं, के नाम पर पड़ा। शिमला सात पहाड़ियों की

चोटी पर बसा हुआ है। हालांकि शिमला धीरे- धीरे विकसित होने के बाद अन्य दिशाओं में भी फैलता गया लेकिन शुरुआत इन सात पहाड़ियों से हुई जिसमें इनवर्म हिल, ऑब्जर्वेटरी हिल, प्रॉस्पेक्ट हिल, समर हिल, बैंटोनी हिल, एलिसियम हिल और जाखू हिल हैं। शिमला में उच्चतम बिंदु जाखू पहाड़ी है, जो 2,454 मीटर (8,051 फीट) की ऊँचाई पर है। यहाँ एक प्रसिद्ध हनुमान मंदिर है।

शिमला दक्षिण-पूर्व में उत्तराखंड राज्य, उत्तर में मण्डी और कुल्लु, पूर्व में किन्नौर, दक्षिण में सिरमौर और पश्चिम में सोलन जिलों से घिरा हुआ है। 1864 में, शिमला को भारत में ब्रिटिश राज की ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया गया था। साथ-साथ यह ब्रिटिश भारतीय सेना के कमांडर-इन-चीफ का मुख्यालय और 1876 के बाद से पंजाब प्रान्त की भी ग्रीष्ममकालीन राजधानी थी। स्वतंत्रता के बाद, शिमला नगर पूर्वी पंजाब राज्य की राजधानी बन गया और बाद में 1948 में हिमाचल प्रदेश के गठन पर इसे राज्य की राजधानी घोषित कर दिया गया। एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल, शिमला को अक्सर "पहाड़ों की रानी" के नाम से भी जाना जाता है। यह राज्य का प्रमुख वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक केंद्र है। मुख्य शहर के समीप कोई भी जल निकाय स्थित नहीं हैं तथा निकटतम नदी सतलुज है, जो शहर से लगभग 21 कि०मी० (13 मील) दूर बहती है। गिरि और पब्बर (दोनों यमुना की सहायक नदियाँ) अन्य नदियाँ हैं, जो शिमला जिले से होकर बहती हैं। शहर और उसके आसपास में मुख्यतः चीड, देवदार, बाँज और बुरांश के वन पाए जाते हैं। शिमला अंग्रेजों को इतनी पसंद थी कि इन्होने अपने शासन काल में इसे ग्रीष्मकालीन राजधानी बना दिया था।

1815 से पहले क्षेत्र में कुछ बस्तियों के विवरण दर्ज हैं, जब ब्रिटिश सेना ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया था। हिमालय के घने जंगलों में स्थित इस क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों ने शहर की स्थापना के लिए अंग्रेजों को आकर्षित किया। ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में, शिमला ने 1914 के शिमला समझौते और 1945 के शिमला सम्मेलन सहित कई महत्वपूर्ण राजनीतिक बैठकों की मेजबानी की। स्वतंत्रता के बाद, 28 रियासतों के एकीकरण के परिणामस्वरूप 1948 में हिमाचल प्रदेश राज्य अस्तित्व में आया। स्वतंत्रता के बाद भी, शहर एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र बना रहा, और इसने 1972 के शिमला समझौते की मेजबानी की। हिमाचल प्रदेश राज्य के पुनर्गठन के बाद, मौजूदा महासू जिले का नाम शिमला रखा गया।

शिमला में अनेकों इमारतें स्थित हैं, जिनमें औपनिवेशिक युग के समय की ट्यूडरबेटन और नव-गॉथिक वास्तुकला के साथ-साथ कई मन्दिर और चर्च शामिल हैं। ये ब्रिटिशकालीन इमारतें तथा चर्च और शहर का प्राकृतिक वातावरण बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते है। शहर के प्रमुख आकर्षणों में वाइसराय लाज, क्राइस्ट चर्च, जाखू मंदिर , माल रोड और रिज शामिल हैं, जो सभी एक साथ मिलकर शहर के केंद्र का निर्माण करते हैं। यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित ब्रिटिश-निर्मित कालका-शिमला रेलवे लाइन भी एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। एक प्रमुख पर्यटन केंद्र होने के अलावा, यह शहर कई कॉलेजों और शोध संस्थानों के साथ एक शैक्षणिक केंद्र भी है।

इस जानकारी के बाद टपरी के लोगों के बाप दादाओं की बातें शुरू हो गईं। हिंदुस्तान के आदमी की एक खासियत यह भी है कि वह दाएँ से बाएँ , ऊपर से नीचे , आगे से पीछे ....सौ फीसदी खानदानी होता है। खुद ने चाहे भले कड़ुआ (सरसों का) तेल भी न सूंघा हो पर बाप दादाओं नें देशी घी में जरूर डुबकियाँ लगाई होंगी। टपरी के लोगों ने भी खुद को इतना बड़ा खानदानी साबित कर दिया कि यह तय करना मुश्किल हो गया कि ये लोग खानदानी ज्यादा हैं या हिंदुस्तानी...! तो लीजिए पेश है उनसे हासिल तवारीखी मालूमात....

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

वर्तमान शिमला नगर जहाँ स्थित है, वह तथा उसके आस-पास का अधिकांश क्षेत्र 18 वीं शताब्दी के अंत तक घने वनों से भरा हुआ था। पूरे क्षेत्र में बसावट के नाम पर केवल जाखू मंदिर तथा इसके ईर्द-गिर्द स्थित कुछ बिखरे हुए घर ही थे। इस क्षेत्र पर 1806 में नेपाल के भीमसेन थापा ने आक्रमण कर कब्जा कर लिया था। तत्पश्चात ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने गोरखा युद्ध (1814-16) में नेपाल पर विजय प्राप्त करने के बाद सुगौली संधि के अंतर्गत इस क्षेत्र पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। 30 अगस्त 1817 को इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करने वाले गेरार्ड बंधुओं ने अपनी डायरी में शिमला को "एक मध्यम आकार का गाँव" बताया, जहाँ "यात्रियों को पानी पिलाने वाला एक फकीर रहता है।" 1819 में, लेफ्टिनेंट रॉस, जो हिल स्टेट्स में सहायक राजनीतिक एजेंट थे, ने शिमला में एक लकड़ी का कॉटेज स्थापित किया। इसके तीन साल बाद, उनके उत्तराधिकारी और स्कॉटिश सिविल सेवक चार्ल्स प्रेट कैनेडी ने 1822 में क्षेत्र में वर्तमान हिमाचल प्रदेश विधान सभा भवन के निकट क्षेत्र का पहला पक्का घर बनाया। धीरे धीरे क्षेत्र की ठंडी जलवायु, सुरम्य प्राकृतिक दृश्य, हिमाच्छादित पहाड़ियाँ, और चीड़ और देवदार के घने जंगल भारतीय गर्मियों के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों को आकर्षित करने लगे। और इस प्रकार 1826 तक, कुछ अधिकारियों ने तो अपनी पूरी छुट्टियां शिमला में ही बिताना शुरू कर दिया था।

1827 में, बंगाल के तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड एम्हर्स्ट शिमला के दौरे पर आये; जहाँ वह कैनेडी हाउस में रहे। इसके एक साल बाद, भारत में ब्रिटिश सेनाओं के कमांडर-इन-चीफ लॉर्ड कॉम्बरमियर भी शिमला आये, और उसी स्थान पर रुके। अपने निवास के दौरान कॉम्बरमियर ने जाखू के पास एक तीन मील की सड़क और एक पुल का निर्माण करवाया था। 1830 में, अंग्रेजों ने केंथल और पटियाला के प्रमुखों से सोलन जिले के रवीन और कांगड़ा जिले के भारौली परगना के बदले शिमला के आस पास की जमीन का अधिग्रहण किया। इसके बाद शिमला का बहुत तेजी से विकास हुआ; 1830 में 30 घरों वाले इस नगर में 1881 में 1,141 घर बन चुके थे। 1832 में, तत्कालीन गवर्नर-जनरल लॉर्ड बैंटिक और महाराजा रणजीत सिंह के दूतों के बीच शिमला ने अपनी पहली राजनीतिक बैठक देखी।

कॉम्बरमियर के उत्तराधिकारी अर्ल डलहौजी ने भी उसी वर्ष शिमला का दौरा किया। इस समय तक तो ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल और कमांडर-इन-चीफ नियमित रूप से शिमला आने-जाने लगे थे। इन लोगों के साथ मिलने जुलने के लिए कई युवा ब्रिटिश अधिकारी

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

इस क्षेत्र में जाने लगे; और फिर उनके पीछे पीछे कई महिलाओं ने भी अपने रिश्तेदारों के लिए शादी के गठजोड़ की तलाश में शिमला आना शुरू किया। इस प्रकार शिमला पार्टियों और अन्य उत्सवों के लिए प्रसिद्ध हिल स्टेशन बन गया। इसी समय में उच्च वर्ग के परिवारों के विद्यार्थियों के लिए पास के क्षेत्र में आवासीय विद्यालय स्थापित किए गए। 1880 के दशक के अंत तक, शहर थिएटर और कला प्रदर्शनियों का केंद्र भी बन गया। आबादी बढ़ने के साथ-साथ, शहर भर में कई बंगले बनाए गए, और कस्बे में एक बड़ा बाजार स्थापित किया गया। बढ़ती यूरोपीय आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में भारतीय व्यापारी, मुख्य रूप से सूद और पारसी समुदायों से, इस क्षेत्र में पहुंचने लगे। 9 सितंबर 1844 को क्राइस्ट चर्च की नींव रखी गई थी। इसके बाद, कई सड़कों को चौड़ा किया गया और 1851-52 में 560 फीट की एक सुरंग वाली हिंदुस्तान-तिब्बत सड़क का निर्माण किया गया। यह सुरंग, जिसे अब धल्ली सुरंग के रूप में जाना जाता है, 1850 में एक मेजर ब्रिग्स द्वारा शुरू की गई थी और 1851-52 की सर्दियों में पूरी हुई थी। 1857 के विद्रोह से शहर के यूरोपीय निवासियों में खलबली मच गई, हालाँकि शिमला विद्रोह से अप्रभावित रहा था।1863 में, भारत के तत्कालीन वायसराय, जॉन लॉरेंस ने ब्रिटिश राज की ग्रीष्मकालीन राजधानी को शिमला में स्थानांतरित करने का फैसला किया। इस तथ्य के बावजूद कि कलकत्ता और इस अलग केंद्र के बीच 1,000 मील की दूरी थी, उन्होंने एक वर्ष में दो बार प्रशासन को स्थानांतरित करने की जहमत उठाने का निर्णय लिया। लॉर्ड लिटन (भारत के वायसराय; 1876-1880) ने 1876 में शहर की योजना बनाने के प्रयास किया, जब वह पहली बार किराए के घर में रहे। उन्होंने ही ऑब्जर्वेटरी हिल पर बनाए गए वायसरीगल लॉज के लिए योजना शुरू की। "अपर बाजार" नामक जिस क्षेत्र (जिसे आजकल द रिज के नाम से जाना जाता है) में मूल भारतीय आबादी रहती थी, एक आग की घटना की वजह से काफी प्रभावित हो गया। इसे ही यूरोपीय शहर का केंद्र बनाने की पूर्वी छोर की योजना के कारण बचे खुचे भारतीय लोगों को निचले इलाकों पर मध्य और निचले बाज़ारों में जाने के लिए मजबूर कर दिया गया। इसके बाद ऊपरी बाजार को साफ कर लाइब्रेरी और थिएटर जैसी कई सुविधाओं वाले पुलिस और सैन्य स्वयंसेवकों के साथ-साथ नगरपालिका प्रशासन के लिए एक टाउन हॉल का निर्माण किया गया था।

गोरखा युद्ध के बाद सैनिक टुकड़ियों के सुरक्षित जगह पर आराम के लिये 1819 में शिमला की स्थापना की गई थी। इन्हीं कारणों से शिमला भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करता था। चार्ल्स कैनेडी ने यहाँ पहला ग्रीष्मकालीन घर बनाया था। जल्दी ही शिमला लॉर्ड विलियम बेंटिंक की नज़रों में आ गया, जो 1828 से 1835 तक भारत के गवर्नर जनरल थे। 19वीं सदी के अंत में यहाँ ब्रिटिश वाइसरॉय के आवास (राष्ट्रपति निवास) का निर्माण हुआ था। आजकल इसमें इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी है।

इसी बातचीत के दौरान नीचे कुछ शोरगुल सा सुनाई देने लगा। मुंडी आगे करके पहाड़ी से नीचे झाँका तो कुछ महिलाएं रंग बिरंगे कपड़े पहन कर उछल कूद करती दिखाई दीं। पहले तो लगा कि किसी की शादी की बारात है। वहाँ बैठे बुजुर्गों से पड़ताल करने पर पता

चला कि नहीं, यह तो "डांगी" किया जा रहा है। यह एक लोक नृत्य है जो कुछ महिला नर्तकियों द्वारा किया जाता है। इसमें महिलाएं अपने निचले शरीर द्वारा नृत्य करती हैं। उन नृत्य करती महिलाओं के पास आने पर उनके नृत्य की मनमोहकता का पता चला। इस नृत्य में प्यार की विजय को दर्शाया जाता है। इसके बाद हिमाचली संस्कृति की बातें चल पड़ीं। टुकड़ों में कुछ नए तथ्य पता चले जिन्हें आपके लिए नीचे पेश किया गया है।

संस्कृति:

शिमला के लोगों को अनौपचारिक रूप से "शिमलावासी" (अंग्रेजी में शिमलाइट्स) के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ विभिन्न त्यौहारों को मनाया जाता है, जिनमें 3-4 दिनों तक चलने वाला शिमला समर फेस्टिवल प्रमुख है, जो कि हर वर्ष जून के महीने में आयोजित किया जाता है। यह समारोह साल 1960 के दशक से हर साल आयोजित किया जाता है। साल 2024 में, यह 15 से 18 जून तक ऐतिहासिक रिज पर आयोजित किया गया था। इस समारोह में हिमाचल प्रदेश से जुड़े कलाकारों को भी बड़ा मंच मिलता है। इसका मुख्य आकर्षण देश भर के लोकप्रिय गायकों द्वारा प्रदर्शन है। 2015 से, 95.0 बिग एफएम और हिमाचल टूरिज्म द्वारा हर साल संयुक्त रूप से क्रिसमस से नए साल तक रिज पर सात-दिवसीय लंबे शीतकालीन कार्निवल का आयोजन किया जा रहा है।

शिमला में घूमने की कई जगहें हैं। मॉल और रिज जैसे स्थानीय हैंगआउट शहर के केंद्र में हैं। शहर की अधिकांश धरोहर इमारतें अपने मूल 'टुडोरबथन' वास्तुकला में संरक्षित हैं। पूर्व वायसरीगल लॉज, जो अब भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान है, और वाइल्डफ्लावर हॉल, जो अब एक प्रमुख होटल है, ऐसी कुछ प्रसिद्ध इमारतें हैं। राज्य संग्रहालय (1974 में निर्मित) में इस क्षेत्र के चित्रों, आभूषणों और वस्त्रों का संग्रह पाया जा सकता है। लक्कड़ बाजार, जो रिज से आगे स्थित है, स्मृति चिन्हों और लकड़ी से बने शिल्पों के लिए प्रसिद्ध है। मुख्य शहर से 55 किलोमीटर (34.2 मील) की दूरी पर सतलुज नदी के तट पर तत्तापानी नामक गर्म सल्फर चश्मे स्थित हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे औषधीय महत्त्व रखते हैं।

शिमला में कई मंदिर हैं और यहाँ अक्सर आसपास के ग्रामों और शहरों से भक्त दर्शन करने आते है। काली देवी को समर्पित एक मंदिर मॉल के पास ही स्थित है। हनुमान जी को समर्पित जाखू मंदिर शिमला में सबसे उच्चतम चोटी पर स्थित है। शहर से लगभग 10 किलोमीटर (6.2 मील) शिमला-कालका राजमार्ग पर संकट मोचन नामक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

एक और हनुमान जी का मंदिर स्थित है, जो इसके आसपास के क्षेत्रों में पाए जाने वाले कई बंदरों के लिए प्रसिद्ध है। यह है। नज़दीक ही स्थित तारा देवी का मंदिर वहां आयोजित होने वाले अनुष्ठान और त्योहारों के लिए जाना जाता है। अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों में बस टर्मिनल के पास स्थित एक गुरुद्वारा और रिज पर स्थित क्राइस्ट चर्च शामिल हैं। शिमला में निर्मित कला और शिल्प उत्पादों की पर्यटकों में अत्यधिक मांग रहती है। यहाँ उत्कृष्ट आभूषणों, कढ़ाई वाले शॉल और कपड़ों से लेकर चमड़े की वस्तुओं और मूर्तियां तक कई चीज़ें बनाई जाती हैं। शिमला के आस पास चीड़ और देवदार के पेड़ भी बहुतायत में मिलते हैं। शिमला की सभी प्रमुख इमारतों में इन पेड़ों की लकड़ी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। लकड़ी से बने शिमला के विभिन्न प्रकार के शिल्पों में छोटे बक्से, बर्तन, छवि नक्काशी और स्मृति चिह्न शामिल हैं। शिमला के कालीन भी सैलानियों के लिए एक बड़ा आकर्षण हैं। इनके निर्माण में विभिन्न पुष्प और अन्य रूपांकनों का उपयोग किया जाता है। ऊन का उपयोग कंबल और कालीन बनाने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ के रूमाल, हाथ के पंखे, दस्ताने और टोपी इत्यादि भी प्रसिद्ध हैं।

शिमला में दक्षिण एशिया की एकमात्र प्राकृतिक आइस स्केटिंग रिंक भी है। इस स्थल पर अक्सर राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। आइस स्केटिंग का मौसम आमतौर पर दिसंबर की शुरुआत में शुरू होता है और फरवरी के अंत तक चलता है। शिमला आइस स्केटिंग क्लब, जो रिंक का प्रबंधन करता है, हर साल जनवरी में एक कार्निवल की मेजबानी करता है, जिसमें एक फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता और फिगर स्केटिंग इवेंट शामिल हैं। शिमला और उसके आसपास ग्लोबल वार्मिंग और बढ़ते शहरी विकास के प्रभावों के कारण, पिछले कुछ वर्षों में हर सर्दियों में इन बर्फीले स्तरों की संख्या कम हो रही है। स्केटिंग रिंक के अतिरिक्त शहर में इंदिरा गांधी राज्य खेल परिसर जैसे क्रीड़ास्थल भी हैं। शहर से आगे नालदेहरा नौ-होल गोल्फ कोर्स है, जो भारत में अपनी तरह का सबसे पुराना है। कुफरी एक स्की रिसॉर्ट (केवल शीतकालीन) है जो मुख्य शहर से 19 किलोमीटर (12 मील) की दूरी पर स्थित है।

अगले ही दिन हमने एक टैक्सी बुक कर ली और निकल पड़े अपने हसीन सफर पर ... टैक्सी वाले ने सबसे पहले हमें "रिज" घुमाया। उसके अनुसार आप शिमला आए और "रिज" नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा। तो आइए आपको भी ले चलते हैं "रिज" पर

पर्यटन:

हिमाचल प्रदेश की राजधानी और ब्रिटिश कालीन समय में ग्रीष्म कालीन राजधानी शिमला राज्य का सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन केन्द्र है। शिमला लगभग 7267 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और यह अर्ध चक्र आकार में बसा हुआ है, जहां पूरे वर्ष ठण्डी हवाएं बहती रहती हैं। यहां घाटी का सुंदर दृश्य दिखाई देता है और हिमालय पर्वत की चोटियां चारों ओर दिखाई देती है। इसके उत्तर में बर्फ मानों क्षितिज तक जमी हुई है। यहां ठण्डी हवाएं बहती है और ओक तथा रोडोडेंड्रॉन के वनों से गुजरती हैं। शिमला का सुखद मौसम, आसानी से पहुंच और ढेरों आकर्षण इसे उत्तर भारत का एक सर्वाधिक लोकप्रिय पर्वतीय स्थान बना देते हैं।

रिज:

शिमला शहर के मध्य में स्थित द रिज (The Ridge) एक बड़ा और बेहद खूबसूरत स्थान है, जहां से दूर-दूर तक खूबसूरत पर्वत मालाओं को देखा जा

सकता है। यह शिमला के माल रोड के पास स्थित है। द रिज शिमला के सभी सांस्कृतिक गतिविधियों का एक केंद्र है। यहां शिमला की पहचान बन चुका न्यू-गॉथिक वास्तुकला का उदाहरण क्राइस्ट चर्च और न्यू-ट्यूडर पुस्तकालय का भवन दर्शनीय है।

मॉल रोड :

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान निर्मित, मॉल रोड रिज से एक स्तर नीचे स्थित है। शिमला नगर निगम, अग्निशमन सेवा और पुलिस मुख्यालय के

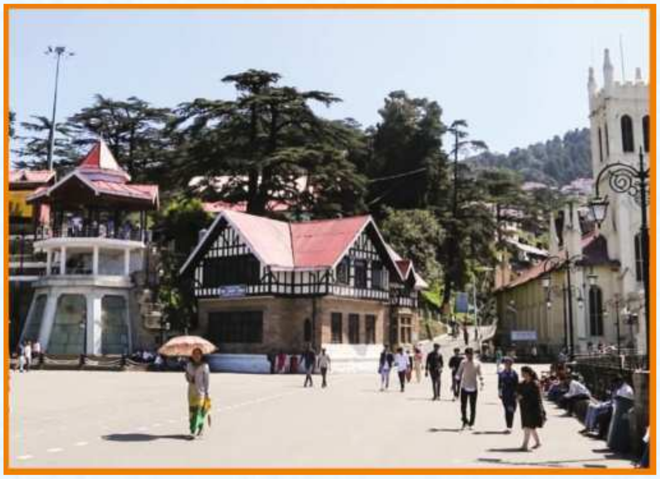

कार्यालय यहाँ पर स्थित हैं। इस सड़क पर आपातकालीन वाहनों को छोड़कर अन्य वाहनों को चलने की अनुमति नहीं है। माल रोड में कई शोरूम, खुदरा बिक्री केन्द्र, दुकानें, रेस्तरां और कैफे हैं। हिमाचल एम्पोरियम का विक्रय स्थल जो कि हिमाचल प्रदेश के हस्तशिल्प उत्पादों जैसे कि स्थानीय ऊनी कपड़े, ब्रांडेड कपड़े, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के उत्पाद और आभूषण आदि लोगों को उपलब्ध कराता है, भी यहाँ स्थित है। गेयटी थियेटर, जो पुराने ब्रिटिश थियेटर का ही रूप है, अब सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र है। कार्ट रोड से मॉल के लिए हि.प्र.प.वि.नि. की लिफ्ट से भी जाया जा सकता है। रिज के समीप स्थित लक्कड़ बाजार, लकड़ी से बनी वस्तुओं और स्मृति-चिह्नों के लिए प्रसिद्ध है।

काली बाड़ी मंदिर:

काली बाड़ी मंदिर मूल रूप से जाखू हिल पर रोथनी कैसल के आसपास एक बंगाली ब्राह्मण 'राम चरण ब्रह्मचारी' द्वारा बनाया गया था। यह शहर के प्राचीन मंदिरों में से एक है और इसमें देवी काली की नीले रंग की लकड़ी की मूर्ति के साथ एक अद्वितीय हिंदू शैली की वास्तुकला है।

जाखू मंदिर:

शिमला का मौसम व प्राकृतिक सौन्दर्य केवल देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपनी पहचान रखता है।

ऐतिहासिक जाखू पर्वत के शिखर पर हनुमान जी का एक प्राचीन मंदिर दुनिया भर के श्रद्धालुओं की आस्था का एक केंद्र भी रहा है इसके पीछे मान्यता यह है कि त्रेता युग में राम-रावण युद्ध के दौरान लक्ष्मण जी को मेघनाद के शक्ति बाण की मूर्छा से बचाने के लिए हनुमान जी जब संजीवनी बूटी लेने सुमेरु पर्वत पर गए थे तब यहाँ विश्राम करने के लिए रुके थे।

राज्य संग्रहालय:

हिमाचल राज्य संग्रहालय शिमला में स्थित एक सांस्कृतिक संग्रहालय है । संग्रहालय की स्थापना 1974 में इन्वरर्म में की गई थी। संग्रह में लकड़ी की नक्काशी, कांस्य, पुरातात्विक कलाकृतियाँ, सिक्के, आभूषण, पांडुलिपियाँ, कई लघुचित्रों सहित पेंटिंग, डाक टिकट और हथियार शामिल हैं।

प्रोस्पेक्ट हिल:

शिमला शहर को घेरने वाली सात पहाड़ियों में से एक, प्रॉस्पेक्ट हिल, कामना देवी को समर्पित एक शानदार मंदिर के लिए सबसे ज़्यादा मशहूर है। मंदिर का रास्ता देवदार के पेड़ों से घिरा हुआ है और लोकप्रिय मान्यता के अनुसार, जो भक्त मंदिर तक पहुँचने के लिए कठिन चढ़ाई करते हैं, उन्हें देवी कामना देवी का आशीर्वाद मिलता है। प्रॉस्पेक्ट हिल शिमला में खूबसूरत सूर्यास्त देखने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

समर हिल:

समर हिल शिमला-कालका रेलवे लाइन पर एक खूबसूरत जगह है, जहाँ से बर्फ से ढके पहाड़ों का अद्भुत नज़ारा दिखता है। शिमला से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह सुंदर शहर शांत वातावरण और आस-पास की पहाड़ियों के सुंदर नज़ारे पेश करता है। समर हिल वही जगह है जहाँ महात्मा गांधी आए थे और राज कुमारी अमृत कौर के खूबसूरत जॉर्जियाई घर में ठहरे थे। सर्दियों में यह जगह पूरी तरह बर्फ से ढकी रहती है और गर्मियों में बेहद सुहावनी। हिमाचल विश्वविद्यालय भी समर हिल की शानदार पृष्ठभूमि में स्थित है।

चैडविक जलप्रपात:

राज्य और देश के सबसे खूबसूरत झरनों में से एक, चैडविक फॉल शिमला के प्रसिद्ध आकर्षणों में से

एक है। चैडविक फॉल घने ग्लेन फ़ॉरेस्ट में स्थित है, जो समर हिल चौक से सिर्फ़ 7 किमी दूर है। साथ ही, यह शहर से सिर्फ़ 45 मिनट की पैदल दूरी पर है। चैडविक फॉल समुद्र तल से 1586 मीटर की ऊँचाई पर है।

संकट मोचन:

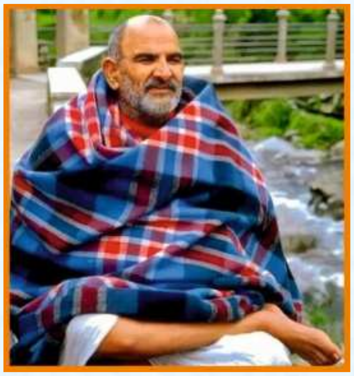

यह मंदिर जाखू मंदिर के बाद शिमला का दूसरा सबसे अधिक देखा जाने वाला हनुमान मंदिर है। इसकी स्थापना 1950 में एक प्रसिद्ध संत नीम करौली बाबा ने की थी।

तारादेवी:

तारा देवी मंदिर शिमला में सबसे ज़्यादा देखे जाने वाले धार्मिक स्थलों में से एक है। यह समुद्र तल से 7200 फ़ीट की ऊँचाई पर स्थित है और शिमला शहर से लगभग 11 किमी दूर स्थित है। तारा देवी मंदिर का निर्माण सेन वंश के राजाओं ने 1766 ई. के आसपास करवाया था।

स्कैंडल पॉइंट

अगर आप शिमला गए हैं, तो आपको यहां की स्कैंडल पॉइंट जगह भी जरूर पता होगा, लेकिन क्या आप ये बात जानते हैं कि इस जगह का नाम स्कैंडल कैसे पड़ा। हम आपको बता दें, स्कैंडल पॉइंट वो स्थान है जो माल रोड रिज रोड को जोड़ता है। बहुत पहले एक ब्रिटिश महिला भारत के एक राजा के साथ भाग गई थी। इस घटना के बाद से, अंग्रेजों ने महाराजा के शिमला में प्रवेश करने पर पूरी तरह से बैन लगा दिया था। इस तरह से इस जगह का ये नाम रखा गया।

अविस्मरणीय क्षण:

हिमाचल की राजधानी शिमला देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक बेहतरीन पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। इसकी सुंदरता को निहारने के लिए न सिर्फ अपने देश के लोग यहां देखने को मिलते हैं, बल्कि विदेश से भी कई पर्यटक यहां के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों का आनंद लेने के लिए आते हैं। चारों तरफ से बर्फीली घाटियों और पर्वत श्रृंखलाओं से घिरी व प्राकृतिक परिवेश से सजी 'पहाड़ों की रानी' कही जाने वाली शिमला नगरी की अतुलनीय छवि मन को मोह लेती है। वहाँ के नैसर्गिक सौन्दर्य व शांतिपूर्ण वातावरण ने मन को इतना रोमांचित कर दिया कि मुझे धरती पर स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। इन अमूल्य यादों को सँजोए हम बुधवार को हम अपने घर लौट आए। यह कहना उचित होगा कि इस यात्रा संस्मरण की शुरुआत में मैंने एक कवि महोदय का उल्लेख किया था जिन्होने शिमला के सौन्दर्य पर एक काव्य संग्रह लिखा था। शिमला भ्रमण करने के बाद मेरा यही कहना है कि दुनिया के किसी भी कवि में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह शिमला के सौन्दर्य को उकेर सके। शिमला का सौंदर्य अतुलनीय, अप्रतिम और अनुपम है।

कहानियाँ

जीवन रेल

बिभाष रंजन मंडल
महानिदेशक (पश्चिम क्षेत्र),
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

उस दिन उसके पिता हमेशा की ही तरह अपने घर के सामने आँगन में बैठकर शून्यवृत्त आकाश की ओर देख रहे थे। वह भी वहाँ अपनी किताबों समेत कुछ रंगों और स्याही से अपनी दादी की यादें पन्ने पर सँजो रहा था। धूप किरकिरी ना थी। गुलाबी सर्द। कुछ हल्की बारिश के भी आसार से लग रहे थे। दादी माँ की साड़ी में कौन-सा रंग भरे। उम्र भर जब से होश संभला था उसने उनको नीले बार्डर की सफ़ेद साड़ी में ही देखा था। उसने सोचा नीली स्याही से एक पतली सी रेखा से काम चल जाएगा। स्याही वाला पेन उसे पसंद ना था, पर अभी ज़रूरत स्याह रंग की थी। उसने कलम से रेखा खींचनी शुरू की। रेखा कुछ ज़्यादा गाढ़ी मालूम होती थी। इतनी गहरी रेखा दादी माँ की साड़ी पर ना थी। इतनी घिसी-पिटी थी कि ध्यान से देखने पर ही दिखाई पड़ती थी। क्या इससे फर्क पड़ेगा? क्या ही फर्क पड़ेगा। सोचते हुए उसने बैंगनी मोम कलर से उनकी साड़ी को और भी सजा दिया। हाथ में रंगों का डिब्बा लिया ही था कि उसने अपने पिता की ओर देखा। कहीं पिताजी भी दादी माँ के ही बारे में तो नहीं सोच रहे। सहसा एक नज़र में देखकर उसको ऐसा लगा कि वे अपने गूढ़ ख्यालों में खोये हैं। पर जैसे ही एक लंबी सांस लेकर वह फिर दादी माँ की ओर ध्यान देने को हुआ, उसके पिता की आँखों की पुतलियाँ बाई ओर घूम गई और एक लंबी गुहार लगाती हुई डेली मेल आँखों के म्यान में खिंचती हुई सामने आ गई। उसके पिता अभी भी उसी रेल को देख रहे थे। उसने पूछा, "बाबा आप ट्रेन को क्यों देखते रहते हो?" पिता ने कुछ भी जवाब न दिया। ऐसा लगता है जैसे वे इसके इंतज़ार में बैठे रहते हो"।

पिताजी ने कहा, "खोका, ट्रेन के साथ जीवन का बहुत खास मेल है"।

ट्रेन से जीवन का मेल? यह बात खोका की समझ के बाहर थी। यह कैसे हो सकता है, उसने सोचा।

खोका, "पर पिताजी, ट्रेन तो एक जड़ वस्तु है और मनुष्य चेतन। एक जड़ वस्तु से चेतना का क्या मिलान!" ट्रेन तब तक बहुत दूर निकल चुकी थी पर उसका हॉर्न अभी भी रुक-रुक कर बज रहा था, जैसे खोका के इस कथन पर उसे भी ऐतराज़ हो।

पिताजी खाट पर से उठकर अंदर जाने को हुए। हल्की-हल्की जाड़े की बूंदें टपकने लगी थीं। स्याही पन्ने पर फैल रही थी। पर खोका को इस बात का कोई इल्म न था। वह तो पिता के इस कथन पर चकित था। उठते-उठते उन्होनें कहा, "ना रे खोका। अभी यह समझ पाना तेरे लिए मुश्किल है। जब तू बड़ा हो जाएगा, तब अपने

आप समझ आ जाएगा। चल बारिश आ रही है, अंदर चल। मौसम बदल रहा है। बीमार ना पड़ जाए।

खोका ने दादी माँ के चित्र की ओर देखा। हल्की-हल्की पानी की बूँदों से स्याही फैलने लगी थी। जैसे दादी माँ खुद को पहले जैसा देखना चाहती हों। वह जल्दी-जल्दी सब समेटने लगा। खोका ने मन ही मन सोचा कि क्या आदमी का दिमाग बड़ा होते होते खराब हो जाता है। जड़ का चेतन से क्या मिलन। और फिर मनुष्य और ट्रेन का तो कोई मिलान नहीं। हाँ ट्रेन का मिलान बारिश के बाद निकलने वाले कीड़ों से तो हो सकता है। वो लगते भी हैं रेल जैसे। तभी तो उनको रेलगाड़ी कहते हैं। उनका नाम ही रेलगाड़ी है।

* * * * * *

मैं उस दिन और बात नहीं कर पाया। बच्चा था इसलिए मुझे चुप रहना पड़ा और इसलिए मैं पिताजी की दक़ियानूसी बात का विरोध भी नहीं कर पाया। मेरा घर ट्रेन लाइन से सिर्फ ढाई मिनट की दूरी पर था। सीधे-कच्चे रास्ते से जाने पर सिर्फ तीस सेकंड का ही समय लगता था। इसलिए हर दिन ट्रेनें देखने का मेरा सौभाग्य था। आठ वर्ष की आयु तक मैंने हर तरह की ट्रेन देख ली थी। मालगाड़ियाँ जो बहुत लंबी होती थीं, पैसेंजर गाडियाँ, डेली मेल आदि। सबका धुआँ एक सा था। विशाल आकाश के पट पर एक गहरा स्याह धब्बा, जो खुद ट्रेन जैसा ही था, किन्तु क्षणिक। सुबह की नींद भी ट्रेन की आवाज़ से खुलती है और रात को सोते वक़्त भी वही आवाज़ कानों में पड़ती है। कभी-कभी ऐसा लगता है मानो कोई ट्रेन है ही नहीं। बस एक आभास है कि ट्रेन है। ट्रेन की आवाज़ से मैं अब समय को भी समझ पाता हूँ। मैं जब घर में होता हूँ तो घड़ी देखने तक की ज़रूरत नहीं पड़ती। ट्रेन का आना जाना ही मेरी घड़ी है। दिन में कम से कम सात या आठ ट्रेनें तो निकलती ही होंगी। सभी का समय मुझे करीब-करीब याद हो गया था।

पिताजी की बात सुनकर दादी माँ की याद भी प्रखर हो आई है। मेरी दादी माँ का नाम स्वङ्कुमारी था। करीब करीब सौ साल की उम्र के आस-पास उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु के पहले मैंने उनको निकट से जाना था। उनसे बहुत सारी कहानियाँ सुनता था। मुझे याद है वो मुझे रामायण महाभारत से लेकर सन् 1776 के मर्णांतर(अकाल) के किस्से भी सुनाया करती थीं। किस तरह घर घर में भुखमरी थी। लोग भोजन की तलाश में चलते-चलते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे। ऐसी कहानियाँ सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे। मुझे हमेशा ही पंचतंत्र की कहानियां अच्छी लगा करती थीं। पिताजी की बात कि ज़िंदगी एक ट्रेन है, शायद दादी ने भी बोला है कभी। याद नहीं आ रहा। पर शायद बोला था कभी उन्होने भी। और एकाएक विचारों के इस बांध में मैं ऐसा बहा कि समझ में ही आ गया कि ट्रेन और ज़िंदगी में तो एक कमाल की समानता है। जैसे ही मुझे समझ में आया ज़िंदगी को देखने का एक नया आयाम मेरे सामने आ गया। ओह ये क्या अनुभूति है। जैसे मैं बड़ा हो गया हूँ।

कई सारी घटनाएँ जो बचपन में हुई थीं और मेरी उम्र के कारण जिन्होंने मुझपर कोई खास प्रभाव न

डाला था, वो सभी एकाएक मुझे समझ आने लगीं। मेरे पिताजी के बड़े भाई साहब की बेटी कविता जो मुझसे कुछ वर्ष छोटी थी, और दो-तीन साल की ही रही होगी जब उसको पीलिया हो गया था। कोई भी डॉक्टर उसको बचा नहीं सका। मतलब वो अपने स्टेशन से चली भी और गंतव्य पर उतर भी गई। क्या ये ही समझा रहे थे पिताजी? या और कुछ भी? मृत्यु हमें जीवन से छीनकर अपने स्टेशन पर उतार देती है?

मैंने अपनी यात्रा का आरंभ विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने की इच्छा से किया था। अपने गाँव की सीमा से बाहर निकलने का दर्द, अंजानी दुनिया में कदम रखने का उत्साह और नई चुनौतियों का सामना करने की तैयारी मेरे जीवन को सुरेखित बना रही थी। विश्वविद्यालय शहर में था। घर को छोड़ते हुए दुख तो था पर भविष्य उजियारे में दिखाई पड़ता था। माता-पिता का भी स्वप्न था कि उनकी सन्तानें एक अच्छा जीवन व्यतीत करें। पिताजी ने बचपन से ही यह समझाया था कि बड़े होकर विद्या ही व्यक्ति को पार लगाती है। एक दिन एक चौंकाने वाली खबर ने मेरी सारी योजनाओं को दहला दिया। मेरे बड़े भाई साहब का निधन चालीस साल की आयु में हो गया। उनकी पत्नी बेसुध पड़ी थीं। उस समय मैं विश्वविद्यालय के हॉस्टल में खाना खाने जा रहा था। यह खबर सुनते ही मुझसे रहा नहीं गया। मैं तुरंत घर को दौड़ा। पहली बार मृत्यु को इतना करीब से देखकर समझ नहीं पाया कि यह कैसे हो गया। कुछ लोगों की लड़ाई में वो बेकसूर ही फंस गए और उनको भी दो गोलियां लग गई। यह क्या हुआ? कैसे? क्या सब कुछ लिखा हुआ है? और अगर हाँ तो क्या जीवन की भी ट्रेन की ही तरह सख्त समय सारिणी है। मैंने पिताजी से पूछा, भैया को क्यूँ जाना पड़ा? क्या जिनकी गलती है उनको सज़ा मिलेगी? पिताजी शांत दिख रहे थे, पर यदि मुझपर अथाह दुख का यह बोझ था, तो उनकी क्या स्थिति थी यह मैं जानता था। कई रातों तक मैंने उन्हे वहीं आँगन में बैठे देखा। अलाव जलता था, बुझता था। उनकी आँखें स्थिर शून्य अंधकार में देखती थीं। मैं भी वहीं आग तापता था। कुछ और रिश्तेदार कुछ समय तक तो बैठते थे, और रात बढ़ते- बढ़ते उठकर चले जाते थे। माहौल इस तरह का था कि कोई भी बात बोलने से और उस चुप्पी को तोड़ने से डर लगता था। पर इस बार जब मैंने देखा कि रिश्तेदार भी कम हो रहे हैं, और हम दोनों ही हैं अब इस दुख के साथी थे, तो मैंने पूछ ही लिया।

पिताजी ने कहा, "खोका, हम अब उसे वापस नहीं ला सकते। वो ट्रेन से उतर चुका है। अब जो हम लोग साथ में हैं, बस उन्हीं को हम संभाल सकते हैं। पिताजी रोने लगे। मेरा गला भर आया था। बहुत रोका पर नहीं रुका जा रहा था। महीना भर हो चुका था भैया को गए हुए, और मैंने खुद को पत्थर बना लिया था, पर पिताजी की वेदना मैं देख न सका और पत्थर टूटा। धारा बही। मैं घर पर ही रुक गया कुछ दिन। मैंने सोचा सब साथ रहेंगे तो कुछ ढांढस बंधेगा। पिताजी ने भी फिर से अपनी नौकरी संभाल ली और मिल जाना शुरू कर दिया था। वे मिल के कारखाने के मैनेजर थे। उनको अपने काम से बहुत लगाव भी था। एक दिन भोर में मैंने सुना कि माँ

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

फोन पर पिताजी से बात कर रही हैं। पिताजी उस दिन काम की अधिकता के कारण घर नहीं आए थे। यह एक सामान्य क्रिया थी। ऐसा अक्सर ही होता था। घर आने से पहले पिताजी फोन करके माँ को बता देते थे कि वो घर सुबह कितने बजे आएंगे। उस दिन को मैं नहीं भूल पाऊँगा। पिताजी के कारखाने से सुबह खबर आई कि भोर अचानक कारखाने में हादसे के कारण कुछ लोगों की मृत्यु हो गई है। हमें भी अस्पताल बुलाया गया। माँ को संभालना था, पर इससे खुदका मन कहाँ शांत होने वाला था। अस्पताल में पहुँचते ही देखा कि सफ़ेद चादरों से ढके शव कतारबद्ध थे। माँ बिलखने लगीं। हिम्मत ही नहीं थी कि पूछूं कि पिताजी कौन हैं। इतने में कमरे के ज़रा दूर कोने से पिताजी ने आवाज़ दी। जैसे कोई व्यक्ति मरकर ज़िंदा हुआ हो ऐसी अनुभूति हुई। खुशी से आँखें भर आईं। उनका इलाज चल रहा था। इमेजेंसी वार्ड था। हर तरफ अफरा-तफरी मची थी। पिताजी को ठीक देखकर, ट्रेन में देखकर, मेरी जीने की इच्छा और भी प्रखर हुई।

सन् 2023 पंचायत इलैक्शन। कुछ साल बीत चुके हैं। मैं अब एक सरकारी नौकरी कर रहा हूँ। इस गाँव में, चुनाव के चलते, प्रिजाइडिंग ऑफिसर लगा हूँ। देश के गणतन्त्र का सबसे मूल्यवान उत्सव चल रहा है। मेरा मोबाइल बजने लगा। पिताजी का कॉल। "खोका क्या कर रहे हो?"शांत स्वर में पिताजी ने पूछा, "क्या तुम अभी घर आ सकते हो? तुम्हारी भाभी की अकस्मात मृत्यु हो गई है।" दुख से गला भर आया। 49 साल की उम्र में वो भी ट्रेन से उतर गईं। खुदको संभाला। मैंने बताया, "नहीं पिताजी मैं अभी नहीं आ सकता हूँ। शाम को फिर से कॉल करके बात करूंगा।" पिताजी ने कुशल-मंगल पूछकर कहा कि अच्छे से काम करो और फोन काट दिया।

मृत्यु बहुत लंबे समय तक मेरे लिए एक अद्वितीय और रहस्यमय सत्य ही रहा। किस निर्धारण से इसका सामना करना पड़ रहा था। दुनियादारी में इसकी क्या सार्थकता और अर्थ है, वह मैं जीवन से खुद जानना चाहता हूँ। शायद तभी समझ पाऊँ। दर्शन जिस तरह एक प्राकृतिक प्रक्रिया मानता है, बुद्धि इसे उतना ही घोर सत्य की तरह परिभाषित करती है। कौनसी आत्मा? क्या अविनाशी स्वरूप। जीवन को जीने के लिए क्यूँ इसकी महत्ता और अर्थ का सामंजस्य बैठाऊँ? ऐसा मैं सोचा करता था। वेदान्त और धार्मिक परम्पराओं के प्रभाव से मैं विरक्त था। जानता था, समझ पाने की चेष्टा करना भी अत्यंत ही भयावह प्रतीत होता था। अपने करीबी लोगों के लिए विरक्ति मेरे जैसे इंसान के लिए असंभव सी थी। अंततः सारी विद्या जो मैंने ली थी, मुझे यह समझा पाने में असफल रही।

आज मेरी उम्र साठ वर्ष हो गई है। मेरी पत्नी को श्वास लेने में कठिनाई की समस्या है। गाहे-बगाहे डर लगता है कि कहीं वो भी इस जीवन रूपी रेल को ना छोड़ दे। अस्पताल में डॉक्टर कहते हैं कि कुछ भी नहीं है। बस एलर्जी है। कभी-कभी लगता भी है कि सब ठीक हो जाएगा। अभी मैं वंदे-भारत जीवन-रेल एक्सप्रेस में चल रहा हूँ।

ख़्वाहिश

श्री लोकेश चंद्र लाल
वरिष्ठ अनुवादक
हिंदी अनुभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय), हैदराबाद

वाह! क्या बात है नंदिनी, खाने में तो आज अलग ही स्वाद लग रहा है। इतना सारा व्यंजन! लगता है आज तुम्हारे हाथ- पैर दोगुने उत्साह से चल रहे हैं। वरना इतनी जल्दी इतना कुछ! आज नंदिनी कुछ अलग ही दिख रही है। शरीर में स्फूर्त्ति, आँखों में चमक, होठों पर मधुर मुस्कान। कुछ तो है, नंदिनी को ऐसा मैंने वर्षों के बाद देखा है। वैसे तो हरदम नंदिनी घर के कामों और यामी को संभालने में ही अपना दिन-रात व्यतीत करती है। कभी-कभी लगता है, नंदिनी एक मशीन की तरह होती जा रही है जिसमें केवल एक भाव ही बलवती होती है- बस चलते रहना। मशीन के अंदर भावना नहीं अपितु कर्तव्य होता है और यही कर्तव्य उसे मशीन की संज्ञा देती है।

नंदिनी को जब से मैं जानता हूँ तब से वह अत्यंत सहज, सरल और समझदार औरत के रूप में नज़र आई है। लेकिन रूबी कहती है कि नंदिनी पहले बहुत चंचल और हँसमुख स्वभाव की थी। एक जगह पर स्थिर रहना तो उसका स्वभाव न था। ताज़ा पुष्प जैसे अपनी सुगंध से वातावरण को सुगंधित कर देता है, नंदिनी भी फूलों की ही भांति सर्वदा खिलती-मुस्कुराती नज़र आती और जहाँ भी जाती, वातावरण को आनंदित बना देती थी। नंदिनी की दो कमजोरियाँ थी- पहली कमजोरी पापा और दूसरी कमजोरी नृत्य। केवल यही दोनों नंदिनी को संयमित रख सकते थे। इन दोनों के अलावा नंदिनी वह चिड़िया थी जिसको कोई पकड़ नहीं सकता था। अपनी दुनिया में मदमस्त नंदिनी को केवल पापा की आवाज़ ही काबू कर सकती थी।

पापा की रोबीली आवाज़ सुन नंदू सहम-सी जाती थी। घर में दिन भर पढ़ाई का माहौल और अनुशासन, नंदिनी को ज़रा भी न भाता था। हर वक्त उड़ने की ख़्वाहिश रखने वाली नंदू (नंदिनी) असीम उड़ान भरना चाहती थी और इस ख़्वाहिश को पंख उसका नृत्य देता था। नृत्य नंदू के लिए उसकी आत्मा थी। लय, धुन, ताल उसके शरीर में नवीन ऊर्जा का संचार करते थे। नृत्य करते वक़्त नंदिनी की आत्मा, परमात्मा से जा मिलती थी। दुनिया के रस्म-रिवाज, परंपरा, बंधन इन सब से परे हो जाती थी। संगीत की लय पर उसका हर एक अंग थिरकता था। जब वह नृत्य करती तो ऐसा प्रतीत होता मानो ईश्वर को अब स्वयं ही आना होगा। जब भी कला आत्मा से प्रदर्शित होती है, तब वह पवित्रता के चरम पर होती है और जहाँ पवित्रता का श्रेष्ठतम रूप आता है, वहाँ ईश्वर की उपस्थिति अवश्यंभावी हो जाती है। नंदिनी के जीवन का एक ही लक्ष्य था- वह था साधक बनना। वह सीखना चाहती थी, जीना चाहती थी, अपने ढंग से रहना चाहती थी। परंतु पापा और नृत्य नंदिनी के जीवन के दो समानांतर रास्ते थे जो आपस में कभी न मिल सकते थे। नंदिनी के

जीवन में एक की उपस्थिति दूसरे की अनुपस्थिति का कारण थी।

पापा को नाच-गाना,नाटक या यों कहे कि पढ़ाई के अलावा कुछ भी पसंद न था। पापा की नज़रों में वही बच्चा श्रेष्ठ और सर्वोत्तम के विशेषण से परिभाषित हो सकता था जो पढ़ाई में अव्वल आता। बाकी चीज़े पापा के लिए मायने ही न रखती थी। पापा से डरने वाली नंदिनी, अपने पापा से बहुत स्नेह भी रखती थी। पापा के स्नेह के लिए वह हर वो चीज़ करने को तैयार थी जो उन्हें पसंद था। वह पापा की नज़रों में अपने लिए स्नेह और सम्मान देखना चाहती थी जो उसे कभी न मिला था। मिलती थी तो बस डाँट और अपने लिए आँखों में ढेर सारा क्रोध। क्योंकि नंदिनी हर वह काम करती थी जो पापा को बिल्कुल भी पसंद न था। पर यह सारे काम उससे अनजाने में हो जाते जिनको सुधारने का असफल प्रयास भी वह करती थी। नंदिनी चाहकर भी अपने स्वभाव को बदल नहीं पाती थी। इन सब कारणों से पापा और नंदिनी में दूरियाँ बढ़ती गई और धीरे-धीरे नंदिनी अपने पापा से या यूँ कहे कि पापा नंदिनी से दूर होते चले गए। पापा नंदिनी के लिए तो हमेशा से सुपर हीरो थे और यकीनन हरदम रहेंगे।

नंदिनी के कोमल हृदय और उसके मन की बात को कोई समझता और उसकी उटपटांग बातों को कोई मानता था तो वह थी नंदिनी की माँ। स्नेह की तलाश में अगर नंदिनी को कहीं शांति और स्नेह की प्राप्ति होती थी तो वह माँ के पास होती थी। नंदू का कोमल मन सदा-सर्वदा माँ का ही आंचल चाहता था। एक माँ ही थी जिसके सामने निर्भीक होकर नंदू अपने हृदय की सीधी-सादी, उल्टी-पुल्टी हर बात कह सकती थी। माँ नंदू की सारी ख्वाहिशों को पूरा करने की कोशिश करती थी - कभी पापा को बताकर तो कभी पापा से छुपाकर। अपने दायरे और दायरे से बाहर जाकर भी माँ उसके लिए संजीवनी बूटी ले ही आती थी।

एक दिन हुआ यूं कि नंदिनी के स्कूल में वार्षिक कार्यक्रम था और उस कार्यक्रम में नंदिनी का नृत्य था। पिछले दस दिनों से नंदिनी छुप-छुपकर नृत्य का अभ्यास कर रही थी और उस दिन की बाट जोह रही थी जब वह स्टेज पर अपना नृत्य प्रस्तुत करेगी। भीतर ही भीतर उसने अपने नृत्य का सारा इंतज़ाम कर लिया था कि कब-कब वह क्या पहनेगी, कैसे सजेगी ? नंदिनी के जीवन में बहार आ जाती थी जब-जब वह किसी कार्यक्रम में अंश ग्रहण करती थी। ऐसा लगता जैसे जीवन में नवीनता का संचार हुआ हो। हर क्षण वह नृत्य की भाव-भंगिमा, ताल-लय पर नृत्य का सृजन करती। हर वक़्त उसकी ख्वाहिश यही रहती कि वह मंच पर नृत्य करती रहे। तालियों की गड़गड़ाहट गूँजती रहे। वह सब के हृदय में बस जाना चाहती है। आज ही वह दिन है जिसका वह महीनों से इंतज़ार कर रही है। आज इंद्रदेव कुछ ज्यादा ही आनंदित नज़र आ रहे हैं। सुबह से ही लगातार बारिश टिप-टिपा रही थी और शाम होते-होते इंद्रदेव ने अपना रौद्र रूप धारण कर लिया था। नंदिनी तैयार बैठी थी कि कब बारिश रुके और वह स्कूल के लिए निकले। बारी-बारी दोस्तों के फ़ोन आ रहे थे कि नंदिनी घर से निकली या नहीं। पापा को नंदिनी के नृत्य के बारे में कुछ भी नहीं पता था। लगातार बारिश को देखते हुए पापा ने स्कूल जाने से साफ मना कर दिया। नंदिनी के पैरों तले से जमीन खिसक गई। वह कह देना चाहती थी कि जाना बहुत जरूरी है पर पापा के आगे

नंदिनी की एक न चलती और न ही उसमें इतनी हिम्मत थी कि वह कुछ कह सके।

एक बारिश इंद्रदेव बरसा रहे थे तो दूसरी बारिश नंदिनी की आँखें बरसा रहीं थी। आज तो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दोनों में प्रतियोगिता शुरू हो गई है कि देखें कौन अंत तक टिका रहता है। नंदिनी अपनी भावनाओं को काबू में रखकर माँ के पास गई। वह माँ, जो नंदिनी के हर घाव की इलाज थी, वो संजीवनी थी जो नंदिनी को हर उस कष्ट से निकालती जहाँ जाकर हर रास्ता खत्म होता था। माँ नंदिनी की हर उलझन, हर कसक, हर तड़प को समझती थी। कभी-कभी तो उसके बिन कहे ही समझ जाती थी। पापा को कोई अगर कुछ कह सकता, पापा के फ़ैसले को चुनौती दे सकता था तो वह थी माँ।

माँ ने नंदिनी से कहा- अपने श्रृंगार की सारी चीजें बैग में डाल लो, बस में पहन लेना। चुपचाप बैठकर बारिश के कम होने का इंतज़ार करो। शायद भगवान की भी यही इच्छा थी कि नंदिनी को उसका हृदय की इच्छा पूरी करने दे। बारिश के थोड़ा थमते ही मम्मी ने पापा से कहा- बारिश थम गई है, इसको स्कूल मैं लेकर जा रही हूँ। समय से दोनों वापस लौट आएंगे। मम्मी की बात को काटने की पापा में हिम्मत न थी। मम्मी के ऐसा कहते ही नंदिनी के चेहरे पर फिर से बिजली- सी चमक आ गई। मम्मी का हाथ पकड़कर नंदिनी निकल पड़ी अपने सपने को पूरा करने। हर बार की तरह वह इस बार भी फूलों की तरह लहराती, झूमती, लयबद्ध होकर नाचती गई। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे पवन देव स्वयं ही उसको अपने वेग में झूला रहे हैं और वह मुस्कुराती हुई संगीत के धुन पर चली जा रही है।

ऐसे कई किस्से है जो नंदिनी और उसके नृत्य प्रेम की गाथा सुनाते हैं और एक बार फिर नंदिनी के सपने को जीवंत कर देते हैं। परंतु जैसे-जैसे नंदिनी बड़ी होती गई नृत्य से वह दूर होती चली गई। धीरे-धीरे नृत्य गौण होता गया और पढ़ाई एवं अन्य चीजें मुख्य होती गई। चंचल नंदिनी शांत और गंभीर होती गई और फिर शादी से उसके जीवन में नया बदलाव आया। जो नवीन भी था और पिछले जीवन से अलग भी। शादी के साल बीतते ही यामी ने आकर ज़िंदगी को नया रंग दिया और इस रंग ने नंदिनी को पूर्ण रूपेण परिवर्तित कर दिया। अब वह सिर्फ एक पत्नी और एक माँ थी।

नंदिनी के नृत्य प्रेम के बारे में जानकर मैंने पास के नृत्य कला में जाकर नंदिनी के प्रशिक्षण के लिए बात की और नंदिनी को जब इस बारे में बताया तब पहले तो वह एकदम सन्न-सी हो गई। स्वाभाविक होने के बाद हाँ और ना कहने की स्थिति में भी न थी। उसकी चुप्पी चीख चीख कर आँखों की चमक से हामी भर रही थी। जब से नंदिनी ने नृत्य प्रशिक्षण शुरू किया है, एक बार फिर से वह नई नई सी लग रही है। आजकल उसकी आँखों में वह मुस्कान झलकती है जो शादी के दस वर्षो में मैंने कभी ना देखी थी। आज ही वह दिन है जहाँ से नंदिनी अपने जीवन की उस पारी की शुरुआत करने जा रही है जिसकी ललक उसको उस समय से है जब से उसने होश संभाला है। व्यक्ति को वह कार्य जरूर करना चाहिए जिसमें वह केवल आनंदित ही नहीं वरन् प्रफुल्लित भी होता हो। जिस कार्य को करने में आत्मिक शांति की प्राप्ति हो। जब उस कार्य को करने में शरीर ही नहीं आत्मा भी लीन हो जाए।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

व्यंग्य

दीपावली का बोनस

• जे. जे. श्रीवास्तव
से.नि. पर्यवेक्षक, महालेखाकार का कार्यालय (ले. एवं हकदारी) द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर

दीपावली का त्योहार चन्द कदमों की दूरी पर ही खड़ा था। मैं होली के रंगे-रंगाए कपड़े पहनकर, फटा टूटा कैप पहनकर, एक "क्लास वन" के खतरनाक आतंकवादी की तरह पूरा चेहरा ढंके हुए (ताकि कॉलोनी में कोई पहचान न ले) सुबह-सुबह नसैनी पर दो घंटे से लटका हुआ, अपने मकान के चौखटे पर पुताई कर रहा था। तभी हमारी श्रीमतीजी का प्यारा सा वाक्य हवा में ऐसा गूँजा कि मेरे हाथ से डिस्टेम्पर की बाल्टी गिरते गिरते बची।

"अब क्या नौ इंच की दीवार को घिस घिसकर चार इंच की करने के बाद ही नीचे उतरोगे, जो घर के काम से बचने के लिए आराम से नसेनी पर बैठे हुए हो। या फिर बाहर से मकान की चौड़ाई नाप रहे हो। ऑफिस क्या आज मैं जाऊँगी? पता नहीं क्या, कि आज तुम्हें बोनस मिलने वाला है" हमारी श्रीमतीजी कुछ ऐसे दहाड़ी कि मेरे भीतर का शेर दुम दबाकर जंगल की तरफ भाग गया।

मैंने तुरंत नसेनी से छलाँग मारी और मात्र बीस मिनट में ही अपनी मोटर साईकिल ऑफिस की दिशा में हाँक दी।

दुर्भाग्यवश उस दिन बोनस नहीं बँट सका। शाम को ज्योंही मैंने घर के अंदर प्रवेश किया, अचानक मेरे सीने में इतना भयानक दर्द उठा कि खूँटी पर माला पहने हुए स्वर्गीय दादाजी याद आ गए। मैं तुरंत एक खटारा, पुराने टैम्पू की तरह पलंग पर औंधे मुँह फैल गया। तब तक हमारी इकलौती प्राण प्यारी पत्नी 'मंजू हाथ में टूटे हैंडिल वाला चाय का प्याला इस प्रकार हथेली पर रखकर लाई जैसे किसी साँप के सामने दूध का प्याला रखने के लिए ले जा रही हो। उसने प्याला टेबल पर रखा और अपनी आदतन कड़वी-प्यारी शैली में बोली "ये तुम उल्टे क्यों लेटे हो। क्या आज फिर कोई मुँह छुपाने वाली हरकत करके आए हो?"

"अरे चुप भी करो भाग्यवान। यह दिल का मामला है" मैं कराहते हुए ऐसे बोला जैसे मात्र घंटे दो घंटे का ही मेहमान हूँ।

"क्या कहा दिल का मामला है। हे भगवान इस उम्र में भी तुम अपनी हरकतों से बाज नहीं आओगे" हमारी श्रीमतीजी ने भयानक रूप से रोने की पृष्ठभूमि तैयार कर ली। उसके मुँह से समुद्री जहाज के बंदरगाह छोड़ते समय बजने वाली सीटी की आवाज आने लगी और आँखों से तारपीन का तेल बहने लगा। टेबल पर रखी चाय तो वह कभी की कोहनी मारकर फैला चुकी थी, जिसे मेरी जगह मेरा पालतू कुत्ता मुझे चिढ़ा-चिढ़ाकर चाट रहा था।

"अरे चुप भी करो। तुम्हें मुझ पर शक करने, बेस्वाद खाना पकाने के अलावा कुछ और भी आता है कि नहीं? वो क्या कहते है कि कौन से डॉक्टर, मेरा मतलब कौन से हकीम के पास भी नहीं था शक का इलाज और तुम। मर गया रे। मेरे दिल में भयंकर दर्द इतना कहकर मैं अपने 'डबल बैड' पर चारो तरफ ऐसे घूमने लगा जैसे बैड पर बिछी चादर ठीक कर रहा होऊँ।

"अरे! यह तुम्हारे दिल को क्या हुआ। यह तुम बार-बार अपनी कमीज की जेब पर हाथ क्यों रख रहे हो। क्या जेब में बोनस के रूपये रखे हुए हैं?" मंजू ने मुझे जेब के नीचे झेलम एक्सप्रेस की तरह धड़धड़ाते दिल को हाथ से दबाते हुए देखकर पूछा।

"अरे अब जल्दी से डॉक्टर रस्तोगी को फोन करोगी या अब सीधे शव-वाहन वालों को ही फोन करने का इरादा है?" मैं दर्द से कराहता हुआ गंभीर मुद्रा में बोला।

तब कहीं मंजू ने वक्त की नजाकत को समझा और कुछ गंभीर हुई, क्योंकि वह यह बात तो अच्छी तरह समझती थी कि घर के 'आवश्यक' और उसके अनाप-शनाप 'अनावश्यक' खर्चों की बैलगाड़ी यही 'बैल' खींचता है अर्थात तमाम खर्चों का भारी बोझ उठाकर चलने वाला अकेला 'गधा'। वह उठी और फोन पर कोई नम्बर डायल करने लगी। इस बीच वह मुझे निरंतर घूर रही थी, मानो देख रही हो कि फोन डॉक्टर को करना है कि शव वाहन वालों को।

चन्द मिनटों में ही डॉ. रस्तोगी का चौपाया (कार) मेरे घर की चौखट पर आकर टिक गया। 'कार डैक' पर "चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है" फिल्मी भजन बज रहा था, जो मुझे साफ-साफ "यमराज ने बुलाया है" सुनाई दे रहा था।

"क्या मरीज अभी जिन्दा है?"- डॉक्टर ने घर में घुसते ही अपनी फीस पक्की की।

"पता नहीं डॉक्टर साहब। अभी कुछ देर पहले तो ऐसे कर रहे थे जैसे मैंने बीस तोले का हार माँग लिया हो" मंजू ने फिर एक व्यंग्य जड़ दिया।

"चिन्ता मत कीजिए अब मैं आ गया हूँ और मेरा यह रिकॉर्ड रहा है कि मैंने एक भी मरीज को मेरी फीस दिए बिना मरने तक नहीं दिया है, फिर आपके पति किस खेत के मूली हैं!" डॉक्टर अपने सौ फीसदी दाँत और पचास फीसदी हँसी दिखाते हुए बोला, हालांकि दोनों ही नकली थे।

"फिर तो आप जरा जल्दी कीजिए। मुझे मरीज की इतनी चिन्ता नहीं है, जितनी आपके रिकॉर्ड टूटने की है। कितनी मुश्किल से बन पाता है कोई रिकॉर्ड ! मरीज तो आपको हजारों मिल जायेंगे, मगर एक बार टूटा हुआ भला रिकॉर्ड कैसे दुबारा बन सकेगा"- इतना कहकर मंजू डॉक्टर को बैडरूम में ले आई और बोली- "ये देखिए डॉक्टर साहब ऐसे गुलाटियाँ खा रहे है, जैसे फीका दूध पीकर ऊपर से शक्कर खाकर मिला रहे हों।

"कौन आया है मंजू? डॉक्टर या शव वाहन का ड्राइवर ? " मैंने आंशिक हड़ताल के समय आधे खुले बाजार की तरह अपनी एक आंख खोलकर पूछा।

डॉक्टर साहब हैं, तुम चिंता मत करो, यदि डॉक्टर साहब के हाथ से बात निकल जाएगी तो भगवान कसम, मैं शव वाहन वालों को भी फोन कर दूँगी। डॉक्टर साहब आप इनका 'चैक अप' कीजिए, तब तक मैं शव वाहन वालों का नम्बर 'वन नाइन सेवन' से पूछ लूँ डायल करने लगी। इतना कहकर मंजू वाकई फोन पर कोई नम्बर डायल करने लगी।

"क्या यह आपकी असली पत्नी है" डॉक्टर ने मेरी नब्ज पकड़कर पूछा।

"क्या?" पत्नी भी क्या नोट है, जो असली या नकली होगा।"

"आप मेरा मतलब नहीं समझे श्रीवास्तव साहब।"

"मैं सब समझ रहा हूँ डॉक्टर साहब।"

"क्या समझ रहे हो।"

"यही कि आप मुझे देखने से ज्यादा मेरी पत्नी को देख रहे हैं।"

"लेकिन उन्हें देखने की फीस तो नहीं मांग रहा।"

"फीस तो मैं तुम्हें खुद को देखने की भी नहीं दूँगा, यदि तुमने मेरा जल्दी से मेरा जल्दी चैक अप नहीं किया" मैं डॉक्टर को धमकी देते हुए बोला।

धमकी सुनते ही डॉक्टर चतुर्भुज हो गया। उसने एक ही झटके में मेरी कमीज कफ से पकड़ी और कंधे तक फाड़ दी तथा "ब्लड प्रेशर" की बेल्ट मेरी भुजा पर कसकर बाँध दी और रबड़ की बॉल दबाकर ब्लड प्रेशर चैक करने लगा।

"अरे तुम डॉक्टर हो या किसी कपड़े की दुकान के घटिया नौकर। मेरी नई कमीज क्यों फाड़ दी? कमीज की बाँह ऊपर नहीं सरका सकते थे क्या?" मैं अपनी दोनों आँखों को सगाई की परात की तरह बड़ी करते हुए दहाड़ा।

"आप ही तो कह रहे थे जल्दी करो, वरना फीस नहीं दूँगा। क्या आपकी पचास रूपये की कमीज के चक्कर में, मैं अपने तीन सौ रूपये खटाई में डाल लूँ"- डॉक्टर अपनी आँखें मुझसे भी बडी करते हुए चिल्लाया।

"क्यों डॉक्टर साहब को परेशान कर रहे हो" मंजू मुझे डाँटती हुई बोली।

डॉक्टर ने पुनः मेरा हाथ छोड़ दिया और मंजू को टुकुर-टुकुर ताकने लगा। "क्यों अब क्या हुआ डॉक्टर साहब। मुझे यह बात किस तरह समझानी होगी कि आप मुझे देखने आए हैं, मेरी पत्नी को नहीं" मैं डॉक्टर को फिर टोकते हुए बोला।

"हैं ! क्या कहा?"- डॉक्टर ऐसे बोला जैसे मैंने उसे गहरी नींद से जगा दिया हो।

"डॉक्टर साहब! डॉक्टर साहब! मैं आपको याद दिला दूँ कि मेरे सीने में भयानक रूप से दर्द हो रहा था। आपको फोन करके मेरे इलाज के लिए यहाँ बुलाया गया है। आपकी ब्लड प्रेशर मशीन की बेल्ट मेरी भुजा पर काफी देर से बंधी हुई है और आपको यह रबड़ की बॉल दबाकर मेरा ब्लड प्रेशर चैक करना है" - मैं डॉक्टर को धीरे-धीरे किसी बच्चे की तरह समझाता हुआ बोला।

"जी हाँ! अभी चैक करता हूँ" कहने के साथ ही डॉक्टर गुस्से में रबड़ की बॉल को जल्दी-जल्दी दबाने लगा किन्तु उसकी नजरें मंजू पर ही टिकी हुई थीं। मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैं मंजू से बोला "अरी भागवान! क्या तुम्हें घर में कोई काम नहीं है, जो बेचारे डॉक्टर साहब को काम करने में रूकावट डाल रही हो। वैसे भी डॉक्टर का काम बड़ा रिस्की होता है। इधर जरा सी लापरवाही हुई और उधर मरीज का काम लग गया। वैसे भी मेरा काम लगने में अब अधिक समय नहीं रह गया है" मैं निराशा भरे शब्दों में बोला।

"कैसी बातें करते हो डियर ! क्या घर का काम तुम्हारे काम लगने से ज्यादा महत्वपूर्ण है। मेरी माँ ने मुझे यही संस्कार दिए हैं कि पतिव्रता पत्नी को, पति के अंतिम समय में उसके सामने ही रहना चाहिए, भले ही किचन में बिल्ली दूध पी जाए। अगर तुम्हारे कहने पर मैं उधर किचन में गई और इधर तुम्हारा काम लग गया तो तुम्हें हन्ड्रेड परसेन्ट नरक में स्थान मिलेगा, वह भी तृतीय श्रेणी में" - मंजू ने हमें बच्चे की भाँति हड़काया।

"नर्क की तृतीय श्रेणी में तो मैं बीस वर्षों से रह रहा हूँ, वह भी दुश्मनों के बीच और डॉक्टर साहब आप अब पुनः मेरी तरफ लौट आइये" मैंने डॉक्टर को एक बार फिर कलाई छोड़कर मंजू की ओर टकटकी लगाकर ताकते हुए देखकर कहा।

"हैं ! क्या कहा? वो श्रीवास्तव जी आपका ब्लड प्रेशर बहुत बढ़ गया है।"

"वह तो आपके कारण बढ़ गया है।"

"नहीं श्रीवास्तव साहब, आप गलत समझ रहे हैं। वाकई आपका ब्लड प्रेशर ....!

"वो आपके जाने के बाद अपने आप सामान्य हो जाएगा। कृपया आप मेरा ब्लड प्रेशर सामान्य करने में शीघ्र मेरी मदद करें" मैं एक 'शर्म-प्रूफ' नेता की तरह दोनों हाथ जोड़कर बोला।

डॉक्टर ने बाहर आकर अपना चौपाया हाँका और कार डैक पर "हम छोड़ चले हैं महफिल को, याद आए कभी तो ..." फिल्मी गीत सुनाता हुआ वहाँ नौ दो ग्यारह हो गया।

डॉक्टर के जाने के बाद मैंने राहत की साँस ली और कमीज उतारकर खूँटी पर टांगने लगा, तभी मंजू मेरे कंधे पर हाथ रखती हुई बोली"क्यो जी, एक बात तो बताओ। तुम ये दो घंटे से ये नौटंकी मुझसे "बोनस' छुपाने के लिए ही कर रहे थे न?"

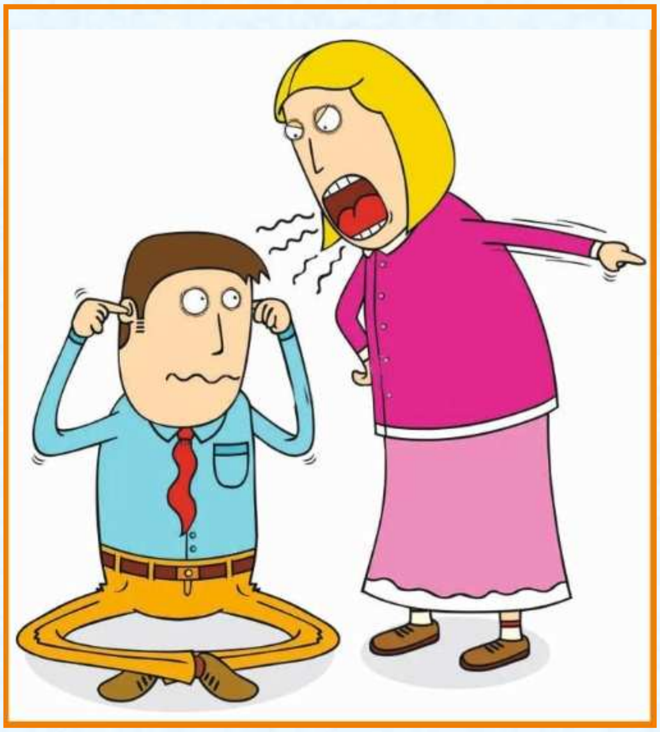

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तीमारदार

• आशीष
सहायक लेखा अधिकारी, प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा, चंडीगढ़

कालूराम एक साधारण कर्मचारी था, उसके जीवन में ज्यादा कुछ खास नहीं था। रोज सुबह ऑफिस के लिए तैयार होना, समय से ऑफिस जाना, शाम को समय से घर आना, कोई भी किसी प्रकार की बुरी लत नहीं और न ही ज्यादा ऊँचे ख्वाब। कालूराम के घर का खर्च भी सीमित था, बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ते थे तो पैसे लगना तो दूर की बात, मिल और जाते थे। पत्नी भी साधारण स्वभाव की थी, ज्यादातर मायके से मिले कपड़े ही काफी होते थे। ब्यूटी पार्लर जाने की कभी झूठ-मूठ भी कहती तो कालू राम उससे कहता "तुम तो वैसे ही इतनी सुंदर हो, तुम्हे क्या जरुरत है पार्लर जाने की... अपनी नेचुरल ब्यूटी को पार्लर के मेकअप से मत खराब करो" इतना सुनते ही बीवी फूले नहीं समाती थी और कालू राम का खर्च बच जाता था।

उसके घर में एक चीज का विशेष ध्यान रखा जाता था वो दिन भर में जिस भी चीज पर जितना खर्च करते उसे चीज का हिसाब एक डायरी में लिखा जाता था जैसे सब्जी पर कितना खर्च किया, दूध पर कितना खर्च किया बीमारी पर कितना खर्च किया, या गाड़ी के तेल में कितना खर्च किया, यह सभी बातें डायरी में डाटा शीट बनाकर लिखी जाती थी, ये काम रोजाना रात हर हाल में किया जाता था, चाहे कुछ भी हो जाए पर ये चीज वो कभी मिस नहीं करते थे। वह हर महीने की अंत में हिसाब करते थे कि किस चीज पर कितना खर्च हुआ तथा अगले महीने में इस खर्च को कम करने के लिए प्रयास करते थे

जिंदगी यूं ही समांतर चली जा रही थी फिर एक दिन अचानक सुबह के 4:00 बजे अचानक उसकी पीठ में भयंकर दर्द शुरू हुआ, दर्द इतना भयंकर था कि वह उठ कर बैठ भी नहीं पा रहा था। जैसे ही वह खड़ा होने की कोशिश करता गिर जाता। वह बुरी तरह घबरा गया कि यह क्या हो गया परंतु दर्द था की कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। किसी तरह हॉस्पिटल गया वहां पर उसका एक्सरे हुआ तथा दवाई देकर उसको घर भेज दिया गया।

जब 5 दिन की दवाई खाने के बाद में कुछ भी हल नहीं निकला तो वह दोबारा हॉस्पिटल गया। अब उसकी चिंता और बढ़ चुकी थी क्योंकि दर्द विकराल रूप ले चुका था। इस बार डॉक्टर ने एमआरआई करने के लिए लिख दिया। मरीज की रिपोर्ट में पता चला कि गर्दन की कोई नस ब्लॉक हो गई है जिसके कारण यह भयंकर दर्द हो रहा था। डॉक्टर ने यहां तक चेतावनी दे दी थी कि अगर इसका ऑपरेशन नहीं होगा तो तो सीधा हाथ बिल्कुल कमजोर पड़ जाएगा तथा भविष्य में इससे कोई काम नहीं कर पाओगे।

घर में पूरे मातम का माहौल था धीरे-धीरे बात सभी रिश्तेदारों को पता चल गई शाम को रोज ऑफिस के साथी हाल-चाल पूछने आ जाते थे। अब जब लोग हाल-चाल पूछने आते तो चाय पानी तो बनता ही था। दिन में दूध, बिस्किट और नमकीन का खर्च पहले से 3 गुना तक बढ़ गया था।

फिर दूर दूर से रिश्तेदारों का आवगमन शुरु हो गया, चूँकि चंडीगढ़ शहर सबके लिए एक नया शहर था तो किसी को वहाँ के रास्तों का पता नहीं था जो भी रिश्तेदार आता स्टेशन से ही फोन कर देता हमको लेने आ जाओ।

कालूराम का बेटा किसी तरह गाड़ी चलाकर स्टेशन तक पहुंचता और रिश्तेदारों को उसमें लादकर घर तक ले आता, डर भी लगता था उसको क्योंकि उसका भी सिर्फ लर्नर लाइसेंस ही था, पक्का लाइसेंस अभी बना नहीं था। घर आते ही सबसे पहले सभी रिश्तेदारों का चाय नाश्ता तैयार होता क्योंकि उनकी नजर में यह एक सरकारी कर्मचारी का घर था, और लोगों के अंदर यह एक वहम होता है कि सरकारी कर्मचारी की आय बहुत ज्यादा होती है तो उनकी खातिरदारी में कोई कमी भी नहीं छोड़ सकता था। चाय नाश्ता करके रिश्तेदार थोड़ा-थोड़ा हाल-चाल पूछते पूछते, कैसा दर्द है? यह सब कैसे हो गया ? बस यही सब की मिली जुली बातें होती थी कई बार तो कालूराम बही रटी रटायी गई बातों, की कैसे यह सब हुआ, दिन में 10 लोगो को अलग- अलग बोलना था जिसके कारण वह खुद भी विचलित होने लग गया था।

हमारे देश में एक बड़ी खास बात है कि यहां पर हर कोई, किसी ना किसी बीमारी से ग्रस्त है तथा हर इंसान के पास दूसरे की बीमारी ठीक करने के 10 नुस्खे तैयार रहते हैं। सभी रिश्तेदार अपनी अपनी राय देते - कोई देसी इलाज की कहता, कोई फिजियोथैरेपी की कहता, कोई इंग्लिश दवाई की कहता तो कोई कोई एक्सरसाइज करने की सलाह देता तो कोई चुपचाप आराम करने की सलाह देता। पर वो बेचारा सब की बातें सुनता और दर्द से कराहता रहता।

रिश्तेदार थोड़ी देर अपनी सांत्वना देने के बाद बाहर बैठ जाते , कुछ पार्क में चले जाते , फिर उनकी वही बातें शुरू हो जाती है अपने रिश्तेदारी की बातें आम जिंदगी बातें, एक दूसरे की चुगली करना, एक दूसरे को नीचा दिखाना, अपनी तारीफें करना और दूसरों में कमियां निकालना। यही तो होता है जब चार रिश्तेदार इकट्ठे हो जाते हैं।

अगले दिन कुछ रिश्तेदार जब बैठे-बैठे ऊब गए तो आपस में विचार करने लगे चंडीगढ़ आए हैं तो चलो क्यों ना रॉक गार्डन, सुखना लेक ही घूम आते हैं।रिश्तेदारों का यह मन देखकर कालूराम की पत्नी बोली इनको आज पीजीआई दिखाने ले जाना है बेटे के साथ ही चले जाओ। दिखाने के बाद वहीं से चले जाना। पीजीआई में काफी भीड़ होती है वहां पर दो-तीन घंटे बैठने के बाद जब रिश्तेदार बोर होने लगे तो उन्होंने बेटे से कहा बेटा लगता है आज शाम यही हो जाएगी, तुम ऐसा करो, पापा को दिखाओ हम जरा घूम के आते हैं फोन कर देना हम जल्दी ही आ जाएंगे।

संयोग देखिए अचानक वहां एक डॉक्टर की जगह तीन डॉक्टर बैठ गए और जहां शाम होने वाली थी एक घंटे में ही काम हो गया मगर रिश्तेदार तो दोनों जा चुके थे, बच्चा छोटा था, वो अकेला था उसमें इतनी ताकत भी नहीं थी कि पिता को स्टेचर पर लिटाकर अकेले खींच सके। मरता क्या ना करता, किसी तरह लोगों की मदद से वह स्टेचर खींचकर बाहर तक लाया और कार में अपने पिता को जैसे तैसे घर आया। जैसे ही वह घर पहुंचा, रिश्तेदारों का फोन आया, अरे बेटा! हम तुम्हें पीजीआई में ढूंढ रहे हैं तुम कहां रह गए? बेटा झुंझलाते हुए बोला अंकल आप घर आ जाओ, मैं घर आ गया हूं।

“पर बेटा हमें तो रास्ता नहीं मालूम तुम लेने आ जाओ”, मरता क्या ना करता ! बेचारा गाड़ी उठाकर

फिर उनकी तरफ चल पड़ा, मन ही मन सोच रहा था की पिताजी को ले जाने के लिए मैं कभी गाड़ी नहीं उठाता और उनको लाने के लिए मुझे गाड़ी चलानी पड़ रही है। डर भी रहा था क्योंकि उसके पास पक्का लाइसेंस भी नहीं था। किसी तरह रिश्तेदारों को घर तक लेकर पंहुचा।

रात को खाना बनता तो सबकी अलग-अलग पसंद होती किसी को यह सब्जी नहीं खानी किसी को यह सब्जी नहीं खानी बच्चों के अलग नखरे थे कालूराम की पत्नी की वैसे ही कम मुसीबत थी थोड़ी और बढ़ गई एक तरफ पति बीमार दूसरी तरफ रिश्तेदारों का झुंड पर किसी को कुछ कहानी नहीं सकते थे क्योंकि वे भी बहुत दूर से देखने आए थे तो इतना तो हक बनता है उनका दो-तीन दिन रहने के बाद रिश्तेदारों का निर्णय हुआ चलो बेटा अब चलते हैं उम्मीद है कि तुम अब जल्दी ठीक हो जाओगे। बेटे को फिर उन्हें स्टेशन छोड़ने जाना पड़ा कालू बेशक बीमार था मगर शाम को खर्च की डायरी लिखना कभी नहीं भूलता।अस्वस्थता के बावजूद दिन भर में जिस जिस चीज पर जितना खर्च होता वह सारा दर्ज करता। एक हफ्ते बाद पत्नी की मायके से पत्नी के चाचा-चाची, पत्नी की मां और पत्नी का भाई भी कालू को देखने घर आ गए।

ससुराल वाले काफी पैसे वाले थे तो वह अपनी गाड़ी से आए थे। हाल-चाल पूछने के बाद उनका भी वही हाल था जो पहले आए रिश्तेदारों का था। उन्होंने भी अपनी अपनी राय दी। ऐसे इलाज करो, वैसे ही इलाज करो, यह चीज खाना, वह मत खाना। चाचा जी तो अपने साथ 750 एमएल की अपनी थोड़ी सी "ताकत की टॉनिक" भी लेकर आए थे- कह रहे थे इससे नस की ब्लॉकेज खुल जाएगी।

ससुराल वालों की अच्छी बात रही कि सुबह आए और शाम को जाने के लिए तैयार हो गए परंतु सास ने सोचा अब इतने दिनों बाद बेटी के घर आई हूं तो एक महीना रह लेती हूं, वैसे भी कहां रोज रोज आना होता है,

मां के आ जाने से पत्नी के चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान थी। इतने दिनों तक तनाव झेलने के बाद पहली बार उसको कालू खुश देख रहा था पर वो और अकेला पड़ गया।

पत्नी कालू को दवाई खाना पीना देकर अपनी मां के पास दूसरे कमरे में बैठी रहती, बैठना भी चाहिए था क्योंकि उसकी मां केवल उसके भरोसे ही तो यहां पर आई थी। दो साल के बाद अपनी मां से मिल रही थी तो वह चाहती थी कि जितना से ज्यादा से ज्यादा वक्त अपनी मां के साथ बिता सके किंतु कालूराम का दर्द और उसके साथ उसका अकेलापन दोनों ही उसको और परेशान करने लगे थे धीरे-धीरे वक्त गुजरता गया दर्द में कुछ कमी आई काफी इलाज के बाद शरीर को कुछ आराम मिलने लगा। शायद इन्सान का शरीर एक वक्त के बाद खुद को अपने आप ही ठीक करने लगता है।

धीरे धीरे उसने ऑफिस जाना शुरू किया वहां जाकर वह कम से कम मानसिक तौर पर ठीक रहता था काम के कारण वह उसका ध्यान दर्द से थोडा हट जाता था। धीरे धीरे जीवन पटरी पर आने लगा।

महीने के अंत में जब उसने पूरे महीने के कुल खर्च का हिसाब लगाया तो पता चला कि उसके इलाज से ज्यादा खर्च मेहमानों के आवागमन और खातिरदारी में ही खर्च हो गया है ...। इलाज का कुछ खर्च तो ऑफिस से वापस भी मिल जाता पर इसके बारे में क्या करे। वह मन ही मन सोच रहा था कि आगे से कुछ भी हो जाए, किसी रिश्तेदार को जब तक बहुत जरूरी न हो, तब तक किसी बीमारी के बारे में खबर नहीं होने दूंगा।

कविताएँ

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंजान शहर

• सुश्री रिचा कुमारी
लेखाकार, प्रधान महालेखाकार का कार्यालय, (लेखा एवं हकदारी–II) नागपुर, महाराष्ट्र

किस शहर को अपना कहूँ, किस शहर को अंजाना,
जहाँ हमने जन्म लिया या जिसने दिखाया जमाना,
एक के पास हमारे अपने है तो दूसरे के पास सपने,
अपनों ने हाथ पकड़ के घुमाया तो,
दूसरे ने बिना सहारे चलना सिखाया,
महफूज थी मैं अपनों के बीच अपने शहर मे,
जैसे कोई जहाज तैयार हो उतरने को तूफ़ानी लहर मे,
छोड़ आए वो शहर जहाँ हमें सब जानते है,
यहाँ आके पता चला कि कोई फर्क नहीं पड़ता
कि आपके पिता कितना कमाते है,
एक पल को मैं दहल सी गई,
कदमों को पीछे कर एक जगह ठहर सी गई,
ये अंजान शहर कितना अनजाना है,
मैं खड़ी थी एक तरफ दूसरी तरफ पूरा जमाना है,
भीड़ का हिस्सा बनूँ या लौट जाऊँ
ये सवाल मैं किससे पूछूँ,
अभी मैं किधर जाऊँ,
काली सड़क, सुनसान रातें घर की याद दिलाती हैं,
भूख लगी है थोड़ी थोड़ी,
क्या खाओगी पूछने वाली माँ नजर नहीं आती है।
माँ के पल्लू को छोड़ कर तकदीर से हाथ मिलाया है,
एक ही दिन में इस अनजान शहर ने
जिंदगी का हर रंग दिखलाया है,
इस अनजान शहर की कुछ कहानियाँ सुनी है हमने,
कई अनजानों के सपने पूरे किए हैं इस शहर ने,
मैं भी यहाँ अपनी तकदीर आजमाऊँगी,
इस शहर मैं अपना एक घर बनाऊँगी,
ऊंची इमारते दौड़ती सड़कें क्या मुझे भी अपनाएंगीं,
लड़खड़ाएं गर कदम मेरे, क्या इसकी बाहें मुझे उठाएंगीं,
शहरों की तंग गलियाँ कुछ बातें बतलाती है,
लौटने नहीं अपनाने आई हूँ,
दोनों बाहें फैला कर इस शहर को अपनाने आई हूँ,
इस अंजान शहर मे,
मेरी मेहनत एक दिन रंग लाएगी,
मेरे अपनों की पहचान मेरे नाम से करवाएगी।

डॉ. भीमराव राव अंबेडकर

• **सैयद इकबाल अली**
सेवा निवृत (एएओ), महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी), नागपुर, महाराष्ट्र

अर्श से उतरा एक सितारा
माँ भीमाई की गोद में
निर्बल दुर्बल दीन दुःखी
सब इसकी आग़ोश में
अज्ञान के छंट गये बादल
चहुँ ओर चंदाई है
आज का दिन है दिन ईद का
आज दिवाली आई है।

पसमंदों के लिए जीया वो
पसमंदों पर मरता था
हाय वो इंसां की सूरत में
जैसे एक फ़रिश्ता था
उसने ही तो हर दिल में
समता की जोत जलाई है
आज का दिन है ईद का दिन
आज दिवाली आई है। ——

मरकज़ था वो इल्म का
क़ानून का गहवारा था
धर्म निरपेक्ष दीन था उसका
मुरीद कबीर कहलाता था
उसकी ही दिव्य दृष्टि से
संविधान की गीता आई है
आज का दिन है ईद का दिन
आज दिवाली आई है। —

संस्कार और संस्कृति
शब्द बड़े बेमानी है
इंसां पर इंसां का दमन
युग युग की कहानी है
हर इंसां है एक बराबर
भीम ने बात बताई है
आज का दिन है ईद का दिन
आज दिवाली आई है।

अंग्रेजों के समय हमारा
देश कहाँ आज़ाद था
लोग पशु सा जीते थे
जीवन एक अभिशाप था
आत्मसम्मान की चेतना
बाबा ने ही तो जगाई है
आज का दिन है ईद का दिन
आज दिवाली आई है ——

खूब पढ़ो आगे को बढ़ो
इल्म की दुनिया आबाद करो

सच्ची श्रद्धा सुमन यही है
उसके सबक़ को याद करो
पढ़-लिखकर जीवन बगिया में
मतवाली बहारें आई हैं
आज का दिन है ईद का दिन
आज दिवाली आई है। ——

पढ़-लिखकर ही धुलेगी ज़िल्लत
मिटेगी ग़ुर्बत, मिलेगी इज़्ज़त
शिक्षा से ही कर सकते हो
अपनी दुनिया को तुम जन्नत
इस जन्नत को पा ना सको तो
भीम की फिर रुसवाई है
आज का दिन है ईद का दिन
आज दिवाली आई है।

मुसाफिर

राकेश गोदारा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(लेखा परीक्षा – द्वितीय)
केरल, तिरुवनंतपुरम

आज गुजरा गली से एक मुसाफ़िर
यही गीत गुनगुना रहा था
सब ढूंढ रहे थे वजह मुस्कुराने की,
वो इसी वजह से मुस्कुरा रहा था।
कोई आवारा, पागल तो कोई दीवाना बता रहा था
हर पहचान से परे, वो बस चला जा रहा था।
वजह क्यों तलाशता ठहर जाने की
कहा तो, मुसाफिर था बस चला जा रहा था।
काश ! कि वो सुन पाता वो मुसाफिर,
कह रहा था कोई उसे भीड़ में,
सफर आसान होगा, जो कोई साथी होगा
वहीं जो मुसाफिर को खुद बता रहा था।

गुजरा मुसाफिर जो गुनगुना कर के
लिख रहा हूँ, ये मुस्कुरा कर के
निभा रहा हूँ रीत जो मुसाफिर बता गया
बस गीतों को खुद के अनसुना कर के।

गुजरता हूँ गलियों से मैं भी
अनजान, अजनबी मुसाफिर बन के
खुदा के कुछ बन्दे चुन के
किस्से कहानी सब के सुन के।

राजभाषा – हिन्दी

मोहन प्रकाश
कनिष्ठ अनुवादक
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(लेखापरीक्षा – द्वितीय)
तमिलनाडु एवं पुडुचेरी

बता दो सभी को राष्ट्रभाषा हिंदी है हमारी,
है जिसमें हिंद का गौरव भारत का धरोहर।
सत्य, अहिंसा और धर्म का पथ,
भारतीयता, वीरता, उसकी भावना,
हिंदी में रूपांतरित है यह श्रेष्ठता
संस्कृति की अमरता इसमें है निहित ॥
आज विश्व में बढ़ी है हिंदी की मांग,
अपनी पहचान बनाती एक नई धारा।
समझ, सम्मान और भावना का संगम,
भारतीयता का प्रतीक,
हिंदी का संघर्ष भावी समय का संकेत।
सतत चलती रहे हिंदी की राह,
विश्व में फैले भारत का संदेश यहाँ।
सबको आपसी भाईचारा सिखाए,
हिंदी के शब्दों में विश्वास और विश्वास दिखाएं।
75 वर्षों की राजभाषा, हर कदम पर गर्व,
हिंदी के प्रति हमारा प्यार अद्वितीय है।
जीवन की इस लम्बी यात्रा में,
हिंदी ने हमारा साथ निभाया,
समृद्धि की ओर पग बढ़ाया है।
उनका योगदान, उनकी महत्वपूर्ण भूमिका,
हिंदी की इस अद्वितीय उपलब्धि का
हम सब ले रहे सम्मान हैं।

बूढ़ा बरगद

अनुराग श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
ओ०आई०ओ०एस०
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान केंद्र,
प्रयागराज

कितने अरसों बाद मिला हूं, मुझे देख कर डोल रहा है।
बूढ़ा बरगद बगीचे का, बीते किस्से बोल रहा है।
कहता बोलो याद तुम्हें है? मुझ पर चढ़ कर खेला करते,
ऊंची वाली जगह बैठने, सबसे झोल झमेला करते,
मेरी मोटी शाखाओं पर, थक कर लेट ज़रा सुस्ताते,
अक्सर मेरी घनी छांव में, बैठ दुपहरी को बतियाते,
मेरे लहराते वल्कल पर, बिन रस्सी के झूला करते,
हर्ष, उदासी साझा करना, मुझसे कभी न भूला करते,
चित्र उभार रहा बचपन के, मन में मिश्री घोल रहा है,
बूढ़ा बरगद बागीचे का, बीते किस्से बोल रहा है।

होली की मदमस्त टोलियां, मुझको भी रंगा करती थीं।
नन्हे-मुन्नों की किलकारी, मेरा मन चंगा करती थी।
गौरैया का सारा बचपन, मेरी टहनी पर पलता था,
दीवाली का एक दिया तो मेरे नीचे भी जलता था।
अब तो बूढ़ों की टोली भी, नहीं बतकही करने आती,
पुरुवाई जो मुझको प्रिय थी, अब ये मुझको नहीं सुहाती।
बड़े चाव से मुझे देखता, मेरा हृदय टटोल रहा है,
बूढ़ा बरगद बागीचे का, बीते किस्से बोल रहा है।

कहता मेरी शाखाओं पर, अब न गिलहरी आया करती,
पहले जैसे अब गौरेया, सुख दुख नहीं बताया करती।
छोटे बच्चे भी अब मुझ पर, चढ़ कर गीत न गाया करते,
सावन का भी पता न चलता, झूले नहीं लगाया करते।
अब वो बात न पहले वाली, यहां न मेरा मन लगता है,
तुम सारे भी चले गए अब, बड़ा अकेलापन लगता है।
आज मुझे मिलकर भावुक है, मन की गांठे खोल रहा है,
बूढ़ा बरगद बगीचे का, बीते किस्से बोल रहा है।

कहता परिवर्तन तो तय है, मन में कोई रोष नहीं है,
गुजरा दौर गुज़रना ही था, इसमें कोई दोष नहीं है।
इतना स्नेह कमाया जिसने, जीवन भर अभिभूत किया है,
सौ वर्षों के दीर्घ काल में, मैंने जीवन खूब जिया है।
अब तो बूढ़ा हुआ चला हूं, यौवन का सौंदर्य नहीं है,
तभी हुआ परित्यक्त, अकेला, आकर्षण, माधुर्य नहीं है।
अंत भले कैसा भी हो पर, सफ़र बड़ा अनमोल रहा है।
बूढ़ा बरगद बगीचे का, बीते किस्से बोल रहा है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रतीक्षा

श्री एम. कोदंडराम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रशासन/कार्यालय स्थापना/हिंदी अनुभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय), हैदराबाद

आँखें ढूँढती रहीं
न जाने किसको,
उम्र बीतती रही
हम जान नहीं पाए
कि, हमें क्या चाहिए।

कभी सोचा कि प्राप्त हो गया लक्ष्य
आँख खुली तो देखता हूँ,
वहीं के वहीं रह गए
समय हमारे लिए
एक अंक मात्र रह गया।

कुछ प्रश्न हमारे भीतर
बार-बार उत्पन्न होते रहे,
सुखी हैं- या - दुखी हैं
कभी हम जान नहीं पाए,
हम में क्या वास्तव में 'हम' है?
यह मान नहीं पाए।

करवट बदलती रही काया
बचपना नहीं बदला,
जवानी से आई परिपक्वता
मिली या न मिली
पहचान न पाए।

जवाब की खोज में चलते-चलते
प्रश्न को भूल गए,
किंतु जवाब जब मिला
तो फिर से प्रश्न बन गए।

अनगिनत घटनाएँ अनुभव बनती गईं
किंतु हर एक नई घटना के साथ
फिर से अनुभवहीन बन गए।

सुबह की राह में
न जाने कितनी रातें जाती रहीं,
पर हर शाम के साथ
कितनी रातें फिर से आती रहीं।

जीने का संकेत
पलकों के खुलने से
होता अगर
तो हम जीते रहे।

हवा चलती रही,
धरती फिरती रही
हर पूनम अमावस बनती रही,
हम चाँदनी की राह में
चकोर बन गए।

यह समझ रहे थे कि
हमें समाधान की प्रतीक्षा है
जान गए कि
'जीवन ही एक प्रतीक्षा' है।

अँधियारों में दीप जलाएँ हम

• बाल विहारी प्रजापति
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी – द्वितीय), नागपुर, महाराष्ट्र

अँधियारों में दीप जलाएँ हम ॥
कभी तुम दीपक बनना
कभी सूरज बन जाएँ हम ॥
अँधियारों में दीप जलाएँ हम ॥

आसमानों से निकलती दामिनी ॥
पल पल में
कर देती रोशन
प्रकृति का वेश॥
ऐसी चमक बन जाएँ हम
अँधियारों में दीप जलाएँ हम ॥

घर घर हो रौशन
दर-दर हो रौशन ॥
इस प्रकाश पुंज को फैलाएँ हम
अँधियारों में दीप जलाएँ हम ॥

मन से मन को जीत लें॥
तन से न हारें कभी ॥
हौसलों से भर लें उडान
ऐसे गौरवान्वित हो जाएँ हम ॥
अँधियारों में दीप जलाएँ हम ॥

हैं सुख-दुख जीवन के दो किनारे॥
सुख में सब सुख दिखता, दिखते सब कोई ॥
दुख में दुख दिखता, दिखता न कोई॥
ऐसे में जुगनू की चमचम बन जाएँ हम ॥
अंधियारों में दीप जलाएँ हम॥

अगर कभी हो भय का सामना ॥
न घबराना तुम ॥
दिया है प्रभु ने तुम्हें ये जन्म
तब अपनी चमक बिखेरकर ही जाना तुम॥
ऐसी चन्द्रमा की रोशनी से
रोशन हो जाएँ हम
अँधियारों में दीप जलाएँ हम ॥

एक लड़की

सुश्री मैशर जहां
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय), हैदराबाद

चाँदनी रात में वो, एक नन्हीं-सी लड़की,
आँखों में सपने लिए, थी भोली और सच्ची।

बालों में गूँथी थी, खुशबू भरी कलियाँ,
होठों पर खिलीं थी, प्यारी-सी दंतुलियां।

उसकी मुस्कान में थी, संसार की रोशनी,
उसकी हँसी में बसी थी, एक नई-सी कहानी।

घुँघराले बालों में फूलों की महक,
मासूमियत में डूबी, उसकी छोटी- सी झलक।

हर एक कदम पर, वो थी निडर, बेफ़िक्र,
उसकी आँखों में था साहस का अमृत।

वो छोटी-सी लड़की, थी परियों की रानी,
उसके जीवन में बसी थी, एक नई कहानी।

वो सपनों की दुनिया में, उड़ान भरती रही,
खुशियों के गुलाबों से, वो हँसती रही।

उसके साथ था प्यार का, एक प्यारा संसार,
हर पल उसमें बसती थी, एक मासूम बहार।

इसलिए तो कहता है, ये दिल एक बात,
उस नन्हीं-सी लड़की से है, मेरी ये सारी क़ायनात।

तुम

विशाल साव
कनिष्ठ अनुवादक, हिंदी अनुभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय), हैदराबाद

छल प्रपंच से भरी इस दुनिया में,
मुझे सादगी तेरी बहुत अच्छी लगती है।
अच्छा लगता है तेरा,
बातों को सजाकर कहना,
और कहते-कहते बीच में मुस्कुराना।
तू है, तेरी बातें है, तेरी तस्वीरें है
इतने दिन साथ में बिताएँ,
वो हसीन यादें है।
उन यादों के सहारे जी रहा हूँ,
कल्पना की मोतियाँ पिरो रहा हूँ।
अभी-अभी तो साँसें ली थी,
अपने गाँव की गलियों में,
सोचा न था यूँ अचानक से छूट जाएगा तेरा साथ,
और रह जाएगी अधूरी हमारी बात।
मन तो मुसाफ़िर है,
यह तो बस चलना जानता है,
पल दो पल की खुशियों
को ही जीवन मानता है।
तमन्ना है कि रुक जाए ये सुइयाँ घड़ी की,
और माँग लूँ वक्त से कुछ पल उधार,
कोशिश है तू हमेशा साथ रहे मेरे,
न जीना पड़े कभी बगैर तेरे।

बदला मानव

• **आशीष कुमार मीना**
लेखापरीक्षक, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

आज सुबह मेरा मन जाग के सो गया,
मानवजाति से ये कैसा गुनाह हो गया
सबको बचाने वाले पेड़ों को काट दिया
सबको मारने वाले हथियारों का निर्माण किया
क्या वास्तव में आवश्यक ऐसी क्रान्ति थी
या फिर ये सिर्फ एक भ्रांति थी।
क्यों सूरज उगता नहीं अब
पहले जैसा नयनाभिराम
क्यों पंछी चहकते नहीं अब
कुसुम खिलते क्यों नहीं अब।
क्यों बदल गई ऐसी, ये दुनिया
कि मानव को महसूस नहीं हो रहा ।
बदली नहीं अगर धरा तो,
मानव को क्या हुआ ।
माता को अपनी बचाने को
मैं क्या पुकारूँ उसके लाल को।
उसे ही चेतन में बिठाना होगा इस ख्याल को ।
जिनको काटा था बेदर्दी से उनको उगाओ
इस ताण्डव नृत्य से माँ धरती को बचाओ।

जिम्मेदारी

• **राजू बर्मा**
वरिष्ठ लेखापरीक्षक, कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ), कोलकाता

एक बचपन की कहानी थी,
जिसमें गम की कोई ना निशानी थी।
एक ज़िम्मेदारी भरी जवानी है,
जिसकी कीमत हर दिन चुकानी है।

यह बचपन, जवानी, बुढ़ापा,
जिम्मेदारी बोझ बन रहा।
हर एक के कंधे पर,
हर दौर गुजर रहा।

कुछ पता न चला
कब बड़े हुए
कब पापा ने हाथ छोड़ा,
जिम्मेदारियों के बोझ ने कंधे झुका दिए।
सबको खुश करते करते,
पैसों के साथ साथ वक्त भी खो दिए।

वक्त हवा की रफ़्तार से तेज निकल गया,
जिंदगी का एक हिस्सा किस्तों में गुज़र गया।
एहसास नहीं कुछ, कुछ भी नहीं खबर,
की ख्वाहिशों का दौर कैसे किधर गया।

ऐ जिंदगी अब और मुझको बड़ा ना कर,
मुझे मेरे बचपन से बिलकुल जुदा न कर,
इस जिम्मेदारी से मुझे माना रिहा ना कर
पर कैदी की तरह न मुझे इसमें बांधा कर।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जंगल के दो समानांतर दृश्य

• प्रमोद कौरव
सहायक लेखा अधिकारी/हिंदी, कार्यालय महालेखाकार (ले.एवं ह.), राजकोट

माथे पर भय और चिंता की लकीरें दिख रही हैं,
बदन पसीने से लथपथ है,
सांसे बहुत तेज चल रही हैं...।
आखिर कहां से आ रहे हैं आप...?
जी..... उस तरफ दिख रहे जंगल से..।
अच्छा, ऐसा क्या देखा वहां जो ये हालत हो गई है..?
बहुत कुछ,
झुरमुटों में लगी हुई भीषण आग से जल रहे पशु - पक्षी,
बाघ के प्रहार से जान बचाकर
भागते हुए छोटे - छोटे मृगशावक,
चिड़िया के नन्हे बच्चों पर झपटता हुआ बाज,
गाय के नवजात बच्चे को
उठाकर ले जाता हुआ चीता,
प्यास से व्यथित लकड़हारे को डंसता हुआ सांप,
और प्रसव की असीम पीड़ा से कराहती हुई
अपने प्राण तजने वाली हिरनी ...।
लेकिन क्या तुम्हें पता है,
इन सबके अलावा भी जंगल में कुछ ऐसा था
जिसे तुम नहीं देख पाए...?
क्या...?
ऊंचाई से गिरते हुए झरनों का विहंगम दृश्य और
चट्टानों से टकराकर प्रवाहित होने पर
इन झरनों से उत्पन्न शोर,
बाजू में ही अपनी धुन में निरंतर
प्रवाहित हो रही नदी की कल - कल ध्वनि,
लंबे समय से झीलों में भरे हुए
शांत जल की नीरवता,
बरगद के विशाल वृक्ष पर
चहचहाते पक्षियों का कलरव,
पेड़ की छांव में अपनी मां से
चिपककर आराम करते हुए मृगशावक,
नीम के पेड़ पर बैठकर
चोंच लड़ाते हुए तोता - मैना,
वृक्षों के चारों तरफ लिपटी हुई हरी लताएं,
गुलमोहर और पलाश पर खिलते हुए फूल,
संपूर्ण वन में आ चुका नव बसंत और
सुदूर तक फैली हुई असीम शांति...।
जनाब! अगली बार जब जंगल जाइएगा तो
जंगल के इस पहलू को भी देखिएगा...।
शायद आपके मस्तिष्क पर खिंची हुई
ये भय और चिंता की लकीरें गायब हो जाएं ,
फिर से ये बदन पसीने से लथ पथ न हो,
और इन तेजी से चल रही सांसों को आराम मिल सके...।
जंगल का दूसरा दृश्य देखिएगा जरूर...।

नारी

• पंकज अरोरा
लेखाकार, प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा, चंडीगढ़

*नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
जन्म से ही अस्तित्व हीन सी,
एक सखी तू, एक सखी मैं।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
भ्रूण को पैदा करती,
इच्छा को मारती,
कुछ सपने हैं तेरे,
कुछ सपने हैं मेरे,
उड़ जाऊँ पंख लिए
मैं आसमान को छूने.....
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
पढ़ लिख कर सबल बनूँ मैं,
ऊँचाइयों को छू लूँ,
पिता के आँगन में अंगड़ाईयों में झूलूँ,
पल में आँख खुली,
और सपना टूटा!
अब ये क्यूँ मुझसे,
पिता का आँगन छूटा?
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
नये घर का सपना संजोकर,
मैं डोली में बैठी,
पर ना था वो घर अपना,
न समझी मैं थी इतनी भोली!
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
भ्रूण को कोख में पाले,
मैं इठलाती,
हर घर के सपने सजाती।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
टूटे सपने छूटे अपने,
जब आँगन में चिड़ियाँ चहके,
त्याग से तेरे त्याग से मेरे,
इक दूजे की बगियाँ महके।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
छूट गया उड़ने का सपना,
कुछ भी नहीं है,
अब मेरा अपना,
उनके लिए सोऊँ उनके लिए जागूँ,
हर पल उनके पीछे भागूँ,
जिनको मोल नहीं है मेरा,
वो कहते क्या है तेरा?
सब कुछ तो है मेरा।
अस्तित्व मिट गया है तेरा,
अस्तित्व मिट गया है मेरा।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
अब उठ तू सबल बन,
अपनी शक्ति का आह्वान कर।
दिखा दे दुनिया को,
अपने को पहचान कर।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
बिन तेरे सृष्टि नहीं,
किसी के पास ऐसी दृष्टि नहीं,
तू जग की दृष्टि बन।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
दीया नहीं अब ज्योति बन,
जीत की तू मशाल बन,
दिखा दे दुनिया को,
बिन तेरे कुछ नहीं।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं!
केवल नारी ही नहीं,
तू अब वो प्रकृति बन,
हर जीवन का कण-कण है तू,
अब तू वह शक्ति बन।
नारी री है तू;
और नारी हूँ मैं।।*

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मेरी माँ सबसे प्यारी

• विक्रम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा, चंडीगढ़

मैं छोटे से बड़ा हुआ
पैरों पे अपने खड़ा हुआ
माँ का काला टीका लगाना
यानी नजर से है बचाना
माँ का प्यार से समझाना
यानी सुधार है लाना
माँ का हमें गोद में खिलाना
और लोरी गा कर हमें सुलाना
माँ का स्वादिष्ट खाना बनाना
और हमारे मुँह में पानी आना
मैं छोटे से बड़ा हुआ
पैरों पे अपने खड़ा हुआ
ऐसी दुनिया में ना कोई शक्ति
जो तोड़ सके माँ की भक्ति
माँ की ममता और माँ का प्यार
उसके बाद ये सारा संसार
जीवन में क्या खोया क्या पाया
माँ के बिना ना ये समझ पाया
माँ की ममता के आगे सब फीका
फिर क्या खट्टा क्या मीठा
जीवन का अमृत जीवन का ज्ञान
उसके बिन सब अज्ञान
फिर क्या आइंस्टीन और क्या विवेकानंद
सबने ने पाया अपने माँ के आंचल में आनंद
माँ का आंचल सबसे न्यारा
उसमे तो संसार है सारा
माँ का आंचल लगता ऐसा
नीला आसमान हो जैसा
उसके नीचे बरखा लगे न धूप
ये तो बस माँ का है एक रूप
उसकी ख्याति जग में न्यारी
ऐसी ही है मेरी माँ प्यारी
मैं छोटे से बड़ा हुआ
पैरों पे अपने खड़ा हुआ
गोद में उसकी जब मैं कलरव करता
उसका प्यार उसकी ममता
फिर भी मेरा जी ना भरता
मेरी हर चपलता लगती उसको प्यारी
ऐसी ही है मेरी माँ न्यारी
मैं छोटे से बड़ा हुआ
पैरों पे अपने खड़ा हुआ
दुनिया सारी वैसी की वैसी
पर कोई नहीं है माँ तेरे जैसी
आज जीवन में जो इतनी मायूसी भरी हुई है
माँ तेरे बिन सारी दुनिया ठहरी हुई है
आज जब मैं उसको याद करता
तब फिर मेरा मन न भरता
उसकी लालसा उसकी ममता
उसके बिन है जीवन में जड़ता
मैं छोटे से बड़ा हुआ
पैरों पे अपने खड़ा हुआ
मेरी माँ सबसे प्यारी
मेरी माँ सबसे न्यारी

तृतीय लेखापरीक्षा दिवस (ऑडिट दिवस) एवं महालेखाकार सम्मेलन

महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की उपस्थिति में दिनांक 16.11.2023 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय परिसर में तीसरा ऑडिट दिवस धूमधाम से मनाया गया। ऑडिट दिवस मनाने की शुरुआत वर्ष 2021 से हुई थी जब पहली बार सीएजी कार्यालय परिसर में ऑडिट दिवस मनाया गया था। सीएजी कार्यालय में प्रति दो वर्ष पर देश भर के प्रधान महालेखाकारों/महालेखाकारों का सम्मेलन भी आयोजित किया जाता है। इस सम्मेलन को भी ऑडिट दिवस के साथ जोड़ते हुए हर दूसरे वर्ष ऑडिट दिवस के अगले दिन ही आयोजित किया जाता है। इसके साथ ही प्रत्येक वर्ष देश के युवाओं को सीएजी के अधिदेश व उत्तरदायित्व से परिचित करने के लिए हिन्दी व अँग्रेजी, दोनों भाषाओं में एक निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है जिसका परिणाम ऑडिट दिवस के दिन घोषित किया जाता है। इस वर्ष (2023) यह समारोह तीन दिनों तक, अर्थात 15.11.2023 से 17.11.2023 तक चला। 15.11.2023 को 'उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता' एवं 'लेखापरीक्षा रिपोर्ट निर्माण' पर एक परिचर्चा का आयोजन हुआ। दिनांक 16.11.2023 को उत्कृष्टता एवं उपलब्धियों के सम्मान में पुरस्कार वितरण का आयोजन हुआ जबकि 16-17/11/2023 को महालेखाकार सम्मेलन का आयोजन हुआ। दिनांक 16.11.2023 को ही एक ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण का आयोजन हुआ।

इस वर्ष (2023) की निबंध प्रतियोगिता के विषय था : **भारतीय लोकतंत्र का लचीलापन तथा सीएजी की भूमिका का यशोगान।**

इस साल अर्थात 2023 में ये दोनों समारोह मनाए गए तथा निबंध प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा भी की गई।

प्रथम दिवस (16-11-2024)

उदघाटन : भारत के राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू द्वारा तीसरे ऑडिट दिवस का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर उन्होने कहा कि भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के नेतृत्व में, सरकार के लेखापरीक्षा समुदाय ने सत्यनिष्ठा, शासन और प्रणाली निर्माण को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत के लोग वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ना चाहते हैं। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए सीएजी समेत देश के सभी महत्वपूर्ण संस्थानों और समुदायों को योगदान देना होगा। उन्होंने सीएजी द्वारा कई दूरदर्शी कदम उठाए जाने की सराहना की, जिसमें आंकड़ा प्रबंधन एवं विश्लेषण केंद्र (सेंटर फॉर डेटा मैनेजमेंट एंड एनालिटिक्स) की स्थापना भी शामिल है, जिसमें भविष्य के अनुरूप डिजिटल तकनीक और अन्य आधुनिक तरीकों का उपयोग किया जा रहा है।

राष्ट्रपति ने कहा कि सीएजी की पूरी टीम से एक नियंत्रक और एक परीक्षक के रूप में योगदान की अपेक्षा की जाती है, जो देश की विकास यात्रा में एक साथी और एक मार्गदर्शक दोनों है। उन्होंने कहा कि भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में सीएजी टीम की अहम भूमिका होगी।

महामहिम के अनुसार वैश्विक प्रतिस्पर्धा की विशेषता वाली आज की बाजार प्रणाली का प्रभाव सभी संस्थानों और उद्यमों के लिए प्रासंगिक है। देश के सभी उद्यमों और गतिविधियों में नैतिकता के आधार पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता लगातार बढ़नी चाहिए। वित्तीय औचित्य और वैधता सुनिश्चित करते हुए त्वरित वृद्धि और विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधाओं को दूर करना सीएजी सहित सुशासन के लिए जिम्मेदार प्रत्येक संस्थान और व्यक्ति के प्रभावी योगदान की कसौटी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लेखा परीक्षकों को सुशासन के सूत्रधार के रूप में माना जाना चाहिए, न कि आलोचकों के रूप में। उन्होंने कहा कि उन्हें मार्गदर्शक माना जाना चाहिए जिनकी जांच हमें सही रास्ते पर चलना सिखाती है।

राष्ट्रपति ने कहा, लेखापरीक्षा के क्षेत्र में भी विश्व समुदाय में भारत की अग्रणी स्थिति दिखाई देती है। भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशंस 20 -एसएआई 20) की अध्यक्षता के दौरान ब्लू इकोनॉमी (अन्वेषण, आर्थिक विकास, बेहतर आजीविका और परिवहन के लिये समुद्री संसाधनों के सतत् उपयोग के साथ ही समुद्री एवं तटीय पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य के संरक्षण को संदर्भित करती है) और उत्तरदायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (रिस्पॉन्सिबल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के मुद्दों पर जोर दिया जाना भविष्य के पथ के निर्माण किए जाने की दिशा में एक अच्छा प्रयास है। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि सीएजी अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

समारोह में बोलते हुए सीएजी महोदय श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्र और उसके नागरिकों के कल्याण के प्रति सीएजी की प्रतिबद्धता अपने उद्देश्य पर दृढ़ है। "हमारी संस्था सार्वजनिक वित्तीय जवाबदेही की आधारशिला है। सीएजी संस्था ने कई मोर्चों पर महत्वपूर्ण प्रगति की है। संस्थान की उपलब्धि पर विचार करते हुए उन्होंने कहा, "ऑडिट रिपोर्ट सुशासन को उत्प्रेरित करती है और कार्यपालिका की जवाबदेही, पारदर्शिता और कुशल कामकाज सुनिश्चित करने में संसद और राज्य विधानसभाओं की सहायता करती है। संगठन के ठोस प्रयासों के परिणामस्वरूप 2022-23 के दौरान संसद और राज्य विधानसभाओं में 183 ऑडिट रिपोर्ट प्रस्तुत की गईं, जिसमें सरकारी गतिविधियों के संपूर्ण दायरे को शामिल किया गया।"

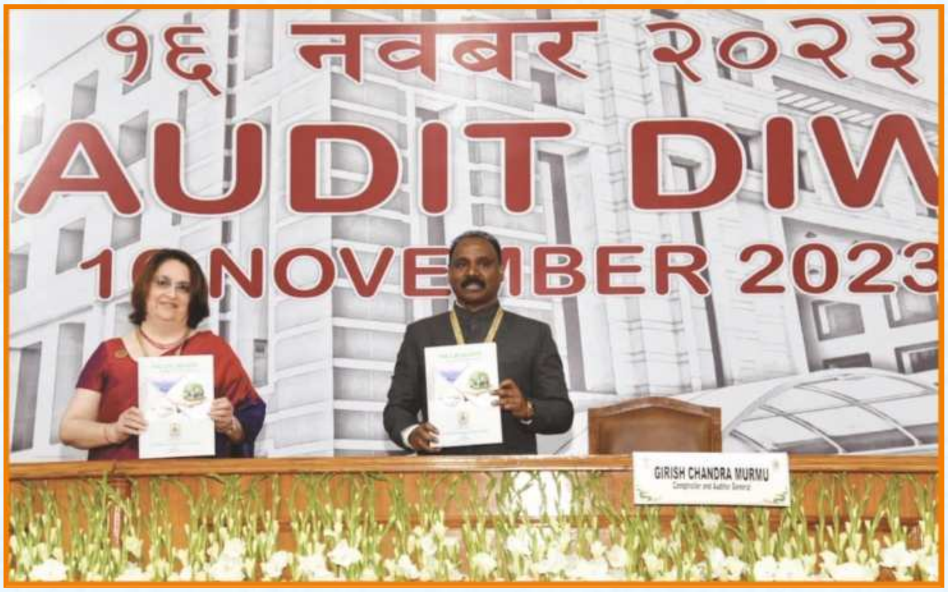

सीएजी ने कहा कि राज्य सरकारों की वित्तीय प्रणालियों के साथ एसएआई लेखा कार्यालयों के एकीकरण से वित्तीय डेटा तक पहुंच में काफी सुधार हुआ है। उन्होंने जोर देकर कहा, "हम वित्तीय विश्लेषण के लिए डेटा एनालिटिक्स क्षमताओं को विकसित करके लेखांकन और लेखापरीक्षा के बीच संबंधों को मजबूत करना जारी रखेंगे।" उन्होंने कहा कि इस कदम से लेखापरीक्षा से ज्यादा सूचनाएँ प्राप्त करने में मदद मिलेगी और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन परिणाम बेहतर होंगे।

श्री मुर्मू ने कहा, जैसा कि भारत अपनी आजादी के 75वें वर्ष का जश्न मना रहा है, सीएजी का ध्यान स्थानीय शासन के निर्माण और जमीनी स्तर के लोकतंत्र को मजबूत करने पर केंद्रित है। "हम स्थानीय सरकारी ऑडिट और क्षमता निर्माण के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र स्थापित कर रहे हैं। अपनी तरह का यह पहला संस्थान स्थानीय प्रशासन ऑडिट के संबंध में क्षमता निर्माण की वैश्विक आवश्यकता को पूरा करने के लिए विशेष रूप से समर्पित होगा।

नगर पालिकाओं और पंचायतों में योग्य लेखाकारों की कमी की समस्या के समाधान के लिए, सीएजी और इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स (आईसीएआई) के मध्य प्रमाणन पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। "यह कौशल विकास पहल स्थानीय सरकारों को समय पर अपने खाते तैयार करने और वित्त आयोग के अन्य मानदंडों को पूरा करने के अधीन लागू प्रदर्शन अनुदान का लाभ उठाने में मदद करेगी।"

द्वितीय दिवस (17.11.2024 : महालेखाकारों का सम्मेलन एवं निबंध प्रतियोगिता के परिणाम)

31 वें महालेखाकार सम्मेलन का आयोजन दिनांक 17-11-2024 को हुआ। इस बार के सम्मेलन की थीम थी - **बदलाव की ओर: भविष्य निर्माण के अभियान का सशक्तिकरण**

इस सम्मेलन में उपरोक्त थीम के अंतर्गत दो अन्य विषयों पर भी विमर्श हुए -

1. सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान-भारत (एसएआई भारत) की रणनीतिक योजना से परिचय
2. सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान-भारत (एसएआई भारत) में डिजिटल विकास एवं आगे की राह

निबंध प्रतियोगिता:

दिनांक 16-11-2023 को ही निबंध प्रतियोगिता के परिणाम भी घोषित हुए। **'भारतीय लोकतंत्र का लचीलापन तथा सीएजी की भूमिका का यशोगान'** विषय पर हिन्दी एवं अँग्रेजी भाषाओं में तीन तीन पुरस्कार दिए गए।

हिन्दी भाषा में पुरस्कार प्राप्तकर्ता

प्रथम पुरस्कार

श्री निखिल कुमार माहेश्वरी
पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के मौलिक विज्ञान केंद्र के छात्र

द्वितीय पुरस्कार

श्री अत्यंत कुमार
इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र

तृतीय पुरस्कार

सुश्री अन्विता पाराशर
नलसर विधि विश्वविद्यालय की छात्रा

अँग्रेजी भाषा में पुरस्कार प्राप्तकर्ता

प्रथम पुरस्कार

सुश्री परिष्णिका मजुमदार
दिल्ली विश्वविद्यालय के इंद्रप्रस्थ महिला विश्वविद्यालय की छात्रा

द्वितीय पुरस्कार

श्री प्रदीप कुमार महापात्र
खल्लीकोट एकल विश्वविद्यालय के छात्र

तृतीय पुरस्कार

सुश्री रिया सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज की छात्रा

लेखक – अनुराग प्रभाकर
पदनाम – वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय – भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

NOVEMBE
THE PRESIDENT

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124